चिंतन

छात्रों पर नहीं हो बेवजह का दबाव

आज के प्रतियोगी जमाने में छात्रों पर अनावश्यक दबाव बढ़ता जा रहा है। ऐसे में ज्ञान बढ़ाने के लिए तो अतिरिक्त भाषा ठीक है, लेकिन इसे बेवजह दबाव के रूप में लिया जाना किसी भी रूप में ठीक नहीं होगा। एक तरह से देखा जाए तो त्रिभाषा को लेकर सरकार का फैसला ठीक है। इससे बच्चों पर दबाव कम होगा और छात्र अपनी मर्जी के मुताबिक तीसरी भाषा को चुन पाएंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत सीबीएसई द्वारा तीन-भाषा नीति को लेकर जारी नई गाइडलाइन ने लाखों छात्रों और अभिभावकों को बड़ी राहत दी है। बोर्ड ने स्पष्ट कर दिया है कि वर्तमान 10वीं के छात्रों के साथ-साथ अभी 7वीं, 8वीं और 9वीं में पढ़ रहे विद्यार्थियों को 10वीं बोर्ड में तीसरी भाषा की बोर्ड परीक्षा नहीं देनी होगी। हालांकि सीबीएसई ने यह भी स्पष्ट किया है कि 2026-27 में कक्षा छह में प्रवेश लेने वाले नए बैचों पर तीन-भाषा नीति पूरी तरह लागू होगी। यह निर्णय इसलिए उचित माना जा सकता है, क्योंकि इन छात्रों के पास नई व्यवस्था के अनुसार पढ़ने के लिए पर्याप्त समय होगा। साथ ही स्कूल स्तर पर तीसरी भाषा के मूल्यांकन और आवश्यक छूट का प्रावधान यह संकेत देता है कि बोर्ड चरणबद्ध तरीके से बदलाव लागू करना चाहता है। शिक्षा सुधार में यही संतुलन सबसे अधिक आवश्यक होता है। यह फैसला इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा सुधार का उद्देश्य छात्रों की क्षमता को बढ़ाना होना चाहिए, न कि उन पर ऐसा अतिरिक्त बोझ डालना, जिससे पढ़ाई तनाव का कारण बन जाए। आज का छात्र पहले ही कई मोर्चों पर दबाव झेल रहा है। बोर्ड परीक्षाएं, जेईई, नीट, सीयूईटी और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, कोचिंग का बढ़ता चलन और करियर की अनिश्चितता उसके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे समय में यदि अचानक नई भाषा को बोर्ड परीक्षा के साथ जोड़ दिया जाता, तो यह लाखों छात्रों के लिए अतिरिक्त तनाव का कारण बन सकता था। इसलिए, सीबीएसई ने संक्रमण काल के छात्रों को राहत देकर व्यावहारिक और संवेदनशील निर्णय लिया है। अब सरकार को जेन जी विशेषकर स्कूली छात्रों पर फोकस करने की जरूरत है, क्योंकि यह वर्ग हर मामले में सरकार से 100 प्रतिशत डिलीवरी की उम्मीद करता है। कम्प्यूटर युग में पैदा हुए इस वर्ग को तकनीक से भी कोई दिक्कत नहीं है और इसे अपनाने के लिए वह हमेशा से तैयार है। सरकार को भी चाहिए कि वह परीक्षाओं में तकनीक का अधिक से अधिक प्रयोग करे और परीक्षाओं की शुचिता बनाए रखे। इसमें तकनीक का अहम योगदान हो सकता है और आज का युवा इससे डरता भी नहीं है। सरकार को यह भी समझना होगा कि आज का छात्र केवल डिग्री नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, निष्पक्ष परीक्षा और स्पष्ट करियर अवसर चाहता है। यदि नई शिक्षा नीति इन तीनों अपेक्षाओं को पूरा करती है, तभी उसका वास्तविक उद्देश्य सफल माना जाएगा। शिक्षा में सुधार का अर्थ केवल पाठ्यक्रम बदलना नहीं, बल्कि छात्रों के आत्मविश्वास और सीखने की क्षमता को भी हर तरह से मजबूत करना होता है। भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं होती, बल्कि संस्कृति और पहचान का आधार भी मानी जाती है। इसलिए भाषा नीति को किसी भी बोझ के बजाय अवसर के रूप में लागू किया जाना चाहिए। यदि सरकार और शिक्षा बोर्ड पर्याप्त संसाधनों, प्रशिक्षित शिक्षकों और स्पष्ट दिशा-निर्देशों के साथ इस नीति को आगे बढ़ाते हैं, तो यह भारतीय भाषाओं को मजबूत करने के साथ-साथ छात्रों के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

भारत के भविष्य पर मंडराता संकट

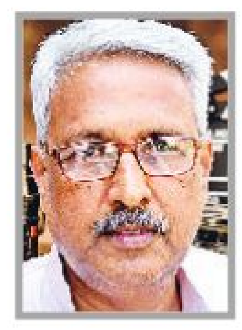

अल नीनो

राज कुमार सिन्हा

> साल के आखरी महीनों में एक अत्यधिक शक्तिशाली अल नीनो उभरने की पूरी आशंका है। वैज्ञानिकों ने भारत पर पड़ने वाले इस संभावित अल नीनो के प्रभाव को चार प्रमुख तिमाहियों में विभाजित किया है, जो देश के आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने पर असर डालेगा। पहला जून से सितंबर 2026 में मॉनसून पर संकट और बुवाई में देरी, दूसरा अक्टूबर से दिसंबर तक खरीफ फसलों को नुकसान और बढ़ती महंगाई और तीसरा जनवरी से मार्च 2027 तक गर्म सर्दियां और रबी फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव शामिल है। प्रशांत महासागर में विकसित होने वाली जलवायु घटना अल नीनो केवल भारत की कृषि, जल, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिरता पर गहरा प्रभाव डालने वाली वैश्विक जलवायु प्रक्रिया है।

ताजा पूर्वानुमानों के अनुसार, 2026 के आखरी महीनों में एक अत्यधिक शक्तिशाली अल नीनो उभरने की पूरी आशंका है। वैज्ञानिकों ने भारत पर पड़ने वाले इस संभावित अल नीनो के प्रभाव को चार प्रमुख तिमाहियों में विभाजित किया है, जो देश के आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने पर असर डालेगा। पहला जून से सितंबर 2026 में मॉनसून पर संकट और बुवाई में देरी, दूसरा अक्टूबर से दिसंबर तक खरीफ फसलों को नुकसान और बढ़ती महंगाई और तीसरा जनवरी से मार्च 2027 तक गर्म सर्दियां और रबी फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव शामिल है। प्रशांत महासागर में विकसित होने वाली जलवायु घटना अल नीनो केवल एक मौसमी बदलाव नहीं, बल्कि भारत की कृषि, जल, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिरता पर गहरा प्रभाव डालने वाली वैश्विक जलवायु प्रक्रिया है।

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के कारण अल नीनो की तीव्रता और अनिश्चितता दोनों बढ़ रही हैं, जिससे भारत जैसे मानसून-निर्भर देश के लिए इसके खतरे और गंभीर हो गए हैं। सामान्य परिस्थितियों में प्रशांत महासागर की व्यापारिक पवनें (ट्रेड विन्डस) गर्म जल को पश्चिम की ओर एशिया और ऑस्ट्रेलिया की तरफ धकेलती हैं। जब ये पवनें कमजोर पड़ जाती हैं, तब मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर का समुद्री तापमान सामान्य से अधिक गर्म हो जाता है। इसी स्थिति को अल नीनो कहा जाता है। यह घटना वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण को बदल देती है और भारतीय मानसून को कमजोर कर सकती है। भारत की लगभग आधी कृषि भूमि आज भी वर्षा आधारित है। देश के जलाशय, भूजल पुनर्भरण, बिजली उत्पादन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था दक्षिण-पश्चिम मानसून पर निर्भर हैं। अल नीनो सीधे मानसून को प्रभावित करता है, इसलिए इसका प्रभाव बहुआयामी होता है। अल नीनो का सबसे बड़ा प्रभाव भारतीय मानसून पर पड़ता है।

विगत कई वर्षों के मानसून अध्ययन से पता चलता है कि भारत में बड़े सूखे अल नीनो आए हैं। मानसून कमजोर होने पर वर्षा की मात्रा घटती है और उसका वितरण भी असमान हो जाता है। देर से मानसून आगमन लंबे "ड्राई स्पेल" हैं और अचानक अत्यधिक वर्षा की घटनाएं सूखा और बाढ़ दोनों का जोखिम बढाता है, अर्थात जलवायु परिवर्तन के कारण अब "कम बारिश" के साथ "अत्यधिक बारिश" की घटनाएं भी बढ़ रही हैं। यानी मानसून कमजोर हो सकता है, लेकिन कुछ दिनों में अत्यधिक बारिश से विनाशकारी बाढ़ भी आ सकती है। पर्यावरण क्षेत्र में काम करने वाले इशांत अग्रवाल का कहना है कि आमतौर पर मानसून के इस तरह अचानक रूठ जाने या थम जाने का सारा दोष 'ग्लोबल वॉर्मिंग', अल-नीनो या समुद्र के गर्म होने के सिर मढ़ दिया जाता है। भारत के बेहतरीन वैज्ञानिकों की लगातार आ रही रिसर्च ने एक ऐसा कड़वा सच सामने रखा है, जिसके जिम्मेदार कहीं न कहीं हम खुद हैं। विज्ञान कहता है कि मानसून के इस तरह कमजोर होने की एक बहुत बड़ी वजह हमारे ठीक सामने है। बढ़ते शहरीकरण, वनों की कटाई, आर्द्रभूमियों के विनाश और एकल फसल आधारित कृषि पद्धतियों ने स्थानीय जल चक्र को कमजोर किया है। इससे भूमि की नमी घट रही है और

मानसून के पैटर्न में भी बदलाव देखने को मिल रहा है। भूमि उपयोग में परिवर्तन और वनस्पति आवरण में कमी भी मानसून की अनिश्चितता बढ़ाने वाले महत्वपूर्ण कारक बनते जा रहे हैं। भारत को अल नीनो के बढ़ते खतरे से निपटने के लिए बहुस्तरीय रणनीति अपनानी होगी। इसमें वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण, जलग्रहण क्षेत्र विकास, फसल विविधीकरण, सूखा-रोधी बीजों को बढ़ावा, रासायनिक खेती पर निर्भरता कम करना, प्राकृतिक एवं जलवायु-अनुकूल कृषि को प्रोत्साहित करना, स्थानीय जल निकायों का संरक्षण और मौसम पूर्वानुमान प्रणाली को मजबूत करना शामिल है। साथ ही शहरों में हरित क्षेत्र बढ़ाकर और हीट एक्शन प्लान लागू करके गर्मी के प्रभाव को कम किया जा सकता है। लगभग 315 जिलों में वर्षा सामान्य से कम रहने की संभावना है और इन जिलों में सिंचाई की व्यवस्था बहुत सीमित है। इनमें से अधिकांश जिले मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, बिहार, झारखंड, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और ओडिशा के हैं। भारत सरकार ने किसानों के हित और खेती को सुरक्षित रखने के लिए जल प्रबंधन, बीज की उपलब्धता, और वैकल्पिक फसलों पर रणनीति तैयार की गई है। 315 संवेदनशील जिलों को चिन्हित कर विशेष रूप से खरीफ फसलों जैसे धान और मक्का की सुरक्षा पर जोर दिया जा रहा है। कम बारिश होने की स्थिति में किसानों को कम अवधि में तैयार होने वाली फसलों और सूखे के प्रति सहनशील बीजों की आपूर्ति की जा रही है। राज्य स्तर पर मॉनिटरिंग कमेटियां बनाई गई हैं, जो बारिश, जल स्तर और बीज-खाद की आपूर्ति पर लगातार नजर रख रही हैं।

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि अभी भी केंद्रीय भूमिका निभाती है। कमजोर मानसून का सबसे बड़ा असर किसानों पर पड़ता है। धान, गेहूं, दाल, गन्ना और तिलहन उत्पादन में गिरावट होती है, खरीफ फसलों की बुवाई प्रभावित और सिंचाई लागत में वृद्धि होती है। हाल के वर्षों में सरकार को चीनी निर्यात रोकने जैसे कदम उठाने पड़े क्योंकि कमजोर मानसून से गन्ना उत्पादन प्रभावित होने की आशंका बढ़ी है। जल संकट और भूजल पर दबाव कम वर्षा का सीधा असर नदियों, बांधों और भूजल स्तर पर पड़ता है। भारत में महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बुंदेलखंड और तेलंगाना पहले से ही भूजल दोहन के गंभीर संकट से जूझ रहा है। अल नीनो इस संकट को और गहरा कर सकता है। अल नीनो वाले वर्षों में वैश्विक तापमान सामान्य से अधिक बढ़ जाता है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि भविष्य में बनने वाले अल नीनो वैश्विक तापमान को रिकॉर्ड स्तर तक पहुंचा सकता है। इस कारण लंबी और तीव्र हीटवेव, शहरी "हीट आइलैंड" प्रभाव,श्रमिकों की कार्यक्षमता में कमी, लू से मौतें होगी और गरीब और असंगठित क्षेत्र के मजदूर सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इससे ग्रामीणों का पलायन, आय असमानता और सामाजिक असुरक्षा बढ़ने का खतरा पैदा होता है। कम जल उपलब्धता और बढ़ती गर्मी ऊर्जा क्षेत्र को भी प्रभावित करती है। कमजोर मानसून का असर जीडीपी वृद्धि पर भी पड़ सकता है क्योंकि भारत की बड़ी आबादी कृषि आधारित है। अल नीनो समुद्री तापमान को बढ़ाकर समुद्री जैव विविधता को प्रभावित करेगा।

प्रशांत महासागर में पनप रहा अल नीनो भारत के लिए केवल मौसम संबंधी घटना नहीं, बल्कि खाद्य सुरक्षा, जल संकट, स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और सामाजिक स्थिरता से जुड़ा राष्ट्रीय खतरा है। जलवायु परिवर्तन ने इस खतरे को और जटिल बना दिया है। यदि भारत ने समय रहते जल, कृषि और ऊर्जा नीतियों में व्यापक परिवर्तन नहीं किए, तो भविष्य में अल नीनो जैसी घटनाएं करोड़ों लोगों की आजीविका और जीवन पर गंभीर प्रभाव डाल सकती हैं।

(लेखक स्वतंत्र स्तंभकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **haribhoomi@gmail.com** पर दे सकते हैं।

विचार

-डॉ. अशोक कुमार जायसवाल

पंचायतीराज संस्थाओं का ई-गवर्नेंस युग

महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज की अवधारणा का साकार स्वरुप आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय की स्थापना के माध्यम से समाज के अंतिम पंक्ति पर बैठे हुए व्यक्ति को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने एवं योजनाओं का लाभ अंतिम छोर तक पहुँचाने एवं समाज के अंतिम पंक्ति पर बैठे व्यक्ति के आय की वृद्धि करने से दृष्टि गोचर हुआ, जिसमें संविधान के 73 वॉ संशोधन ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। संविधान का 73वॉं संशोधन पंचायतीराज संस्थाओं को संवैधानिक मान्यता प्रदान करने के साथ-साथ 11 वीं अनूसूची में सौंपे गए 29 विषयों पर कार्य योजना तैयार करने का आधार प्रदान किया, यही संवैधानिक मान्यता पंचायतों में डिजिटल तकनीक, साक्ष्य आधारित निर्णय और तय समय सीमा में नागरिक केन्द्रित सेवाएं प्रदान करने के माध्यम से ई-गवर्नेंस युग का प्रारंभ हुआ। राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार 2026 में पंचायतीराज संस्थाओं का चयन इसका जीता जागता प्रमाण है। राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार ने पंचायतों की उपलब्धियों को राष्ट्रीय पहचान ही नहीं दी है, बल्कि यह सिद्ध किया है, कि विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों को प्राप्त करने में पंचायतीराज संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होगी। विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एआई-साक्ष्य आधारित डिजिटल आंकडे, डिजिटल सु-शासन की प्रतिबद्धता को परिलक्षित करता है। पंचायतीराज संस्थाओं में डिजिटल प्रौद्योगिकी आंकडों के विश्लेषण, निर्णय लेने एवं मजबूत साइबर सुरक्षा, कुशल तथा सुरक्षित और नागरिक केन्द्रित सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करने के पंचायतीराज संस्थाओं की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार 2026 हेतु 07 पुरस्कार श्रेणियों में 17 परियोजनाओं में 10 स्वर्ण पुरस्कार, 06 रजत पुरस्कार और 01 जूरी पुरस्कार सम्मिलित है। पंचायतीराज से संबंधित 04 नवाचारों को राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार 2026 के लिए चयनित किया गया है, जो डिजिटल सु-शासन और नागरिक केन्द्रित सेवा वितरण को बढ़ावा देने में पंचायतीराज संस्थाओं की बढ़ती भूमिका को उजागर करती हैं। विकसित भारत के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार 2026 हेतु राष्ट्रीय स्तर पर पंचायतीराज, मंत्रालय को पंचायत उन्नति सूचकांक (पी.ए.आई) पहल पर डिजिटल प्लेटफार्म में आंकडों के विश्लेषण एवं उपयोग के माध्यम से पंचायतीराज संस्थाओं में डिजिटल परिवर्तन हेतु स्वर्ण पुरस्कार प्राप्त हुआ। पंचायत उन्नति सूचकांक देश की 2.66 लाख ग्राम पंचायतों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए मापने का एक पैमाना है। पंचायत उन्नति सूचकांक स्थानीय सतत विकास के लक्ष्यों (एल.एस.डी.जी.) के 09 थीमों से जुड़े संकेतकों पर ग्राम पंचायतों का आंकलन करता है, जिससे ग्राम स्तर पर सु-शासन और साक्ष्य आधारित की तस्वीर प्राप्त होती है, जो योजना निर्माण और क्रियान्वयन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। पंचायत उन्नति सूचकांक 2.0 सूचकांकों का नवीनतम और आधुनिक संस्करण है, जिसमें 150 संकेतकों और 230 साक्ष्य आधारित आंकडों के बिन्दुओं का उपयोग किया गया है, जिसमें पंचायतों के परफार्मेन्स की प्रतिबिंब दिखाई पड़ती है। महाराष्ट्र के सांगली जिले के कादेगांव जनपद पंचायत की कांदेपुर ग्राम पंचायत ने राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार 2026 में ग्राम पंचायतों एवं स्थानीय निकायों द्वारा सेवा वितरण को जमीनी स्तर पर विस्तारित करने के नवाचार हेतु स्वर्ण पुरस्कार प्राप्त किया। कादेपुर ग्राम पंचायत ने डिजिटल सु-शासन प्रणाली विकसित कर 4300 से अधिक लाभार्थियों को 1355 से अधिक सेवाएं डिजिटल माध्यम से प्रदान की जा रही है, जिसमें प्रमुख रुप से पेपर लेस ई-ऑफिस, एआई आधारित प्रशासनिक अनुप्रयोग, ब्लॉक चेन आधारित रिकार्ड प्रबंधन, जी.आई.एस. आधारित सम्पत्तियों का जियों-टैगिंग। ग्राम पंचायत कादेपुर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ब्लॉक चेन, नैनो तकनीक, जैव प्रौद्योगिकी और रोबोटिक्स पर औपचारिक रुप से नीतियों को बनाने प्रयोग करने वाली देश की एक मात्र ग्राम पंचायत है। त्रिपुरा में पश्चिम त्रिपुरा जिले की मोहनपुर जनपद पंचायत की बीजॉनगर ग्राम पंचायत ने रजत पुरस्कार प्राप्त किया है। बीजॉनगर ग्राम पंचायत ने सहभागी सु-शासन, वित्तीय जवाबदेही और समावेषी डिजिटल तकनीक अपनाने का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत कर स्वयं के आय स्त्रोत (ओ.एस.आर.) में 194 प्रतिशत की वृद्धि कर ई-ऑफिस के माध्यम से 100 से अधिक सेवायें ऑन-लाइन, महिलाओं में 100 प्रतिशत डिजिटल साक्षरता तथा ग्राम वार्ता प्लेटफार्म प्रत्येक घर के साथ वास्तविक समय-सीमा में ध्वनि संचार को सक्षम बनाया है। महाराष्ट्र के नन्दुरबार जिला पंचायत को ई-गवर्नेंस में जिला स्तर पर नवाचार हेतु स्वर्ण पुरस्कार प्राप्त हुआ है। नन्दुरबार जिला पंचायत के स्वास्थ्य विभाग ने ई-आरोग्य धमनी में ई-गवर्नेंस के तहत आधुनिक डिजिटल उपकरणों का उपयोग करके नन्दुबार जिले के आदिवासियों और दुरस्थ क्षेत्रों के नागरिकों को त्वरित और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की है। नन्दुरबार जिला पंचायत ने समाज के अंतिम व्यक्ति तक स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता करायी है, जो पंचायतीराज संस्थाओं की सामाजिक न्याय की स्थापना की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, तथा पंचायतों की पहचान "बेस्ट प्रेक्टिस" और "पंचायत लर्निंग सेन्टर हब" के मॉडल के तौर पर विकसित हो रही है। महात्मा गांधी ने ग्राम स्वराज का जो स्वप्न देखा था, वह ई-गवर्नेंस के माध्यम से आकार लेकर आत्मनिर्भरता, पारदर्शिता और सामुदायिक सहभागिता के रुप में विकसित हो रही है, जो डिजिटल तकनीक से संभव हुआ है। राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार 2026 में 30 राज्यों से 1.65 लाख से अधिक ग्राम पंचायतों ने भाग लिया। ग्राम पंचायतों की यह भागीदारी पंचायती राज मंत्रालय की पंचायतीराज संस्थाओं में क्षमता निर्माण, मार्गदर्शन और डिजिटल शासन को बढ़ावा देने के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। कांदेपुर ग्राम पंचायत और बीजॉनगर ग्राम पंचायत ने यह सिद्ध किया है, कि विकसित भारत 2047 की राह ग्राम पंचायतों के भागीदारी से ही संभव है।

-लेखक संकाय सदस्य (पंचायती राज), ठाकुर प्यारेलाल राज्य पंचायत एवं ग्रामीण विकास संस्थान निमोरा, रायपुर (छ.ग.)

एकनिष्ठ भक्ति

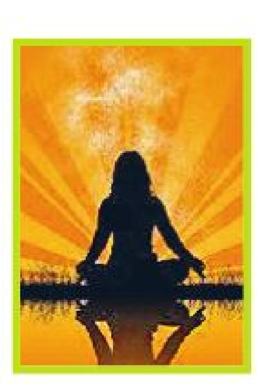

संकलित

दर्शन

अनेक महापुरुष हैं, अनेक देवी-देवता हैं, अनेक मार्ग हैं, किंतु एकनिष्ठता आवश्यक है। इसी कारण इष्ट देवता की अवधारणा है। घर की बहू सास, ससुर, जेठ, जेठानी सबका आदर सम्मान करती है, किसी की अवज्ञा या उपेक्षा नहीं करती। सबकी सेवा करती है, किंतु अपने पति को वह सबसे अधिक चाहती है। इसी तरह तुम भी अपने इष्ट देवता पर दृढ़ एकनिष्ठ भक्ति रखो, जबकि अन्य देवी-देवताओं का सम्मान करो, सबके प्रति श्रद्धा रखो। सभी देव एक ही परमेश्वर के रूप हैं। किंतु किसी एक के प्रति एकनिष्ठ रहो। चौसर के खेल में गोटी सब खानों का चक्कर लगाए बिना लक्ष्य पर नहीं पहुंचती। यदि दो गोटियां जोड़ी बांधकर इकट्ठी चलें तो उन्हें कोई काट नहीं सकता, नहीं तो अकेली गोटी लक्ष्य के पास पहुंचकर पकते-पकते भी कट जा सकती है। इसी प्रकार साधना के मार्ग पर भी यदि गुरु अथवा इष्ट के साथ युक्त होकर आगे बढ़ा जाए तो बाधा विघ्न का भय नहीं रहता, यात्रा निर्विघ्न रूप से सफल हो सकती है। एक बार किसी यात्री ने एक आदमी से कलकत्ता (अब कोलकाता) जाने का रास्ता पूछा। उस आदमी ने कहा, इस रास्ते से चले जाओ। थोड़ी दूर चलकर उसने और एक जन से रास्ता पूछा। उसने दूसरा रास्ता बताया। इस तरह वह थोड़ा सा आगे बढ़कर किसी से रास्ता पूछता तो पहले वाले का रास्ता छोड़ उस पर चल देता। ऐसा करते हुए वह रास्तों पर ही भटकता रहा, कलकत्ता नहीं पहुंच पाया। उसे किसी ऐसे व्यक्ति से रास्ता पूछना चाहिए था, जिस पर विश्वास हो कि वह सही मार्ग जानता है।

मृत्यु टाले नहीं टलती

संकलित

प्रेरणा

भगवान विष्णु गरुड़ पर बैठ कर कैलाश पर्वत पर गए। द्वार पर गरुड़ को छोड़ कर खुद शिव से मिलने अंदर चले गए। तब कैलाश की अपूर्व प्राकृतिक शोभा को देख कर गरुड़ मंत्रमुग्ध थे कि तभी उनकी नजर एक खूबसूरत छोटी सी चिड़िया पर पड़ी। चिड़यि कुछ इतनी सुंदर थी कि गरुड़ के सारे विचार उसकी तरफ आकर्षित होने लगे। उसी समय कैलाश पर यम देव पधारे और अंदर जाने से पहले उन्होंने उस छोटे से पक्षी को आश्चर्य की दृष्टि से देखा। गरुड़ समझ गए उस चिड़िया का अंत निकट है और यमदेव कैलाश से निकलते ही उसे अपने साथ यमलोक ले जाएंगे। गरूड़ को दया आ गई। इतनी छोटी और सुंदर चिड़िया को मरता हुआ नहीं देख सकते थे। उसे अपने पंजों में दबाया और कैलाश से हजारो कोस दूर एक जंगल में एक चट्टान के ऊपर छोड़ दिया, और खुद वापिस कैलाश पर आ गए। आखिर जब यम बाहर आए तो गरुड़ ने पूछ ही लिया कि उन्होंने उस चिड़िया को इतनी आश्चर्य भरी नजर से क्यों देखा था। यम देव बोले- गरुड़ जब मैंने उस चिड़िया को देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वो चिड़िया कुछ ही पल बाद यहां से हजारों कोस दूर एक नाग द्वारा खा ली जाएगी। मैं सोच रहा था कि वो इतनी जल्दी इतनी दूर कैसे जाएगी, पर अब जब वो यहां नहीं है तो निश्चित ही वो मर चुकी होगी। गरुड़ समझ गए मृत्यु टाले नहीं टलती चाहे कितनी भी चतुराई की जाए।

अंतर्मन

आज की पाती

'अग्नि-जाल' में फंसते शहरी भवन

भारत आज विश्व के सबसे तेजी से शहरीकरण करने वाले देशों में शामिल है। आर्थिक विकास, औद्योगीकरण, सेवा क्षेत्र के विस्तार और ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर निरंतर हो रहे पलायन ने भारतीय शहरों का स्वरूप तेजी से बदला है। महानगरों से लेकर छोटे शहरों तक बहुमंजिला इमारतें, व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स, कोचिंग संस्थान, होटल, अस्पताल और मिश्रित-उपयोग वाले भवन विकास के नए प्रतीक बनकर उभरे हैं। किंतु इस विकास के पीछे एक गंभीर सच्चाई भी छिपी है- शहरी नियोजन की अनदेखी, सुरक्षा मानकों की उपेक्षा और प्रशासनिक शिथिलता। परिणामस्वरूप आज अनेक शहरी भवन आर्थिक प्रगति के केंद्र होने के साथ-साथ संभावित 'अग्नि-जाल' भी बनते जा रहे हैं। हाल के वर्षों में हुई अग्नि-दुर्घटनाओं ने इस संकट की भयावहता को उजागर किया है। *- रमेश यादव, दुर्ग*

ट्रेंड

भारत की स्थिरता

अपनी संरचनात्मक कमजोरियों के बावजूद, भारत ने वैश्विक स्तर पर मुश्किल और चुनौतीपूर्ण समय में भी जबरदस्त स्थिरता दिखाई है। यह पिछले दशक में मैक्रो-इकोनॉमिक स्थिरता बनाए रखने और साथ ही नीति-निर्माण को संवेदनशील और फुर्तीला बनाने से हासिल हुआ है।
- **नरेंद्र मोदी**, प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना

हमने जो सपना देखा था, वह आज हर धड़कन में बसता है। एक नया भारत बनाने का संकल्प हमारे दिलों में है। अटल जी के इसी संकल्प के तहत, आज हम 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना' के ज़रिए एक नए भारत को आकार लेते हुए देख रहे हैं।
- **शिवराज सिंह चौहान**, केंद्रीय कृषि मंत्री

तरुण चुघ को बधाई

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव, तरुण चुघ को राज्यसभा सांसद के रूप में शपथ लेने पर हार्दिक बधाई। आपका संगठनात्मक अनुभव और राष्ट्र-हित के प्रति समर्पण अब संसदीय कर्तव्यों के माध्यम से देश सेवा को नई दिशा प्रदान करेगा।
- **रेखा गुप्ता**, सीएम, नई दिल्ली

विकास को प्राथमिकता

हिमाचल का कोई भी इलाका विकास से अछूता नहीं रहना चाहिए; यही हमारी प्राथमिकता है। जिन इलाकों को दुर्गम बताकर बरसों तक नज़रअंदाज़ किया गया, हमारी सरकार अब उन्हें प्राथमिकता दे रही है और उनका विकास कर रही है।
-**सुखविंदर सिंह सुक्खु**, सीएम, हिमाचल प्रदेश

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

करंट अफेयर

यूरोप में पड़ रही भीषण गर्मी आखिर क्या है इसकी वजह

यूरोप में चिलचिलाती धूप के कारण तापमान के सारे रिकॉर्ड टूट रहे हैं और पूरा महाद्वीप भीषण गर्मी का सामना कर रहा है। मंगलवार और बुधवार को फ्रांस में इतिहास के सबसे गर्म दिन दर्ज किये गए। देश के पश्चिमी हिस्सों में अधिकतम तापमान 39 से 43 डिग्री सेल्सियस के बीच पहुंच गया। बुधवार ब्रिटेन के इतिहास में जून का सबसे गर्म दिन रहा, जहां तापमान 36.1 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। शुरुआती आंकड़ों के अनुसार, स्पेन, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, नीदरलैंड और स्विट्जरलैंड में भी कई स्थानों पर जून के तापमान के रिकॉर्ड टूट गए हैं। और यह सिलसिला अभी थमा नहीं है। इस बीच, लोगों की जान भी गई है। एक अध्ययन में, जून 2025 में दक्षिण-पूर्वी इंग्लैंड में पड़ी भीषण गर्मी का विश्लेषण किया गया। इसमें पाया गया कि यदि मानव गतिविधियों से होने वाले ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का प्रभाव न होता, तो ऐसी भीषण गर्मी लगभग 50 वर्षों में केवल एक बार आती। लेकिन मानव-जनित जलवायु परिवर्तन के कारण वैश्विक तापमान में हुई 1.3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि को ध्यान में रखते हुए पाया गया कि ऐसी भीषण गर्मी की स्थिति अब 50 वर्ष में एक बार नहीं, बल्कि कम से कम हर पांच वर्ष में एक बार देखने को मिल रही है।

ऑफ बीट

क्या युवाओं में कैंसर के लिए रसायन ज़िम्मेदार हैं?

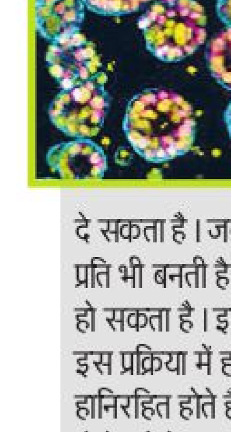

पहले कैंसर को आमतौर पर बुज़ुर्गों की बीमारी माना जाता था लेकिन अब 50 साल से कम उम्र के लोगों में कैंसर के मामले बढ़ रहे हैं, जो चिंताजनक है। आपके शरीर की प्रत्येक कोशिका में आपके डीएनए की एक प्रति होती है - जो उस कोशिका को ठीक से कार्य करने का निर्देश देती है। हालांकि, डीएनए में ऐसे तरीकों से म्युटेशन हो सकता है जिससे वह कोशिका अपना वह कार्य करना बंद कर देती है जो उसे करना होता है। कुछ म्युटेशन कोशिका को अनियंत्रित रूप से बढ़ने में सक्षम बनाते हैं। कुछ म्युटेशन इसे मरने से बचाते हैं। और कुछ इसे शरीर के अन्य भागों में फैलने में मदद करते हैं जहां यह नहीं होना चाहिए। डीएनए में अधिक मात्रा में म्युटेशन कैंसर को जन्म दे सकता है। जब भी शरीर में नई कोशिका बनती है, तो डीएनए की एक नई प्रति भी बनती है। कभी-कभी संयोगवश गलतियां हो जाती हैं, जिससे म्युटेशन हो सकता है। इसे आप ऐसे समझें जैसे एक फोटोकॉपी की फोटोकॉपी बनाना। इस प्रक्रिया में हर प्रति दूसरे से थोड़ी भिन्न होती है। ज्यादातर डीएनए म्युटेशन हानिरहित होते हैं। लेकिन शरीर में हर दिन अरबों कोशिकाएं बनती हैं। इसलिए जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, शरीर में डीएनए की प्रतियों की संख्या बढ़ती जाती है, जिससे गलतियां होने की संभावना भी बढ़ जाती है।

संपादकीय

होय... मरेपर्यंत फाशी!

नसरापूरच्या नराधमाला मृत्युदंडाची शिक्षा ठोठावली गेली आहे. यंत्रणा सजग असतील, तर किती त्वरेने न्याय केला जातो, याचा हा पुरावा. याच नसरापूरजवळच्या रांझ्याच्या नराधमाचा छत्रपती शिवाजी महाराजांनी चौरंग केला होता. सतराव्या शतकातील ती घटना. राजगडच्या पायथ्याशी घडलेली. एका महिलेसोबत 'बदअमल' केला म्हणून महाराजांनी त्याला ही कठोर शिक्षा ठोठावली. न्याय तर केलाच, शिवाय त्यातून जो 'संदेश' दिला गेला, तो त्याहून महत्त्वाचा. या राज्यात मुली-महिला सुरक्षित असतील. त्यांना असुरक्षित करणाऱ्या वृत्तींचा वेळीच बीमोड केला जाईल, हा तो संदेश. त्याच रांझ्याजवळच्या नराधमाला मरेपर्यंत फाशीची शिक्षा सुनावली जाणे म्हणूनच आवश्यक होते. नसरापूर येथे साडेतीन वर्षांच्या मुलीवर अत्याचार करून तिचा खून करणारा भीमराव कांबळे याला न्यायालयाने फाशीची शिक्षा सुनावली. विशेष न्यायाधीश एस. आर. साळुंखे यांनी सोमवारी हा निकाल दिला. गुन्हा घडल्यापासून केवळ दोन महिन्यांत हा खटला निकाली निघाला आहे. घटनेनंतर पोलिसांनी तातडीने तपासाची सूत्रे हाती घेऊन आरोपीला अटक केली होती. अवघ्या सोळा दिवसांच्या आत पोलिसांनी भक्कम पुराव्यांसह दोषारोपपत्र दाखल केले. तपासादरम्यान घटनास्थळावरील पुरावे, तांत्रिक माहिती, सीसीटीव्ही चित्रफिती, साक्षीदारांचे जबाब आणि वैद्यकीय अहवाल यांच्या आधारे आरोपीविरुद्ध भक्कम पुरावे गोळा करण्यात आले होते. पोलिसांनी अल्पावधीत दोषारोपपत्र दाखल केल्यानंतर खटल्याची सुनावणी सुरू झाली. पुण्याचे पोलिस अधीक्षक संदीप गिल्ल यांचे त्यासाठी जाहीर कौतुक करायला हवे. त्यांनी आणि त्यांच्या टीमने ज्या गतीने काम केले, त्याचा उल्लेख आवर्जून करणे आवश्यक आहे. न्यायालयाने सुटीच्या काळातही सुनावणी घेतली. सोळा दिवसांत तब्बल ५५ साक्षीदार तपासले. त्यामुळे या नराधमाला फासावर लटकवले जाणार आहे. मृत्युदंडाची शिक्षा अपवादात्मक परिस्थितीमध्येच दिली जाते. मात्र, ही घटनाही तशीच भयंकर होती. यामुळे त्या चिमुरडीला न्याय वगैरे मिळाला, असे मानणे मात्र अशक्य. मुळात असे घडणे हेच भयंकर आहे. काहीही झाले, तरी ती निरागस बछडी परत येणार नाही. हा ६५ वर्षांचा नराधम वेळीच गजाआड गेला असता, तर ही वेळ आली नसती. स्वतःच्या सतरा वर्षांच्या पुतणीवर कोयत्याचा धाक दाखवून बलात्काराचा प्रयत्न त्याने बारा वर्षांपूर्वी केला होता. त्याशिवाय असे अनेक प्रकार घडले होते. त्याच्या गावातील लोकांनी त्याला गावाबाहेर काढले होते. तरीही पुरावे नाहीत म्हणून तो मोकाट होता. वेळीच त्याला जेरबंद केले असते, तर ही वेळ आली नसती. नसरापूरमध्ये जे घडले, त्यानंतर माध्यमांनी हे प्रकरण लावून धरले. लोकांचा आक्रोश रस्त्यावर दिसू लागला. समाजमाध्यमांवर तो व्यक्त होऊ लागला. या आक्रोशानंतर यंत्रणा हलली. कामाला लागली. मुळात, यंत्रणा अशीच संवेदनशील आणि सजग असती, तर ही घटनाच घडली नसती. आपल्याकडे एखादी निर्भया जाते आणि मग रस्त्यावर मेणबत्त्या पेटतात. त्यानंतर यंत्रणांच्या डोक्यात प्रकाश पडतो. एरव्ही सगळा अंधार असतो. 'पोक्सो' कायद्यानुसार दोषी ठरलेल्या अनेक नराधमांना अद्याप शिक्षा झालेली नाही. हजारो प्रकरणे प्रलंबित आहेत. अनेक प्रकरणांतील गुन्हेगार मोकाट सुटले आहेत. नसरापूर येथील घटनेनंतर निर्माण झालेला तीव्र असंतोष लक्षात घेऊन मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस यांनी हा खटला जलदगती न्यायालयात चालवण्याची घोषणा केली. पुणे ग्रामीणचे पोलिस अधीक्षक यांनी पोलिस अधिकाऱ्यांची 'एसआयटी' स्थापन केली. गावात प्रचंड तणाव असतानाही तपास पथकाने दिवस-रात्र एक करून तपास केला. त्यामुळे एवढ्या जलदगतीने हा निकाल लागला. पण, ही गती एरव्ही कुठे जाते, हा प्रश्न या निमित्ताने पुन्हा उभा राहिला आहे! नसरापूरच्या या नराधमाला फाशी सुनावली आहे. ती प्रत्यक्षात कधी होईल, हाही मुद्दा आहे. निर्भया प्रकरणाचा अनुभव आपल्याकडे आहे. सप्टेंबर २०१३ मध्ये दिल्लीच्या जलदगती न्यायालयाने चारही दोषींना फाशीची शिक्षा सुनावली होती. पुढे मार्च २०१४ मध्ये दिल्ली उच्च न्यायालयाने आणि मे २०१७ मध्ये सर्वोच्च न्यायालयाने ही फाशीची शिक्षा कायम ठेवली. सर्व कायदेशीर पर्याय संपल्यानंतर अखेर २० मार्च २०२० रोजी शिक्षा अमलात आली. अंमलबजावणीला असे सात-आठ वर्षे लागत असतील, तर जलदगती न्यायालयाचा उपयोग काय? ६५ वर्षांचा हा विकृत त्यापूर्वी नैसर्गिक मृत्यूनेच मरू शकतो. फाशीच्या शिक्षेची त्वरेने अंमलबजावणी होणे म्हणूनच अपरिहार्य आहे. छत्रपती शिवरायांच्या राज्यात महिला जशा सुरक्षित होत्या, तशाच आजही त्या असायला हव्यात. अवघ्या महाराष्ट्रालाच आता त्यासाठी पुढाकार घ्यावा लागणार आहे.

तुम्ही आणि मी नक्की भारतीय नागरिक आहोत का?

एकच नागरिक ओळखपत्र तयार होत नाही तोवर कोट्यवधी भारतीय पुराव्यांची भेंडोळी घेऊन फिरत राहतील आणि त्यांना 'रद्दी' ठरवले जाईल.

प्रभु चावला
ज्येष्ठ पत्रकार

एक वर्षापूर्वी हा प्रश्न जितका टोकदार वाटला होता त्यापेक्षा आज जास्त वाटत आहे. स्वातंत्र्याला ७८ वर्षे लोटली. प्रत्येक प्रजासत्ताकदिनी आश्वासने दिली गेली. डिजिटल ओळखीवर अब्जावधी रुपये खर्च झाले. प्रत्येक भारतीयाला देशाशी जोडणारी अतूट साखळी असे तिचे वर्णन केले गेले; तरी या सर्व कागदपत्रांची संभावना खुद्द सरकारच प्लॅस्टिकचे भंगार अशी करते आहे. या ओळखीच्या पुराव्यांवरील भ्रम दूर केला गेला. आधार, पॅन आणि मतदार ओळखपत्रे नागरिकत्व सिद्ध करत नाही, असे न्यायालयाने जाहीर करून टाकले. सर्वोच्च न्यायालयानेही अशाच एका प्रकरणात आधार कार्डविषयी असेच म्हटले.

तेथूनच हा छळ सुरू झाला. कायदेशीर छाननीत जर ओळखीचे हे पुरावे कुचकामी ठरत असतील तर ज्या भारताचे आपण हिस्सा आहोत, असे समजले जाते, तो भारत कोठे शिल्लक राहतो? पासपोर्ट हेही एक केवळ प्रवासापुरते कागदपत्र असून, नागरिकत्व ते निर्णायकपणे सिद्ध करत नाही, असे परराष्ट्र मंत्रालयाने अलीकडेच जाहीर केले. त्यामुळे ही जखम आणखीनच भळभळू लागली. नागरिकत्व सुरक्षित राखण्यासाठीच पासपोर्ट कायदा तयार केला गेला.

या कायद्यानुसार जे मंत्रालय पासपोर्ट देते त्यानेच जाहीरपणे नागरिकत्वाशी त्याचा संबंध नाही, असे सांगून टाकले.

लोक पासपोर्ट सेवा केंद्रांवर रांगा लावतात. बायोमेट्रिक पुरावे देतात आणि मिळणारे निळ्या रंगाचे छोटेसे पुस्तक खिशात टाकताना त्यांना असे वाटत असते की या देशात आपण कोणीतरी आहोत याचा हा पुरावा. सरकार त्यासाठी पैसेही घेते. देशाशी अनुबंध दाखवणाऱ्या भाषेत हा पारपत्र कायदा लिहिला गेला आहे. त्याच्या सरनाम्यात असे स्पष्ट म्हटले आहे की, जे भारताचे नागरिक आहेत त्यांना हे पारपत्र दिले जाईल. प्रारंभीच जे सूचित केले त्यातून हेतू स्पष्ट होतो.

असे असतानाही परराष्ट्र मंत्रालय आता असे म्हणते आहे की, लोकहो, तुमच्याकडे असलेले पारपत्र या देशाचा चेहरा म्हणून तुम्ही मिरवता आहात, तर ते तसे काहीच सिद्ध करत नाही. ही कायद्याची उत्क्रांती नव्हे. वर्षानुवर्षे नागरिकत्वाचा या विश्वासघाताची लक्तरे वेशीवर टांगली होती ती आता आणखी फाटली आहेत.

याचा अर्थ प्लॅस्टिकचे कार्ड किंवा डिजिटल ओळख याला काहीच अर्थ उरलेला नसताना आता परदेश प्रवासाला लागणाऱ्या भारताच्या पासपोर्ट नावाच्या पवित्र कागदपत्राचीही गणना पोकळ पुरावा अशीच होणार. हा छळ भावनाचक नाही. आधीच्या कालखंडापर्यंत ज्या कुटुंबांची पाळेमुळे पोहोचतात त्यांना याचा हादरा बसला आहे. फाळणीच्या वेळी

त्यांच्या कागदपत्रांना काहीच अर्थ उरला नव्हता. मागच्याच वर्षी नूतनीकरण करून घेतलेल्या पारपत्राला पुढच्या तपासणीच्या वेळी वैध मानले जाईल काय, अशी शंका त्यांच्या मनात आता उत्पन्न झाली आहे.

न्यायालयात होणाऱ्या वाद प्रतिवादांपेक्षा यातील विरोधाभास अधिक खोलवर जाणारा आहे. विविध देशांच्या राजधान्यांमध्ये परराष्ट्र व्यवहार मंत्रालय आपल्या वकिलाती थाटत असते. भारतीयत्वाच्या साध्या पारपत्राशिवाय सेवेच्या कालखंडानुसार त्यांना राजनैतिक पारपत्र दिले जाते. त्याचप्रमाणे सामान्य भारतीयाला मंत्रालयाने आता नेमके पारपत्र आहे म्हणजे तो भारतीय नागरिक आहे हे मान्य करण्याची जबाबदारी झटकली. राष्ट्रीयत्वाचे आणखी पुरावे न मागता विदेशातील सरकारे ही कागदपत्रे स्वीकारतात.

संसद आणि राज्य विधानसभांत निवडून येणारे सदस्य उमेदवारी अर्ज भरताना प्राय: मतदान ओळखपत्र सादर करतात. नागरिकत्वाचा अन्य कुठलाही पुरावा मागितला जात नाही, अथवा दिला जात नाही. जर पासपोर्ट किंवा मतदार ओळखपत्र एखादी व्यक्ती भारतीय आहे हे सिद्ध करू शकत नसेल तर त्याच्या आधारे अर्ज भरून निवडून येणारे खासदार, आमदार देशासाठी कायदे कसे काय करू शकतात? राज्य करणाऱ्यांच्या बाबतीत सरकार जे गृहीत धरते ते ज्यांच्यावर राज्य केले जाते त्यांच्या बाबतीत का धरत नाही? त्यांच्याकडे का पुरावे मागते? या असमानतेमुळे सामान्य नागरिक उघडा पडतो आणि राजकीय मंडळींना संरक्षण मिळते.

हा गोंधळ किती मोठा आहे हे आकडेवारीवरून दिसते. २.५ टक्के लोकांकडेच फक्त पासपोर्ट आहे. ओळखीचा अंतिम आधार म्हणून आधार कार्ड हा अंतिम बायोमेट्रिक दुवा साधण्यासाठी सरकारने १२ हजार कोटी रुपये खर्च केले आहेत. बँकिंग, कर भरणा आणि प्रवासामध्ये आधार बंधनकारक आहे. पण जेव्हा नागरिकत्वाचा विषय येतो तेव्हा यंत्रणा तो मान्य करत नाही.

प्रत्येक दशकानंतर सरकार जनगणना घेऊन नागरिकांचे रजिस्टर तयार करते. २०११ पासून ते गोठवले गेलेले आहे. परदेशात नोकरीसाठी अर्ज करणारे व्यावसायिक आपला पासपोर्ट आता उपयोगाचा आहे की नाही याविषयी संभ्रमात आहेत. याचा परिणाम देशाबाहेरही होऊ लागला आहे. पासपोर्ट म्हणजे राष्ट्रीयत्वाचा पुरावा नाही असे जर भारताचे सरकारच सांगत असेल तर विदेशी स्थलांतर अधिकाऱ्यांना भारतीय प्रवासी, विद्यार्थी आणि व्यावसायिकांकडून आणखी पुरावे मागण्यासाठी संधी मिळते.

लोकशाहीवरचे हे लांच्छन भारताने दूर केले पाहिजे. जोवर नागरिकत्वाचे एकमेव असे निर्णायक कार्ड तयार होत नाही, तोवर कोट्यवधी भारतीय विविध कागदपत्रांची भेंडोळी हातात गच्च पकडून फिरत राहतील आणि त्यांची किंमत 'रद्दी'पेक्षा जास्त नाही, असे सांगितले जाईल..

अन्वयार्थ

पासपोर्ट हा प्रवासाचा दस्तावेज, मग नागरिकत्व ठरते कसे?

विविध ओळखपत्रे आहेत किंवा भारतात जन्म झालाय म्हणजे तो भारतीय नागरिक आहेच, असे नाही. त्यासाठी अनेक पुराव्यांचा एकत्रित विचार केला जातो.

डॉ. खुशालचंद बाहेती
निवृत्त सहायक पोलिस आयुक्त व महाव्यवस्थापक- जनसंपर्क लोकमत

परराष्ट्र मंत्रालयाच्या एका वरिष्ठाने पासपोर्ट सेवा दिवसानिमित्त केलेल्या एका वक्तव्याने देशभरात मोठी चर्चा सुरू झाली. त्यांनी म्हटले की, 'पासपोर्ट हा प्रवासासाठीचा दस्तऐवज आहे; तो नागरिकत्वाचा नाही.' सर्वसामान्य भारतीयांच्या दृष्टीने पासपोर्ट हा भारतीय नागरिकत्वाचा सर्वोच्च पुरावा मानला जातो. मग जर पासपोर्टच अंतिम पुरावा नसेल, तर भारतीय नागरिकत्व नेमके कशावर ठरते?

भारतीय नागरिकत्व कोणत्याही एका ओळखपत्रावर नव्हे, तर भारतीय संविधान, नागरिकत्व कायदा, पारपत्र कायदा आणि सर्वोच्च न्यायालय व उच्च न्यायालयांच्या निर्णयांवर आधारित आहे. भारतीय नागरिकत्व म्हणजे व्यक्ती आणि राष्ट्र यांच्यातील कायदेशीर नाते होय. आधार, मतदार ओळखपत्र, पॅन किंवा पासपोर्ट ही प्रशासकीय सोयीसाठी दिलेली आहेत. त्यापैकी कोणताही एक दस्तऐवज स्वतःहून नागरिकत्व निश्चित करत नाही.

संविधान काय सांगते?

भारतीय संविधानातील कलम ५ ते ११ मध्ये संविधान लागू झालेल्या २६ जानेवारी १९५० रोजी कोण भारतीय नागरिक मानला जाईल, हे नमुद आहे. यात पुढील बाबींचा समावेश आहे.

- संविधान लागू होताना नागरिकत्व, पाकिस्तानमधून आलेल्या स्थलांतरितांचे नागरिकत्व, परदेशात राहणाऱ्या भारतीय वंशाच्या व्यक्ती, परदेशी नागरिकत्व स्वीकारल्यास परिणाम, नागरिकत्वाची सातत्यता, नागरिकत्वाबाबत कायदा आणि जन्म, वंश परंपरा, नोंदणी, नागरिकीकरण तसेच भारतात नवीन प्रदेश समाविष्ट झाल्यास या पाच पद्धतींनी भारतीय नागरिकत्वाबाबतचे मार्ग सांगितले आहेत.

भारतात जन्म झाला म्हणजे प्रत्येकजण भारतीय नागरिक होतो, असा समज चुकीचा आहे. २६ जानेवारी १९५० ते ३० जून १९८७ या कालावधीत भारतात जन्मलेली व्यक्ती, पालकांचे नागरिकत्व काहीही असले, तरी भारतीय नागरिक मानली जाते. १ जुलै १९८७ ते २ डिसेंबर २००४ या कालावधीत जन्मलेल्या व्यक्तीच्या किमान एका पालकाकडे भारतीय नागरिकत्व असणे आवश्यक आहे. ३ डिसेंबर २००४ नंतर एका पालकाकडे भारतीय नागरिकत्व असणे आणि दुसरा पालक बेकायदेशीर स्थलांतरित नसणे आवश्यक आहे.

पासपोर्ट नागरिकत्वाचा अंतिम पुरावा का नाही, याचे उत्तर पासपोर्ट कायद्यात आहे. कलम ६ द्वारे पासपोर्ट देण्यापूर्वी अर्जदार भारतीय नागरिक आहे की नाही, याची पडताळणी केली जाते. परंतु, पासपोर्ट जारी झाला म्हणून तो नागरिकत्वाचे अंतिम प्रमाणपत्र ठरत नाही. कलम २० विशेष परिस्थितीत केंद्र सरकार गैर-नागरिकालाही पासपोर्ट जारी करू शकते.

पासपोर्ट केंद्र सरकारची मालमत्ता आहे. सरकार तो जप्त किंवा रद्द करू शकते. आधार कार्ड हा केवळ ओळख आणि निवासाचा पुरावा आहे. तो नागरिकत्व सिद्ध करत नाही. पॅन कार्ड हा आयकर विभागाचा करसंबंधित क्रमांक आहे. अनेक विदेशी नागरिकांकडेही पॅन क्रमांक असतो. मतदार यादीत नाव असल्यामुळे नागरिकत्वाचा अंदाज येतो; परंतु न्यायालयीन वादात केवळ मतदार कार्ड अंतिम पुरावा ठरत नाही.

जन्म दाखला हा जन्म झाल्याचा पुरावा आहे. परंतु, त्या जन्मामुळे नागरिकत्व मिळेल की नाही, हे त्या वेळच्या नागरिकत्व कायद्यावर अवलंबून असते. २०२० मध्ये केंद्र सरकारने लोकसभेत स्पष्ट सांगितले होते की, पासपोर्ट, आधार, मतदार कार्ड, पॅन कार्ड किंवा जन्म दाखला यापैकी कोणतेही एक नागरिकत्वाचा अंतिम पुरावा नाही.

नागरिकत्व कसे सिद्ध केले जाते?

यासाठी साधारणपणे पुढील कागदपत्रांचा एकत्रित विचार केला जातो. - जन्म दाखला, पालकांचे नागरिकत्व, शालेय दाखले, जुनी मतदार यादी, जमीन महसूल नोंदी, शासकीय सेवा नोंदी, नोंदणी किंवा नागरिकीकरणाचे प्रमाणपत्र, राष्ट्रीयत्व प्रमाणपत्र (विशिष्ट परिस्थितीत). म्हणजेच एकाच कागदपत्रावर नव्हे तर उपलब्ध पुराव्यांच्या एकत्रित मूल्यमापनावर नागरिकत्व ठरते. सर्वोच्च आणि उच्च न्यायालयांनीही यासंदर्भात काही महत्त्वाचे निवाडे दिले आहेत.

भारतात नागरिकत्व हे एखाद्या कार्डमध्ये बंदिस्त नसून तो कायदेशीर दर्जा आहे. त्यामुळे नागरिकांनी जन्मदाखला, पालकांची कागदपत्रे, शालेय दाखले, जुने महसूल व निवडणूक अभिलेख यासारखी मूलभूत कागदपत्रे जपून ठेवणे अत्यंत आवश्यक आहे. पासपोर्ट तुम्हाला जगभर प्रवास करण्याचा अधिकार देतो; परंतु भारतीय नागरिकत्वाचा अंतिम निर्णय मात्र संविधान, नागरिकत्व कायदा आणि न्यायालयीन पुराव्यांवरच अवलंबून असतो.

जगभर

बाळ पोटाशी घेऊन २७ देशांच्या मंत्र्यांसमोर भाषण

रोमिना पोरमोख्तारी. वय वर्षे ३०. स्वीडनच्या हवामान खात्याच्या आणि त्या देशाच्या सर्वांत तरुण मंत्री. सध्या त्या जगभरात चर्चेत आहेत. त्यांचा एक व्हिडीओ तर अल्पावधीत लाखो लोकांनी पाहिला आहे. का? काय आहे त्या व्हिडीओत आणि त्यांनी असं काय विशेष केलं?...

आपल्या तीन महिन्यांच्या मुलाला घेऊन युरोपियन युनियनच्या बैठकीत त्या नुकत्याच सहभागी झाल्या. २७ देशांचे मंत्री आणि त्यांचे प्रतिनिधी या बैठकीला हजर होते. रोमिना या बैठकीत नुसत्या सहभागीच झाल्या नाहीत, तर आपल्या बाळाला पोटाशी घेऊन आणि त्याला जोजवत त्यांनी भाषणही केलं! यावेळी त्या बाळाला शांत करत होत्या; पण त्याचवेळी बैठकीत आपली भूमिकादेखील मांडत होत्या. युरोपियन युनियनच्या मंत्र्यांच्या बैठकीत पहिल्यांदाच एखाद्या बाळानं सहभाग घेतला!

या बैठकीनंतर माध्यमांशी संवाद साधताना त्यांनी सांगितलं, आई होणं म्हणजे महिलांचं करिअर थांबतं, असा त्याचा अर्थ नाही. महिलांना करिअर आणि कुटुंब यांपैकी एकाचीच निवड करावी लागते, असा संदेश जाऊ नये, हा माझा उद्देश होता. त्यामुळे मी माझ्या बाळाला घेऊन बैठकीत सहभागी झाले.

बैठकीपूर्वी पत्रकारांशी संवाद साधताना रोमिना म्हणाल्या, 'आई झाल्यानंतरही महिला सार्वजनिक जीवनात आणि नोकरीत सक्रिय राहू शकतात. युरोपमध्ये कुटुंबाच्या हितासाठी तयार करण्यात आलेल्या धोरणांमुळे पालकांना मुलांची काळजी आणि काम यांमध्ये चांगला समतोल साधता येतो.'

आपल्या जोडीदाराचा उल्लेख करत त्या म्हणाल्या, 'फक्त सरकारची धोरणं पुरेशी नसतात. त्यासाठी जुन्या विचारांचा नसलेला, आधुनिक विचारांचा आणि जबाबदारी उचलण्यासाठी तयार

असलेला जोडीदारही आवश्यक असतो. आता स्वीडनमध्ये वडिलांनी मुलांच्या संगोपनासाठी घरी राहणं पूर्वीइतकं असामान्य किंवा वादग्रस्त मानलं जात नाही. हा बदल देशाच्या कौटुंबिक धोरणांचा आणि समाजाच्या बदलत्या विचारसरणीचा परिणाम आहे.' रोमिना पोरमोख्तारी २०२२ मध्ये सवीडनच्या खासदार बनल्या. त्याच वर्षी त्यांना सरकारमध्ये मंत्रिपद देण्यात आलं. त्यावेळी त्या देशाच्या इतिहासातील सर्वांत कमी वयाच्या मंत्री ठरल्या. नुकतीच त्यांनी पालकत्व रजा (पॅरेंटल लीव्ह) पूर्ण करून पुन्हा काम सुरू केलं आहे. त्यांचे पती सध्या स्वीडनमध्ये सप्टेंबरमध्ये होणाऱ्या निवडणुकांपर्यंत पालकत्व रजेवर आहेत. तेही लक्झेंबर्गला गेले होते आणि बैठकीदरम्यान ॲडमची काळजी घेत होते.

स्वीडन अशा देशांपैकी एक आहे, जिथे पालकांना मुलांच्या संगोपनासाठी सर्वाधिक सुविधा दिल्या जातात. या सुविधांचा खर्च सरकार उचलतं. सध्या हा मुद्दा तेथील निवडणूक प्रचारातही चर्चेचा विषय बनला आहे.

स्वीडनमध्ये बाळाच्या जन्मानंतर पालकांना सुमारे १६ महिन्यांची सवेतन रजा मिळते. त्यापैकी ९० दिवस केवळ आईसाठी आणि ९० दिवस केवळ वडिलांसाठी राखीव असतात. उर्वरित सुमारे ३०० दिवस दोघंही आपल्या गरजेनुसार वाटून घेऊ शकतात. या रजा एकमेकांना हस्तांतरित करता येत नाहीत. एखाद्यानं स्वतःची राखीव रजा घेतली नाही, तर ती संपुष्टात येते. वडिलांसाठी राखीव असलेल्या या रजांना सामान्यतः 'डॅड मंथ्स' असं म्हटलं जातं. त्यामागचा उद्देश वडिलांनीही मुलांच्या संगोपनात समान जबाबदारी उचलावी, हा आहे.

इटली, न्यूझीलंड आणि ऑस्ट्रेलियातही यापूर्वी अशी उदाहरणं घडली आहेत. त्यांचंही लोकांनी स्वागत केलं होतं.

जनमन

लोकप्रतिनिधींच्या अल्प सहभागाने चिंता

लोकशाहीची खरी ताकद केवळ निवडणुकांमध्ये नसते, तर संसद आणि विधानसभेतील प्रभावी कामकाजात असते. जनतेने निवडून दिलेले खासदार आणि आमदार हे सभागृहात लोकांचे प्रश्न मांडण्यासाठी, सरकारला जाब विचारण्यासाठी आणि जनहिताचे कायदे करण्यासाठी पाठविलेले असतात. मात्र, गेल्या काही वर्षांत संसदेचे तसेच अनेक विधानसभांचे कामकाजाचे दिवस कमी होत असल्याचे दिसून येते. गोंधळ, तहकूब, घोषणाबाजी आणि कमी कालावधीची अधिवेशने यामुळे महत्त्वाच्या विषयांवर अपेक्षित चर्चा होत नाही.

यापेक्षाही चिंतेची बाब म्हणजे अनेक लोकप्रतिनिधी सभागृहातील चर्चांमध्ये अत्यल्प सहभाग घेतात. प्रश्न विचारत नाहीत, सक्रिय दिसत नाहीत. मतदारांनी त्यांना केवळ निवडून देण्यासाठी नव्हे, तर आपल्या प्रश्नांना आवाज मिळावा म्हणून पाठविलेले असते. संसद आणि विधानसभेचे कामकाज कमी झाले की सरकारवरील लोकशाही नियंत्रणही कमकुवत होते. विधेयकांवर सखोल चर्चा न झाल्यास त्यातील त्रुटी लक्षात येत नाहीत. विरोधी पक्षालाही आपली भूमिका मांडण्यासाठी पुरेसा वेळ मिळत नाही. परिणामी कायदे अधिक प्रभावी आणि लोकाभिमुख होण्याऐवजी घाईत मंजूर होण्याची शक्यता वाढते. यावर उपाय म्हणून संसद आणि विधानसभांसाठी किमान वार्षिक कामकाजाचे दिवस निश्चित करणे, विनाकारण गोंधळ घालणाऱ्या सदस्यांवर कठोर कारवाई करणे, तसेच प्रत्येक खासदार आणि आमदाराची उपस्थिती, प्रश्न, चर्चा आणि कामगिरी नियमितपणे जनतेसमोर मांडणे आवश्यक आहे.

- **वीरेंद्र सोनवणे,** जळगाव

समकालीन महत्त्वाचे मुद्दे मांडणारी, नवी चर्चा सुरू करणारी वाचक-पत्रे या स्तंभामध्ये प्रसिद्ध केली जातील. आपली पत्रे येथे पाठवा : **janman@lokmat.com**

गावशिवारातली टिपणं

मंगलाष्टकं आणि बाईला 'मापात' ठेवणाऱ्या 'पुरुषार्था'चं लक्षण!

माझ्या लहानपणी गावात होणारी कीर्तनं, प्रवचनं आठवतात. ठरवून प्रतिगामी मांडणी करणारे कथित महाराजलोक त्यावेळी दिसत नसत.

बालाजी सुतार
कवी-कथाकार

एका लग्नात गेलो होतो. मंगलाष्टकं चालू असताना मध्येच ती थांबवून एका 'हभप' प्रकारच्या गृहस्थांकडे माईक सुपुर्द केला गेला. मंगलाष्टकं पुरी होण्याआधीच वधू-वरांना आशीर्वाद देण्याची ही काय घाई असते, मला कळलेलं नाही आजवर. तर त्या हभपांनी आशीर्वचनाच्या सुरुवातीला अस्खलितपणे पंधरा-वीस देवदेवतांची नावे उच्चारली आणि पुढे 'वधू-वरांनी लग्नानंतर आई-वडिलांची सेवा करावी, सासू-सासऱ्यांची सेवा करावी आणि साधूसंतांना दानधर्म करावा..' एवढीच तीन वाक्ये उच्चारून त्यांनी ते संपवलं. ते ऐकल्यावर मी शेजारी बसलेल्या नातेवाइकांना म्हणालो, 'या नव्या जोडप्याचा संसार सुखाचा व्हावा, लग्नोत्तर त्यांच्या नोकरी-धंद्यात बरकत यावी, सौख्यसमृद्धी लाभावी, असलं काही न सांगता आई-वडील, सासू-सासरे आणि साधूसंत यांची सेवा करा, एवढंच का सांगितलं यांनी?' काही न बोलता नातेवाईक गालात हसले. बहुसंख्य लोक आपापल्या आई-वडिलांची सेवा करतच असतात. 'सेवा करा' हे या तिऱ्हाईत माणसांनी सांगायची का गरज भासते?

अलीकडे मागच्या दशक-दोन दशकांत हा नवा प्रकार चालू झाला आहे. पूर्वी ठरावीक संख्येतली सरधोपट मंगलाष्टकं झाली की लग्न पूर्ण व्हायचं. आता कुणाकुणाचे आशीर्वाद आणि पुढाऱ्यांना फेटे बांधणे वगैरे प्रकार किमान अर्धा तासभर चालतात.

मागच्या काही वर्षांत माझ्या घरातला टीव्ही आम्ही काढून ठेवला आहे. बटबटीत मालिका आणि त्याहून बटबटीत वृत्तवाहिन्या हा प्रकारच आपल्या घरात नको, असं आम्ही ठरवलं. तर माझी आई वेळ

घालवायला म्हणून मोबाईलवर कुणाकुणाची प्रवचनं ऐकते. मधूनमधून त्यातले तुकडे कानांवर पडत राहतात. काही वेळा सबंध प्रवचन.

ते ऐकताना मला एकाच वेळी ते विनोदीही वाटतं आणि दयनीयही. अपवाद असतीलच, पण यातले बहुसंख्य प्रवचनकार उपरोल्लेखित हभपांसारखंच आणि अतोनात 'बायनरी'त बोलत असतात. म्हणजे, हे लोक अनेकदा शिक्षित आणि अशिक्षित लोकांची तुलना करतात आणि शिकलेल्यांपेक्षा अडाणीच कसे 'संस्कारी' असतात, हे सांगतात. हटकून लोकप्रिय प्रकार म्हणजे सासू-सुनांच्या वागण्यावर 'विनोदी' बोलणं आणि त्यात सतत सुनेला दोष देत राहणं. बायकोचं ऐकत असलेल्या नवऱ्याची मनमुराद खिल्ली उडवणं आणि बायकोला 'मापात' ठेवणं हेच कसं पुरुषार्थाचं लक्षण असतं, हे सांगत राहणं. बाईने नवऱ्याला काहीही मागू नये, नवऱ्याने स्वतःच तिला सगळं आणून द्यावं, म्हणजे त्या नवरा-बायकोच्या नात्यात गोडवा राहतो, असं ऐकलं एकदा. म्हणजे बाईने कायम स्वतःच्या इच्छांना तिलांजली द्यावी आणि नवरा आणून देईल ते गोड मानून गप्प राहावं, असं एकंदरीत म्हणणं.

ज्ञान-तंत्रज्ञानाने व्यापलेलं एकविसावं शतक चालू आहे. स्त्रिया बहुसंख्येने शिक्षित झालेल्या आहेत. त्यांना त्यांचे काही स्वतंत्र विचार, बुद्धी, विवेक असू शकतो, हेच या लोकांच्या गावी नसतं. आणि हे सगळं ऐकत बसलेले आणि त्याला ठो ठो हसून दाद देणारे मागच्या-मागच्या पिढ्यांतले लोक.

मला माझ्या लहानपणी गावात सप्त्यात किंवा काही ठराविक दिवशी होणारी कीर्तनं, प्रवचनं आठवतात. ते प्रवचनकार अध्यात्माखेरीज सहसा काही बोलत नसत. संतांच्या अभंगांची, विचारांची श्रद्धाळू गावकऱ्यांना असलेली भूक भागायची त्यातून. ठरवून प्रतिगामी मांडणी करणारे कथित महाराजलोक त्यावेळी दिसत नसत, सहसा. गाडगेबाबा हे महाराष्ट्रातले शेवटचे 'खरे' कीर्तनकार होते, हे आता पावलोपावली पुन्हा-पुन्हा लक्षात येत राहतं.

majhegaane@gmail.com

तिरकस आणि चौकस — गजानन घोंगडे

हे पत्र लोकमत मीडिया प्रा. लिमिटेडच्या वतीने मुद्रक व प्रकाशक **बालाजी मुळे** यांनी प्लॉट नं. ए - ८१८ इंडस्ट्रियल एरिया, एम.आय.डी.सी., महापे, नवी मुंबई येथे मुद्रित करून 'लोकमत', पृथ्वी पार्क, सेक्टर ३०, सानपाडा, नवी मुंबई कार्यालय - ४००७०५ येथून प्रसिद्ध केले. ● दूरध्वनी क्र : ०२२ ४६०४१७८४
● **मुंबई कार्यालय :** लोकमत मीडिया प्रा. लिमिटेड, तिसरा मजला, पारिजात हाउस, प्लॉट नं. १०७६, आपटे इंडस्ट्रियल इस्टेट, लक्ष्मीनरसिंग पपन मार्ग, डॉ. ई मोझेस रोडसमोर, गांधीनगर, वरळी, मुंबई, ४०००१८. ● दूरध्वनी क्र : ०२२- ४६०३५९३०, ०२२- ४७५०७९४६ ● **ठाणे कार्यालय :** वेस्टर्न व्ह्यू, श्री गजानन महाराज चौक, वारकरी भवनाजवळ, ठाणे, फोन : २५४४१९०५, २५३८१७७४ ● **नवी मुंबई कार्यालय :** पृथ्वी पार्क, सेक्टर ३०, सानपाडा, नवी मुंबई ४००७०५. फोन : ०२२ ४६०४१७८४ ● संस्थापक संपादक : **स्व. जवाहरलाल दर्डा** ● मानद संपादिका : **श्रीमती उषाताई दर्डा** ● चेअरमन, एडिटोरियल बोर्ड : **डॉ. विजय दर्डा** ● एडिटर इन चिफ : **राजेंद्र दर्डा** ● समूह संपादक : **विजय बाविस्कर**
● संपादक : **अतुल कुलकर्णी*** (*पी. आर. बी. कायद्यानुसार संपादकीय जबाबदारी यांची आहे.) 'लोकमत'मधील लेखांचे हक्क राखून ठेवले आहेत. लोकमत ® हे चिन्ह लोकमत मीडिया प्रायव्हेट लि. चे. व्यापारचिन्ह आहे.

प्रेरणा

जीवन एक परीक्षा है और संघर्ष उसके सवाल हैं। इसलिए संघर्ष का मजा लीजिए। - स्टीव जॉब्स

संपादकीय

उत्तर भारत में बच्चों की मृत्यु की दर आज भी ज्यादा क्यों?

बाल मृत्यु दर (हर एक हजार जीवित पैदा हुए शिशुओं में पांच साल तक की आयु तक मृत्यु का प्रतिशत)- जिसे आईएमआर कहा जाता है- देश की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले राज्य यूपी में सबसे ज्यादा है। सैंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (एसआरएस) की ताजा रिपोर्ट बताती है कि देश में हर 42 नवजात में से एक अपना पहला जन्मदिन नहीं देख पाता। छत्तीसगढ़, एमपी या यूपी में पैदा हुए लगभग हर 28 शिशुओं में से एक के साथ यह स्थिति है। वहीं मणिपुर और केरल में पैदा हुए क्रमशः हर 500 और 125 बच्चों में एक की मौत होती है। बाल मृत्यु को तीन वर्गों में बांटा गया है- पैदा होते ही, एक साल में और पांच साल में (यू-5)। यू-5 वर्ग में भी एक नई चिंता यह है कि केरल हो या यूपी, इस पैमाने पर स्थानीय स्तर पर मृत्यु दर में भारी अंतर है। एक ही राज्य में स्थानीय स्तर पर आईएमआर में अंतर सबसे कम हरियाणा, झारखंड, बिहार और पंजाब में है, जबकि एमपी के दक्षिण-पूर्व जिलों और विंध्य क्षेत्र में आईएमआर का अंतर 10 अंक का है। छत्तीसगढ़ में यह बढ़कर 18 अंक का हो जाता है, क्योंकि जंगल के जिलों में अस्पताल नहीं हैं। सबसे चौंकाने वाला आंकड़ा बिहार का है, जहां प्रति-व्यक्ति आय सबसे कम और जन्म दर और भू-स्वामित्व में गैप सबसे ज्यादा है और आईएमआर यूपी, एमपी और छत्तीसगढ़ के मुकाबले दो-तिहाई (23) है।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता

humarehanuman@gmail.com

ऐसी मूर्खता न करें, जिससे भगवान से भरोसा उठ जाए

भगवान की कृपा सबके लिए समान रूप से बरसती है। हमें दो कारणों से लाभ नहीं मिल पाता- भरोसे की कमी और मूर्खता की अधिकता। ईश्वर भरोसे का दूसरा नाम है, लेकिन हमारी मूर्खता हमें भरोसे से दूर कर देती है। गरुड़ जी को काकभुशुंडि जी ने कहा- राम कृपा आपनि जड़ताई, कहउं खगेस सुनहु मन लाई। गरुड़ जी, राम जी की कृपा और अपनी मूर्खता की बात कहता हूं, मन लगाकर सुनिए। परमात्मा संबंधी जो भी क्रिया हो, उसमें मन लगना चाहिए। एकाग्रचित्त होना चाहिए। अगर हम परमात्मा के प्रति भरोसा रखें तो परमात्मा ने अपनी कृपा करने के लिए एक से एक तरीके निकाले हैं। हम पानी किसी बर्तन में पीते हैं। ईश्वर ने इतने महत्वपूर्ण पात्र को कलश बना दिया, जिसकी हम पूजा करते हैं और कलश में हम परमात्मा का वास मानते हैं। यह परमात्मा की कृपा का अक्षय पात्र बन जाता है। इसीलिए आज शोभा यात्राओं में लोग सिर पर कलश लेकर निकलते हैं। इसलिए कोई भी ऐसी मूर्खता न करें, जिससे हमारा भरोसा भगवान से उठ जाए।

• Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

दूरदृष्टि • प्रतिभा, खुले नियम, इंफ्रास्ट्रक्चर और एनर्जी

एआई के क्षेत्र में ये 4 फैक्टर हमें कामयाबी दिला सकते हैं

कृत्रिम मेधा

अमिताभ कांत

नीति आयोग के पूर्व सीईओ और भारत के पूर्व जी-20 शेरपा

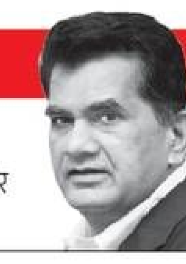

आप मानें या न मानें, लेकिन हम एक सभ्यतागत बदलाव से गुजर रहे हैं। पिछली बार इस पैमाने का बदलाव औद्योगिक क्रांति में हुआ था, जिसे पूरा होने में दो सदियां लगी थीं। लेकिन ये वाला दो दशकों में पूरा हो जाएगा। स्टैनफोर्ड एआई इंडेक्स के अनुसार जीपीटी-3.5 स्तर के किसी मॉडल से प्रश्न पूछने की लागत 2022 में प्रति मिलियन टोकन 20 डॉलर थी, जो 2024 तक घटकर 0.07 डॉलर रह गई। सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग क्षमता का व्यावहारिक मूल्यांकन करने वाले 'एसडब्ल्यूई-बेंच' पर एआई सिस्टमों ने अपना प्रदर्शन सुधारा है। 2023 में ये सिस्टम केवल 4.4% समस्याएं हल कर पा रहे थे, 2024 में यह आंकड़ा 71.7% तक पहुंच गया। मैकिन्से के सर्वे में पाया गया कि 2025 तक 88% संगठन कम-से-कम एक व्यावसायिक कार्य में एआई का उपयोग शुरू कर चुके थे, जबकि दो वर्ष पहले यह आंकड़ा 55% था। जनरेटिव एआई भी तीन वर्षों में 53% आबादी तक पहुंच गया है।

इंटेलिजेंस आज पहले से कहीं सस्ती, अधिक उपलब्ध और व्यापक रूप से इस्तेमाल योग्य बन चुकी है। इसे देखते हुए हर सरकार, कंपनी और संस्थान को अपनी धारणाओं पर दोबारा सोचना चाहिए। भारत के लिए भी ऐसे में आज असली सवाल है कि क्या हम इस बदलाव से मूल्य हासिल कर पाएंगे? भारत वैश्विक एआई सिस्टमों को डिजिटल डेटा, भाषाई विविधता और मानवीय संदर्भ उपलब्ध कराता है, लेकिन अत्याधुनिक मॉडल किन्हीं और देशों में ही केंद्रित हैं। स्टैनफोर्ड के अनुसार, 2024 में अग्रणी एआई मॉडलों में लगभग 90% अमेरिका से आए थे। दूसरे शब्दों में, भारत भविष्य की इंटेलिजेंस प्रणाली को प्रशिक्षित करने में मदद कर रहा है, लेकिन स्वयं की कम्प्यूटिंग क्षमता, डेटा आर्किटेक्चर और मॉडल निर्माण क्षमता के बगैर इस मूल्य का बड़ा हिस्सा विदेशों में चला जाता है।

लेकिन भारत की शुरुआत कमजोर नहीं है। वास्तव में उसके पास चार ऐसे एडवांटेज हैं, जिनकी बराबरी बहुत कम देश कर सकते हैं। यह हैं- प्रतिभा, नियमों का खुलापन, इंफ्रास्ट्रक्चर और एनर्जी।

प्रतिभा की बात करें तो एआई-कुशल आबादी के मामले में भारत का पहला स्थान है। हमारे यहां एआई कौशल का स्तर वैश्विक औसत से 2.8 गुना अधिक है, जो अमेरिका और जर्मनी से भी आगे है। पिछले दशक में भारत में एआई-प्रतिभा तेजी से बढ़ी है। भारत अब केवल इंजीनियर निर्यात करने वाला देश नहीं रहा, बल्कि घर में ही इस प्रतिभा का इस्तेमाल भी कर रहा है। ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर, स्टार्टअप और बड़ी कंपनियां देश में एआई टीमें बना रही हैं। यह संकेत है कि भारत एआई युग का बैक-ऑफिस नहीं, उसके प्रमुख संचालन केंद्रों में से एक बन रहा है।

दूसरे, कई देश जहां एआई पर पहले से कड़े नियंत्रण लागू करने की तरफ बढ़ रहे हैं, वहीं इस दिशा में भारत का नजरिया शायद दुनिया में सबसे दूरदर्शी है। हमने हल्के-फुल्के नियमनों को चुना है। आरबीआई का रेगुलेटरी सैंडबॉक्स, इंटरनेशनल फाइनेंशियल सर्विस सेंटर अथॉरिटी (आईएफएससीए) इनोवेशन फ्रेमवर्क और इंडिया-एआई मिशन की सिद्धांत-आधारित गाइडलाइन- ये सभी एक ही उद्देश्य के लिए डिजाइन किए गए हैं कि पहले बनाओ, फिर जो सामने आए उसे विनियमित करो। तेजी से बदलते क्षेत्रों में अत्यधिक कठोर नियम तकनीक के इस्तेमाल में देरी कर सकते हैं, लागू करने का खर्च बढ़ा सकते हैं और छोटी कंपनियों में प्रयोगों को हतोत्साहित कर सकते हैं। इसलिए व्यापक प्रतिबंध लगाने से पहले इनोवेशन को विकसित होने देने की भारत की नीति हमें प्रतिस्पर्धी बढ़त दिला सकती है।

हमारे यहां एआई कौशल का स्तर वैश्विक औसत से 2.8 गुना अधिक है, जो अमेरिका और जर्मनी से भी आगे है। पिछले दशक में भारत में एआई-प्रतिभा तेजी से बढ़ी है। भारत घर में ही इस प्रतिभा का इस्तेमाल करने भी लगा है।

तीसरा लाभ है बुनियादी ढांचा। भारत डेटा सेंटरों, सेमीकंडक्टरों, क्लाउड कैपेसिटी और हाई-परफॉर्मेंस कम्प्यूटिंग के रूप में एआई अर्थव्यवस्था की आधारभूत संरचना में बड़े विस्तार का साक्षी बन रहा है। सिर्फ डेटा सेंटर क्षेत्र में ही 70 अरब डॉलर का निवेश चल रहा है और 90 अरब डॉलर के अतिरिक्त निवेश की घोषणा हो चुकी है। विशाखापट्टनम में गूगल का 15 अरब डॉलर का एआई हब, क्लाउड और एआई में माइक्रोसॉफ्ट की 17.5 अरब डॉलर की प्रतिबद्धता, जामनगर में रिलायंस की मल्टी-गीगावॉट डेटा सेंटर की योजनाएं बताती हैं कि वैश्विक पूंजी भारत के स्थान को नए सिरे से परिभाषित करने में जुट गई है।

डेटा सेंटरों को चौबीसों घंटे भरोसेमंद बिजली चाहिए। 2025-26 में देश ने रिकॉर्ड 55.3 गीगावॉट अतिरिक्त गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता हासिल की। बीते दशक में हमने सौर ऊर्जा शुल्कों को भी कम किया है। इससे भारत ऐसी जगह के तौर पर उभरा है, जहां एआई इंफ्रास्ट्रक्चर को क्लीन एनर्जी के जरिए चलाया जा सकता है। **(ये लेखक के अपने विचार हैं)**

नजरिया • विश्वकप में मायूसी के बाद भविष्य पर नजर

महिला क्रिकेट टीम को अब आगे की राह तलाशनी होगी

खेल

बोरिया मजुमदार

सचिन तेंदुलकर की आत्मकथा के सहलेखक और खेल पत्रकार

आईसीसी महिला टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल होने जा रहे हैं, लेकिन भारत अंतिम चार में नहीं है। प्रशंसकों के लिए यह निश्चित रूप से मायूस करने वाला होगा। लेकिन सच्चाई यह है कि पिछले दो हफ्तों में हमारी टीम ने जिस तरह का प्रदर्शन किया, उसके आधार पर वह वहां तक पहुंचने की हकदार नहीं थी। टीम एकजुट होकर नहीं खेल पाई। एक-दो उल्लेखनीय व्यक्तिगत प्रयास जरूर रहे, लेकिन टीम के रूप में प्रदर्शन दिखाई नहीं दिया। यही बात ऑस्ट्रेलिया व दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेले गए मैचों में भारी पड़ी।

अगर कप्तान हरमनप्रीत कौर से शुरुआत करें, तो ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उन्होंने एक शानदार पारी खेली थी। वे अपने सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में थीं और उनकी पारी के कारण ही भारत मुकाबले में बना हुआ था। लेकिन बाकी सभी मैचों में वे जरूरत से ज्यादा सतर्क नजर आईं। अगर उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ भी ऐसी ही पारी खेली होती, तो भारत वह मैच जीत सकता था और सेमीफाइनल में पहुंच सकता था। यह निरंतरता की वही कमी है, जो टीम को नुकसान पहुंचा रही है।

स्मृति मंधाना ने दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ महत्वपूर्ण मुकाबलों में अच्छी शुरुआत करने के बावजूद कोई बड़ी भूमिका नहीं निभाई। सच्चाई यह है कि यही दो मैच मायने रखते थे, क्योंकि बाकी मुकाबले अपेक्षाकृत कमजोर टीमों के खिलाफ थे। ऐसे में जब आपकी सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी ही बड़ा योगदान नहीं दे पाती, तो यह निश्चित रूप से एक समस्या है।

जेमिमा रोड्रिगेज और यास्तिका भाटिया का तो पूरा टूर्नामेंट ही खराब रहा और जेमिमा को कुछ समय लेकर आत्ममंथन करना चाहिए कि आखिर समस्या कहां है। उनमें प्रतिभा है, लेकिन वे खुद भी यह स्वीकारेंगी कि उन्होंने अपने करियर में अभी तक क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन नहीं किया है। 2025 के विश्व कप सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ लगाए शतक जैसी पारियों को छोड़ दें, तो वे लगातार अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई हैं।

दीप्ति शर्मा ने पाकिस्तान के खिलाफ पांच विकेट लेने के बाद ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ा और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपना 356वां विकेट हासिल करने के बावजूद उनका विश्व कप फीका ही रहा। ऋचा भी एक अच्छे मैच के बाद कुछ खास नहीं कर पाईं। गेंदबाजी में चारणी के अलावा कोई भी अन्य उस समय आगे नहीं आया, जब टीम को इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। पूरे टूर्नामेंट में क्षेत्ररक्षण औसत से नीचे रहा और यहां तक कि सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में शामिल राधा यादव ने भी कई कैच छोड़े।

अब आगे का रास्ता क्या है। अगला पड़ाव एशियन गेम्स हैं और एशियाई स्तर पर कोई बड़ी प्रतिस्पर्धा नहीं होने के कारण भारत आसानी से स्वर्ण पदक जीत सकता है। लेकिन जिस टूर्नामेंट पर ध्यान होना चाहिए, वह फरवरी 2027 में श्रीलंका में होने वाली चैम्पियंस ट्रॉफी है। क्या कोच अमोल मजुमदार कुछ कठोर फैसले ले सकते हैं और टीम को टी-20 के अनुरूप ढाल सकते हैं? 2024 और 2026 में ग्रुप चरण से बाहर होना अच्छा नहीं है और दो साल बाद ओलम्पिक को देखते हुए भारत को नए विचारों की जरूरत है।

अमोल के लिए आने वाले कुछ महीने बेहद महत्वपूर्ण होंगे कि वे टीम को किस दिशा में ले जाते हैं। हालांकि चोटों ने टीम को प्रभावित किया, लेकिन आपको बैकअप खिलाड़ियों को तैयार रखना होता है और नए खिलाड़ियों को विकसित करना होता है। जब हमारे पास इतनी प्रतिभा और संसाधन हैं, तो स्वाभाविक है कि उम्मीदें भी ऊंची होंगी। अमोल को अपनी रणनीति पर भी विचार करना होगा। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उन्होंने जेमी को रिटायर आउट क्यों नहीं किया और ऋचा को पहले क्यों नहीं भेजा? नंबर 3 की स्थिति को लगातार क्यों बदला जाता रहा? हालांकि लेफ्ट-राइट कॉम्बिनेशन इसका एकमात्र संभावित कारण हो सकता है, लेकिन क्या यह भी सच नहीं है कि नंबर 3 एक विशेष भूमिका है और किसी भी खिलाड़ी को उसमें जमने के लिए लंबा समय चाहिए? गेंदबाजी में प्रेमा रावत को 2 ओवर के बाद बाहर क्यों बैठाया गया?

अगला पड़ाव एशियन गेम्स हैं और एशियाई स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धा नहीं होने के कारण भारत उसमें स्वर्ण पदक जीत सकता है। लेकिन जिस टूर्नामेंट पर ध्यान होना चाहिए, वह फरवरी 2027 में होने वाली चैम्पियंस ट्रॉफी है।

ऐसे कई सवालों के साथ हम विश्व कप को समाप्त कर रहे हैं और अब समय की सबसे बड़ी जरूरत यही होगी कि कुछ जवाब तलाशे जाएं और समाधान लागू किए जाएं। **(ये लेखक के अपने विचार हैं)**

इस लेख को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

अब आप NYT के सभी आर्टिकल **DB एप** पर हर मंगलवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें डीबी एप।

© The New York Times

दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

इस हफ्ते चर्चा में...

अमेरिका के पासपोर्ट पर डोनाल्ड ट्रम्प की इमेज

40 हजार

पासपोर्ट जारी किए जाएंगे अमेरिकी नागरिकों को राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की इमेज वाले। ये पासपोर्ट 6 जुलाई से उपलब्ध होंगे।

35 प्रतिशत

हवाई किराया बढ़ा है ईरान युद्ध के बाद अमेरिका की घरेलू उड़ानों के लिए। अंतरराष्ट्रीय रूट पर 15 फीसदी वृद्धि हुई है।

77 प्रतिशत

बढ़ोतरी हुई है, यूरोप में इलॉन मस्क की टेस्ला कारों की बिक्री में साल के पहले पांच महीनों में पिछले साल के मुकाबले।

मौसम यूरोप का इंफ्रास्ट्रक्चर सर्दी से बचाव के लिए बना है, बढ़ती गर्मी के लिए यह तैयार नहीं

यूरोप में भीषण गर्मी : फ्रांस में कार्डिएक अरेस्ट के मामले चार गुना तक बढ़े, कई देशों में ट्रेन, न्यूक्लियर प्लांट बंद

चिको हरलान

यूरोप इस समय भीषण गर्मी की चपेट में है। इसका असर अब केवल लोगों के स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रहा, बल्कि अर्थव्यवस्था और बुनियादी ढांचे पर भी साफ दिखने लगा है। पश्चिमी यूरोप का रेल नेटवर्क अस्त-व्यस्त हो गया है। फ्रांस में कई परमाणु रिएक्टर बंद कर दिए गए हैं या उनकी क्षमता घटा दी गई है, क्योंकि वे नदियों में अत्यधिक गर्म पानी छोड़ रहे हैं। फ्रांस के एक ऑटोमोबाइल प्लांट में यूनियन नेताओं ने फैक्ट्री फ्लोर पर असहनीय गर्मी का हवाला देते हुए हड़ताल का ऐलान किया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि गर्मी का यह दौर जारी रहा तो कई यूरोपीय देशों की अर्थव्यवस्था पर असर पड़ सकता है और मृत्यु दर भी बढ़ सकती है। शहरों में स्थिति और गंभीर है। मोटी दीवारों वाली पुरानी इमारतें दिनभर की गर्मी सोखकर रात तक छोड़ती रहती हैं, जिससे अपार्टमेंट भट्टी जैसे बन गए हैं। गर्मी से परेशान लोग आधी रात के बाद पार्कों का रुख कर रहे हैं। एयर कंडीशनर खरीदने की होड़ मची है। कई लोग राहत के लिए होटलों में तक ठहर रहे हैं।

पेरिस में राजनीतिक पर्यावरण के विशेषज्ञ फ्रांस्वा जेमेने कहते हैं, 'हर कोई यही पूछ रहा है कि हम इस स्थिति के लिए तैयार क्यों नहीं थे।' एक सप्ताह से अधिक समय से जारी इस हीटवेव ने ब्रिटेन, फ्रांस और स्पेन में तापमान के कई रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। फ्रांस में तापमान 44 डिग्री से अधिक पहुंच गया है। ब्रिटेन और जर्मनी में भी 41 डिग्री से अधिक दर्ज किया जा चुका है। यूरोप में अधिकांश इमारतें और बुनियादी ढांचा ठंडे मौसम को ध्यान में रखकर बनाए गए थे। पुराने भवनों में गर्मी सोखने वाली निर्माण सामग्री का इस्तेमाल हुआ है। उनमें बाहरी शटर जैसी व्यवस्थाएं भी कम हैं, जिससे गर्मी इमारतों के भीतर ही कैद होकर मुश्किलें और बढ़ा रही है।

© The New York Times

गर्मी से मौतें बढ़ने का सबसे अधिक खतरा यूरोपीय देशों में

फ्रांस में एक न्यूक्लियर रिएक्टर।

फ्रांस के स्वास्थ्य मंत्री स्टीफेनी रिस्ट के अनुसार कार्डिएक अरेस्ट के मामलों में चार गुना बढ़ोतरी हुई है। पेरिस में ही रोज पहले 5 से 10 मामले आते थे अब 20 से 30 आ रहे हैं। 2023 की एक स्टडी बताती है कि गर्मी से मौत का खतरा फ्रांस, स्पेन और इटली में ज्यादा है।

इन देशों को ज्यादा नुकसान

जर्मन इंश्योरेंस कंपनी अलायंज की रिपोर्ट में इटली, फ्रांस, जर्मनी व स्पेन को गर्मी की वजह से सर्वाधिक आर्थिक नुकसान की बात कही गई है।

चार न्यूक्लियर रिएक्टर बंद

गर्मी की वजह से तापमान इतना बढ़ गया कि फ्रांस में चार परमाणु बिजलीघरों के रिएक्टर तक बंद करने पड़े हैं।

जर्मनी, ब्रिटेन में कई ट्रेनें रद्द

गर्मी बढ़ने से जर्मनी, स्विट्जरलैंड और ब्रिटेन में ट्रेनें रद्द करनी पड़ी हैं। कुछ अन्य देशों में ट्रेन के ऑनबोर्ड सिस्टम गर्मी नहीं झेल पा रहे हैं।

गर्मी से बचने की योजनाएं

फ्रांस ने 52 उपायों के साथ पिछले साल 388 पेज की योजना जारी की है। लंदन में इस सप्ताह गर्मी से बचाने का प्लान पेश किया गया है।

बिजनेस

100 वर्षों में सबसे ज्यादा मुनाफा टेक कंपनियों में

जेफ सोमर

पिछले 100 वर्षों के शेयर बाजार का रिकॉर्ड बताता है कि निवेशकों की अधिकांश कमाई चुनिंदा कंपनियों से हुई है। इसमें टेक कंपनियां सबसे आगे हैं। एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी के फाइनेंस प्रोफेसर हेंड्रिक बेसेमबाइंडर की स्टडी के अनुसार 1926 से अब तक शेयर बाजार में सूचीबद्ध कंपनियों ने निवेशकों को कुल 91 लाख करोड़ डॉलर का मुनाफा दिया, लेकिन इसमें सबसे बड़ा योगदान कुछ चुनिंदा कंपनियों का रहा। पिछले दशक में टेक कंपनियों के उभार ने यह तस्वीर और स्पष्ट कर दी। अब सबसे अधिक संपत्ति बनाने वाली कंपनियों में एप्पल, एनवीडिया और माइक्रोसॉफ्ट का दबदबा है, जबकि इलॉन मस्क की टेस्ला और स्पेसएक्स भी कुछ समय के लिए इस सूची में शामिल रहीं। स्टडी के अनुसार 1976 में स्थापित एप्पल अकेले 1926 के बाद निवेशकों की कुल संपत्ति में 5.5% की हिस्सेदार रही, जबकि 1999 में सूचीबद्ध एनवीडिया का योगदान 5% रहा। यानी केवल इन दो कंपनियों ने मिलकर निवेशकों की कुल कमाई का लगभग 10% हिस्सा दिया।

© The New York Times

समझौता

कजाकिस्तान से सौदे में ट्रम्प के बेटों को फायदा

पॉल सोने, एरिक लिप्टन

अमेरिका और कजाकिस्तान के बीच हुए एक समझौते में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लुटनिक के बेटों को फायदा होगा। पिछले साल हुए करार के तहत अमेरिकी कंपनियों को विश्व के सबसे बड़े टंगस्टन भंडार की माइनिंग मिल गई है। बेशकीमती धातु टंगस्टन का उपयोग मिसाइल, लड़ाकू विमान, कंप्यूटर चिप्स और अन्य अहम वस्तुओं के प्रोडक्शन में होता है। कजाकिस्तान के ग्रामीण इलाकों में प्रोजेक्ट चलाने वाली नई कंपनी कैज रिसोर्सेस को ट्रम्प ने 15 हजार करोड़ रुपए से अधिक की फेडरल फाइनेंसिंग को भी मंजूरी दे दी है। कैज रिसोर्सेस ट्रम्प के दो बेटों की हिस्सेदारी वाली कंपनी डोमिनारी सिक्योरिटीज के साथ कारोबार करेगी। लुटनिक के बेटों की इन्वेस्टमेंट कंपनी कैंटरफिट्जेराल्ड ने नई कंपनी के लिए पूंजी जुटाने में मदद की है।

© The New York Times

भेदभाव सरकारी निकायों में महिला प्रमुख 4 फीसदी ही

जापान में महिला मेयर के मातृत्व अवकाश लेने पर विवाद, छिड़ी बहस

जेवियर हर्नांडिज, कियूको नोटोया

पश्चिमी जापान के यवाटा शहर की 35 वर्षीय मेयर शोको कवाटा छह माह की गर्भवती हैं और चार महीने की मैटरनिटी छुट्टी लेने की योजना बना रही हैं। ऐसा करने वाली वह जापान की पहली मेयर होंगी, लेकिन उनकी इस योजना ने जापान में राष्ट्रीय बहस छेड़ दी है। कई लोगों ने उन्हें बेबी शू और शुभकामना उपहार भेजकर समर्थन दिया, लेकिन समाज के एक वर्ग ने इसे गैरजिम्मेदार फैसला बताते हुए आरोप लगाया कि उन्होंने जनता से ज्यादा अपने निजी जीवन को प्राथमिकता दी है। कवाटा ने कहा कि इस विवाद ने उन्हें पहली बार महसूस कराया कि जापान में महिलाओं के प्रति अब भी कितना भेदभाव मौजूद है। देश में गर्भवती और कामकाजी महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव के लिए 'माताहारा' (मैटरनिटी हैरेसमेंट) जैसा अलग शब्द भी प्रचलित है। पूर्व जनरल तोशियो तमोगामी

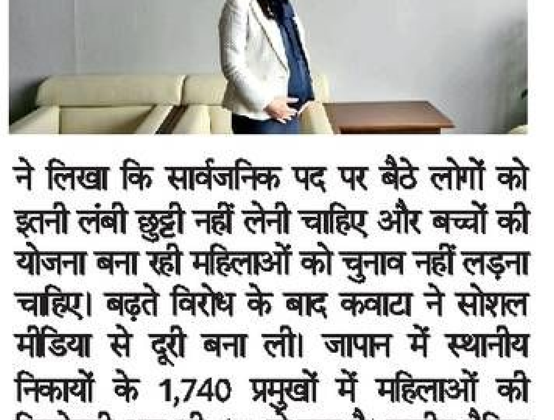

ने लिखा कि सार्वजनिक पद पर बैठे लोगों को इतनी लंबी छुट्टी नहीं लेनी चाहिए और बच्चों की योजना बना रही महिलाओं को चुनाव नहीं लड़ना चाहिए। बढ़ते विरोध के बाद कवाटा ने सोशल मीडिया से दूरी बना ली। जापान में स्थानीय निकायों के 1,740 प्रमुखों में महिलाओं की हिस्सेदारी अब भी 4% से कम है। राष्ट्रीय दैनिक मैनिची ने लिखा कि देश में ऐसा माहौल बनना चाहिए, जहां महिलाएं बिना भेदभाव के मैटरनिटी लीव ले सकें। © The New York Times

कानून कानून तोड़ने पर जुर्माना बढ़ाकर 660 करोड़ रुपए करने की तैयारी

सोशल मीडिया : टेक कंपनियों पर ऑस्ट्रेलिया सख्त

विक्टोरिया किम

ऑस्ट्रेलिया 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को सोशल मीडिया से दूर रखने के अपने कानून को और सख्त करने की तैयारी में है। किशोरों के लिए प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आयु सीमा लागू करने वाला ऑस्ट्रेलिया दुनिया का पहला देश बना था, लेकिन शुरुआती नतीजों से सरकार संतुष्ट नहीं है। कानून के तहत स्नैपचैट, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे लोकप्रिय प्लेटफॉर्म के लिए न्यूनतम आयु सीमा तय की गई है। इसके बाद ब्रिटेन, कनाडा, इंडोनेशिया और ब्राजील जैसे देशों ने भी इसी तरह के कदम उठाने शुरू किए हैं। हालांकि सरकारी रिपोर्ट बताती है कि कानून लागू होने के बावजूद किशोरों के सोशल मीडिया इस्तेमाल में अपेक्षित कमी नहीं आई है।

हजारों अकाउंट जरूर बंद हुए हैं, लेकिन दस में से सात अभिभावकों का कहना है कि उनके बच्चों के अकाउंट अब भी सक्रिय हैं। शोधकर्ताओं ने भी पाया कि अधिकांश ऑस्ट्रेलियाई किशोर किसी न किसी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर रहे हैं। प्रधानमंत्री एंथोनी अल्बानीज ने कहा कि बड़ी टेक कंपनियां कानून का पालन सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठा रही हैं। उनके मुताबिक अब भी बड़ी संख्या में बच्चे सोशल मीडिया पर मौजूद हैं। संचार मंत्री अनिका वेल्स ने आरोप लगाया कि टेक कंपनियां नियमों से बचने के लिए न्यूनतम प्रयास कर रही हैं और अपनी पुरानी रणनीतियां अपना रही हैं। दूसरी ओर, टेक कंपनियों ने इस कानून को अत्यधिक कठोर बताते हुए कहा है कि इसमें प्लेटफॉर्म पर पहले से मौजूद सुरक्षा उपायों को नजरअंदाज किया गया है। प्रतिबंधित प्लेटफॉर्म रेडिट ने तो ऑस्ट्रेलियाई सरकार के खिलाफ मुकदमा भी दायर किया है। कंपनी का तर्क है कि यह कानून बच्चों के राजनीतिक संवाद और अभिव्यक्ति के अधिकारों का उल्लंघन करता है। इस बीच ऑस्ट्रेलिया के ई-सेफ्टी कमिश्नर ने फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट, टिकटॉक और यूट्यूब के खिलाफ कानून के पालन की जांच शुरू कर दी है। कानून के तहत प्रतिबंधित 10 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से बच्चों को दूर रखना संबंधित कंपनियों की जिम्मेदारी है।

ऑनलाइन सेफ्टी नियामक के कानूनी अधिकार और बढ़ेंगे

कानून तोड़ने वाली टेक्नोलॉजी कंपनियों पर अधिकतम जुर्माना दोगुना बढ़ाकर 660 करोड़ रुपए किया जाएगा। सरकार का कहना है, ऑनलाइन सेफ्टी नियामक के कानूनी अधिकार बढ़ाए जाएंगे। कंपनियों को बताना पड़ेगा कि उन्होंने 16 साल से कम आयु के बच्चों को अपने प्लेटफॉर्म से दूर रखने के लिए कौन से कदम उठाए हैं।

© The New York Times

किचन इकोनॉमी • बर्गर पैटी, नगेट्स, मोमो और कबाब जैसे फ्रोजन प्रोडक्ट्स अब हमारे लंच-डिनर का हिस्सा बन रहे

रसोई में तेजी से जगह बना रहे फ्रोजन फूड, सालाना ग्रोथ 14.5%

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

भारतीय किचन में फ्रोजन फूड अब सिर्फ इमरजेंसी या पार्टी की जरूरत नहीं रहा। बर्गर पैटी, नगेट्स, मोमो और कबाब जैसे प्रोडक्ट्स तेजी से रोजमर्रा के खाने का हिस्सा बन रहे हैं। मार्केट रिसर्च फ्यूचर के मुताबिक अगले 10 साल में देश का फ्रोजन फूड बाजार हर साल 14% से भी ज्यादा बढ़ने का अनुमान है। बदलती लाइफस्टाइल, वर्किंग वुमन की बढ़ती तादाद और क्विक कॉमर्स का विस्तार- ये तीन ताकतें मिलकर इस बाजार को अगले दौर में ले जा रही हैं। आईटीसी मास्टरशेफ, मैकेन और एलटी फूड्स जैसी कंपनियां नए प्रोडक्ट्स, कोल्ड चेन इन्फ्रास्ट्रक्चर और डिजिटल चैनलों में भारी निवेश कर रही हैं।

घर का खाना पसंद, तैयारी का झंझट नहीं चाहते लोग

फ्रोजन फूड कैटेगरी अभी सालाना करीब 13% की दर से बढ़ रही है। इसमें तैयार फ्रोजन स्नैक्स की रफ्तार पारंपरिक फ्रोजन सब्जियों, मसलन, मटर और मक्का से काफी तेज है। अलवारेज एंड मार्सल इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर ऋषभ जैन के मुताबिक, ग्राहक ऐसा खाना चाहते हैं जो घर पर ताजा पका हो, लेकिन तैयारी का झंझट न हो। नगेट्स, फ्राइज और मोमो जैसे प्रोडक्ट्स इसीलिए सबसे तेजी से बिक रहे हैं। इनमें पकाने का आखिरी काम ग्राहक खुद करता है।

फ्रोजन फूड की बढ़ती लोकप्रियता के जानिए चार बड़े कारण

1 **बदली लाइफस्टाइलः** बढ़ती आय, व्यस्त दिनचर्या, बढ़ती कामकाजी महिलाओं ने रोज के खाने की प्लानिंग बदल दी है।

2 **एयर फ्रायर कल्चरः** घर पर रेस्तरां जैसा अनुभव देने वाले एयर फ्रायर ने फ्रोजन स्नैक्स की खपत के नए दरवाजे खोले हैं।

3 **क्विक कॉमर्स की पहुंचः** स्विगी, इंस्टामार्ट, ब्लिंकिट जैसे प्लेटफॉर्म युवा खरीदारों तक फ्रोजन प्रोडक्ट्स मिनटों में पहुंचा रहे।

4 **सिर्फ स्नैकिंग से आगेः** आईटीसी मास्टरशेफ कहती है- फ्रोजन फूड अब सिर्फ स्नैकिंग नहीं, लंच-डीनर हिस्सा बन रहा।

कंपनियों की बड़ी तैयारीः आफ्टर-स्कूल स्नैकिंग से बिरयानी किट तक

आईटीसी मास्टरशेफः अनियन रिंग्स, पेरी-पेरी प्रॉन्स, फलाफेल कबाब, साबूदाना टिक्की; आईक्यूएफ (इंडिविजुअली क्विक फ्रीजिंग) टेक्नोलॉजी। **मैकेन फूड्स इंडियाः** एयर फ्रायर के लिए खास प्रोडक्ट्स; आफ्टर-स्कूल स्नैकिंग और मिनी मील सेगमेंट। **एलटी फूड्स (दावत)ः** बिरयानी किट, थाई ग्रीन करी राइस किट, कप्पा राइस; डिजिटल चैनल से सालाना 45% से ज्यादा ग्रोथ।

फैक्ट्री से लेकर रिटेल शेल्फ तक खर्चीला कोल्ड चेन

फ्रोजन फूड बाजार आकर्षक जरूर है, लेकिन मुनाफा कमाना आसान नहीं है। फैक्ट्री से लेकर रिटेल शेल्फ तक बिना रुके कोल्ड चेन बनाए रखना बहुत खर्चीला है। ऋषभ जैन के मुताबिक, इस सेगमेंट में सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि कंपनियां डिस्ट्रीब्यूशन की लागत और किफायती दाम के बीच किस हद तक संतुलन बना पाती हैं। निरंतर नए-नए प्रोडक्ट भी लाते रहना जरूरी है क्योंकि लोग एक ही तरह के खाने से जल्द ऊब जाते हैं।

ट्रेंड • ईरान युद्ध के चलते तेजी से बदले ग्राहक

देश में 10% बिके इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर, ऐसा पहली बार

सुरजीत दास गुप्ता | नई दिल्ली

देश में मॉडर्न इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर क्रांति की शुरुआत के ठीक 10 साल बाद एक नया रिकॉर्ड बना है। जून 2026 में पहली बार टू-व्हीलर मार्केट में इलेक्ट्रिक वाहनों की हिस्सेदारी 10% के आंकड़े को पार कर गई है। ओला, एथर, रॉयल एनफील्ड, बजाज और टीवीएस जैसी बड़ी कंपनियों के नए दांव से अब ई-बाइक (मोटरसाइकिल) मार्केट भी प्रतिस्पर्धा तेज वाली है। वाहन पोर्टल के डेटा के अनुसार, जून महीने में कुल 15.6 लाख टू-व्हीलर्स का रजिस्ट्रेशन हुआ। इनमें से अकेले इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर्स की संख्या 1,62,321 (10.36%) रही। पिछले साल इसी महीने में यह हिस्सेदारी महज 7.28% थी, जो अब बढ़कर 10.36% हो गई है। वहीं, इससे पिछले महीने मई 2026 में यह आंकड़ा 9.18% पर था। हालांकि नीति आयोग ने 2022 में अनुमान लगाया था कि वित्त वर्ष 2027 तक देश में 100% इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर बिकने लगेंगे। उन्होंने यह भी कहा था कि अगर 2024 तक सरकारी सब्सिडी हटा भी ली जाए, तब भी 2031 तक यह आंकड़ा 72% पहुंच जाएगा। कंसल्टेंसी फर्म मैकिन्से का अनुमान है कि भारत में इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर मार्केट कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ेगा और साल 2030 तक यह 50% का आंकड़ा छू लेगा।

मार्केट शेयर... 6 वर्ष में 0.3% से बढ़कर 10.4% तक पहुंचा

वित्त वर्ष/महीना	हिस्सेदारी (%)
2021	0.34%
2022	1.87%
2023	4.54%
2024	5.40%
2025	6.09%
2026	6.57%
अप्रैल26	7.84%
मई26	9.18%
जून26	10.36%

सोर्सः वाहन डेटा

ओला, एथर की ई-बाइक से बढ़ेगी मार्केट में स्पर्धा

मार्केट का यह ट्रेंड अब बदलने वाला है क्योंकि बड़ी कंपनियां अब इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल बाजार में बड़ा दांव खेल रही हैं। ओला इलेक्ट्रिक ने किफायती और वैल्यू-फॉर-मनी कीमतों पर अपनी ई-बाइक पेश कर दी है। रॉयल एनफील्ड अगले कुछ ही हफ्तों में अपनी पहली इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल लॉन्च करने के लिए पूरी तरह तैयार है। एथर एनर्जी ने भी आधिकारिक तौर पर एलान कर दिया है कि वे जल्द ही ई-बाइक ला रहे हैं। बजाज और टीवीएस भी पीछे नहीं हैं, दोनों कंपनियां अपनी-अपनी इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिलों पर तेजी से काम कर रही हैं।

जून में इन दो वजह से ईवी मार्केट में बड़ा उछाल आया

1 ईरान युद्ध के चलते बीते तीन महीने लगातार इस सेगमेंट में तेजी देखी गई है। हर महीने बढ़ता यह ग्राफ साफ तौर पर गवाही दे रहा है कि अब ग्राहकों का भरोसा पेट्रोल वाहनों से हटकर तेजी से बैटरी यानी इलेक्ट्रिक वाहनों पर शिफ्ट हो रहा है।

2 जून में आए इस बड़े उछाल का पूरा श्रेय इलेक्ट्रिक स्कूटर्स की बंपर बिक्री को जाता है। कुल बाजार में पेट्रोल स्कूटर्स की हिस्सेदारी 30% है, जिसके सामने इलेक्ट्रिक स्कूटर्स ने तेजी से अपनी पैठ बनाते हुए 5.5% हिस्सेदारी पर कब्जा कर लिया है।

बिजनेस ब्रीफ

यस बैंक जुटाने जा रहा 16 हजार करोड़ रुपए

मुंबई | यस बैंक के बोर्ड ने इक्विटी और डेट से करीब 16 हजार करोड़ रुपए तक का फंड जुटाने की मंजूरी दे दी है। बैंक इस योजना के तहत 75,000 करोड़ रुपए इक्विटी से और 85,000 करोड़ रुपए कर्ज के जरिए जुटाएगा। हालांकि अभी फंड जुटाने के माध्यमों का खुलासा नहीं किया गया है। बैंक ने साफ किया है कि इस प्रक्रिया से मौजूदा शेयरधारकों की हिस्सेदारी में 10% से अधिक की गिरावट नहीं होगी।

कोटक बैंकः एमडी का इस्तीफा, शेयर 3% टूटा

मुंबई | एमडी और सीईओ अशोक वासवानी के इस्तीफे की खबर से सोमवार को कोटक महिंद्रा बैंक के शेयर बीएसई पर 3.24% गिरकर 395.75 पर बंद हुए। वासवानी ने व्यक्तिगत कारणों का हवाला देते हुए दिसंबर में कार्यकाल खत्म होने पर पद छोड़ने का फैसला किया। बैंक ने नए सीईओ की तलाश शुरू कर दी है, जिसके लिए अनूप साहा मजबूत दावेदार हैं। ब्रोकरेज फर्म जेफरीज और मैक्वेरी के मुताबिक, इस अचानक आए फैसले से निवेशक हैरान हैं।

भारत का विदेशी कर्ज बढ़कर $762.8 अरब

मुंबई | मार्च 2026 के अंत में भारत का विदेशी कर्ज 26.3 अरब डॉलर बढ़कर 762.8 अरब डॉलर हो गया। आरबीआई के अनुसार इस वृद्धि के साथ जीडीपी-विदेशी कर्ज अनुपात भी पिछले साल के 19.8% से बढ़कर 20.8% हो गया है। इसमें दीर्घकालिक कर्ज 613.5 अरब डॉलर है, जबकि कुल कर्ज में अल्पकालिक कर्ज की हिस्सेदारी बढ़कर 19.6% हो गई। इसमें बड़ा हिस्सा अमेरिकी डॉलर (55.5%) और भारतीय रुपया (29.4%) का है।

टाटा मोटर्स सितंबर-27 तक ईवेको डील करेगी

मुंबई | टाटा मोटर्स के चेयरमैन एन. चंद्रशेखरन ने कहा कि इटली के ईवेको ग्रुप के अधिग्रहण के लिए ज्यादातर नियामकीय मंजूरियां मिल चुकी हैं। यह डील सितंबर 2027 तक पूरा होने की उम्मीद है। जुलाई 2025 में ₹47,500 करोड़ में घोषित इस डील से टाटा मोटर्स को एडवांस्ड टेक्नोलॉजी व ग्लोबल मार्केट एक्सेस मिलेगा। टॉप-4 कमर्शियल व्हीकल कंपनी बन सकती है।

महंगाई पर ब्रेक • बालाजी वेफर्स से पारले तक, एफएमसीजी कंपनियों ने टाली कीमत वृद्धि

बड़ी राहत... क्रूड सस्ता हुआ, अब नहीं महंगे होंगे रोजमर्रा का सामान

शर्लिन डिसूज़ा | नई दिल्ली

साबुन, बिस्किट, नमकीन जैसी रोज मर्रा की चीजें और महंगी हो सकती थीं। लेकिन कच्चे तेल यानी क्रूड की कीमतें 75 डॉलर प्रति बैरल से नीचे आने के चलते कंपनियों ने इनकी कीमतों में बढ़ोतरी टाल दी है। फरवरी के अंत में ईरान-अमेरिका-इजराइल संघर्ष के बाद क्रूड आधारित पैकेजिंग और लॉजिस्टिक्स लागत बढ़ी थी। इसके जवाब में देश की बड़ी एफएमसीजी कंपनियों ने पहले ही 3-5% दाम बढ़ा दिए थे। कुछ ने छोटे पैक में मात्रा घटाई। अब क्रूड सस्ता होने पर बलाजी वेफर्स से पारले तक ने आगे की बढ़ोतरी का इरादा टाल दिया है। एचयूएल, डाबर और ब्रिटानिया जैसी कंपनियां फिलहाल 'वेट एंड वॉच' की रणनीति पर हैं। बलाजी वेफर्स के संस्थापक निदेशक चंदू विरानी ने बताया कि कंपनी छोटे पैक में कम वजन और बड़े पैक में दाम बढ़ाने की तैयारी में थी। लेकिन क्रूड के गिरते भाव देखकर उन्होंने फैसला टाल दिया।

ये 6 एफएमसीजी कंपनियां दाम बढ़ा चुकीं या बढ़ाने वाली थीं

कंपनी	परेशानी	पहले ये एक्शन	अब ये किया
एचयूएल	लागत 8-10% बढ़ी	2-5% दाम बढ़ाए	आगे बढ़ोतरी रोकी
डाबर इंडिया	कच्चा माल 10% महंगा	4% दाम बढ़ाए	अगला राउंड टला
ब्रिटानिया	लागत 20% बढ़ी	वजन घटाया, दाम वृद्धि	नई बढ़ोतरी रुकी
पारले	पैकेजिंग लागत अस्थिर	आंशिक दाम वृद्धि	नई बढ़ोतरी नहीं
बलाजी वेफर्स	पैकेजिंग महंगी	दाम वृद्धि तय थी	योजना टली
गोदरेज कंज्यूमर	इनपुट महंगा	दाम 7% तक बढ़ाए	और बढ़ोतरी नहीं

(स्रोतः कंपनियों की घोषणाएं, मार्केट डेटा)

तस्वीर साफ होने तक कई 'वेट एंड वॉच' की स्थिति में

एक बड़ी एफएमसीजी कंपनी के अधिकारी ने पहचान जाहिर न करने की शर्त पर बताया कि मई से लागत बढ़ी थी और उस दौर में खरीदा गया महंगा कच्चा माल (हेज्ड कमोडिटी) अभी इस्तेमाल हो रहा है। जब तक युद्धविराम पूरी तरह स्थिर न हो जाए, कंपनी 'वेट एंड वॉच' यानी देखो और इंतजार करो की रणनीति अपनाएगी।

बिक्री वृद्धि बनाए रखने की रणनीति पर कंपनियां

- कुछ कंपनियां बिक्री वृद्धि बनाए रखना चाहती हैं। सितंबर में जीएसटी कटौती का फायदा उपभोक्ताओं को दिए जाने के बाद मांग एक बार फिर बढ़ने लगी है। कंपनियां उ दाम बढ़ाकर यह रफ्तार धीमी करना नहीं चाहतीं। कुछ एफएमजीसी कंपनियों का मानना है कि बिक्री बढ़ने पर कम मार्जिन के बावजूद आय बढ़ सकती है।

डाबरः छोटे पैक (कंपनी के कुल कारोबार का करीब 30%) के वजन घटाए। 10-20 रुपए के पैक की कीमत वही रखी, पर मात्रा कम की। ब्रिटानिया के एमडी-सीईओ राकशित हरगवे ने कहा था- गुड डे, मैरी गोल्ड जैसे ब्रांड के 10 से ऊपर के पैक में या दाम बढ़ेंगे या वजन घटेगा। **बलाजी वेफर्सः** छोटे पैक में कम वजन और बड़े पैक में दाम बढ़ाने की तैयारी थी। पर यह फैसला टाल दिया।

शेयर बाजार...

पश्चिम एशिया तनाव से सेंसेक्स 372 अंक टूटा

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

पश्चिम एशिया में तनाव फिर बढ़ने के बीच हैवीवेट शेयरों में बिकवाली से सोमवार को घरेलू बाजार टूट गया। सेंसेक्स 372 अंक गिरकर 76,728 पर और निफ्टी 110 अंक गिरकर 23,946 पर बंद हुआ। इस बीच बाजार में घबराहट का पैमाना इंडिया विक्स इंडेक्स 4.5% चढ़ गया। बाजार विश्लेषकों के मुताबिक, अमेरिका और ईरान के बीच होर्मुज जल मार्ग पर हमलों के बाद युद्धविराम हुआ, लेकिन बाजार को ऐसा नहीं लगा कि यह टिक पाएगा। लेबनान में इजराइल के हमलों ने अनिश्चितता बढ़ा दी। इससे अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम 1% से जयादा बढ़कर 73 डॉलर प्रति बैरल के करीब पहुंच गया। बहरहाल, बीएसई के ऑटो इंडेक्स में सबसे ज्यादा 2% से अधिक गिरावट आई।

आईटी शेयरों में दबाव, फार्मा, हेल्थकेयर चढ़ेः आईटी, सीमेंट शेयर भी बिकवाली के दबाव में रहे। हालांकि फार्मा, हेल्थकेयर और मेटल्स इंडेक्स करीब 1% बढ़त पर बंद हुए। अच्छी बात यह रही कि मई में देश का औद्योगिक उत्पादन करीब 5.1% बढ़ा। मैन्युफैक्चरिंग में 5.5% और बिजली उत्पादन में 9.9% उछाल आया।

एआई • भारत ऐसा करने वाला पहला देश होगा

जीडीपी से महंगाई तक...सारे डेटा एक क्लिक पर मिलेंगे

हिमांशी, शाइन जैकब | नई दिल्ली

जीडीपी, राष्ट्रीय आय, बचत और पूंजी निर्माण जैसे अहम आर्थिक आंकड़े अभी सैकड़ों पीडीएफ, पोर्टल और स्प्रेडशीट में बिखरे पड़े हैं। सरकार इन्हें एक एआई प्लेटफॉर्म पर लाने की तैयारी में है। ऐसा होने पर ये आंकड़े आप उतनी ही आसानी से एक्ससेस कर पाएंगे, जैसे चैटजीपीटी पर प्रॉम्प्ट डालकर कर पाते हैं।

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (मोसपीआई) एक साझा डेटा प्लेटफॉर्म (सीडीपी) बना रहा है। इसे आगे चलकर देश के आधिकारिक आर्थिक आंकड़ों के लिए एक समर्पित लार्ज लैंग्वेज मॉडल (एलएलएम) के रूप में विकसित किया जाएगा। चेन्नई की आईटी फर्म बहवान साइबरटेक (बीसीटी) को इसकी जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह काम 18 महीने में पूरा होगा। ऐसा करने वाला भारत दुनिया का पहला देश होगा।

भास्कर नॉलेज

इससे क्या बदलेगा?

- केंद्रीय मंत्रालयों, राज्य सरकारों, नियामकों और सार्वजनिक संस्थानों के सैकड़ों डेटासेट अब एक ही जगह पर आसानी से मिलेंगे।
- राष्ट्रीय लेखा विभाग की 18 यूनिट्स का डेटा एकीकृत होगा।
- नीति निर्माताओं, रिसर्चर, कारोबारियों को अलग-अलग पोर्टल और पीडीएफ नहीं खंगालने पड़ेंगे।
- एआई आधारित विश्लेषण से आर्थिक रुझानों की निगरानी और फैसले करना आसान होगा।

ब्रिटेन, कनाडा जैसे देशों के मुकाबले आगे की सोच

ब्रिटेन, नीदरलैंड्स, कनाडा, फिनलैंड और सिंगापुर मौजूदा एलएलएम और डेटाबेस के संयोजन से काम चला रहे हैं। लेकिन भारत इसके लिए अलग, समर्पित एलएलएम बनाने जा रहा है।

रेस • अमेरिका, चीन, जापान, ताइवान को टक्कर की बड़ी तैयारी

दक्षिण कोरिया चिप, एआई में कर रहा 83 लाख करोड़ रुपए निवेश

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

दक्षिण कोरिया एआई की वैश्विक दौड़ में दो कदम आगे निकलना चाहता है। इस मकसद से वहां की सरकार ने सोमवार को 880 अरब डॉलर (करीब ₹83 लाख करोड़) निवेश का विशाल प्लान पेश किया। राष्ट्रपति ली जे-म्युंग ने इसे 'थ्री मेगा प्रोजेक्ट्स' नाम दिया। इसके तीन लक्ष्य हैं- चिप मैन्युफैक्चरिंग हब, एआई डेटा सेंटर और रोबोटिक्स। यानी इसके तहत देश में नए चिप प्रोडक्शन हब, हाई-टेक डेटा सेंटर्स और एडवांस रोबोटिक्स टेक्नोलॉजी का विकास किया जाएगा। दक्षिण कोरिया की दो सबसे बड़ी चिप कंपनियों सैमसंग और एसके हाइनिक्स के प्रमुखों के साथ एक सार्वजनिक कार्यक्रम में राष्ट्रपति ने कहा, 'किसी भी दूसरे देश से पहले हमें एआई के मूल तत्व सुरक्षित करने होंगे। सेमीकंडक्टर, फिजिकल एआई व एआई डेटा सेंटर इसमें शामिल हैं।'

तीन मेगा प्रोजेक्ट्स पर एक साथ काम

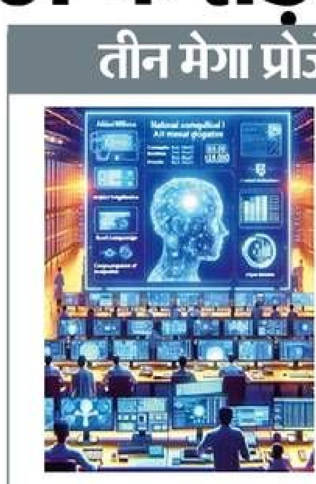

चिप प्रोडक्शन हबः सियोल से बाहर नए सेमीकंडक्टर उत्पादन केंद्र, अभी दक्षिण कोरिया के ज्यादातर प्लांट राजधानी में हैं। **एआई डेटा सेंटरः** सियोल के बाहर एआई इन्फ्रास्ट्रक्चर हब तैयार करना, ताकि क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिल सके। **रोबोटिक्सः** प्रतिस्पर्धी देशों से मुकाबले के लिए अगली पीढ़ी की रोबोटिक्स टेक्नोलॉजी विकसित करने के लिए भरपूर निवेश।

भास्कर नॉलेज

दक्षिण कोरिया के लिए यह कदम 4 कारणों से जरूरी

1 ताइवान, चीन और जापान चिप फैक्ट्रियों और एआई इन्फ्रास्ट्रक्चर में अरबों डॉलर झोंक रहे हैं।

2 एआई बूम से सेमीकंडक्टर की मांग बढ़ी है। इससे पूरी दुनिया में चिप की कमी हो रही है, दाम बढ़ रहे हैं।

3 एपल और माइक्रोसॉफ्ट ने पिछले ही हफ्ते कंपोनेंट महंगे होने से कुछ डिवाइस की कीमतें बढ़ाई हैं।

4 गूगल, अमेजन और मेटा जैसी अमेरिकी कंपनियां इस साल एआई में ₹61 लाख करोड़ खर्च करने की तैयारी में हैं।

ट्रेंड • जून में एमटीएफ इन्वेस्टमेंट 6% बढ़ा

उधार लेकर शेयर निवेश रिकॉर्ड ₹1.3 लाख करोड़

खुशबू तिवारी | नई दिल्ली

घरेलू शेयर बाजार में रिस्क लेने की भूख बढ़ गई है। भारी उतार-चढ़ाव के बावजूद निवेशक उधार लेकर निवेश (लीवरेज ट्रेडिंग) कर रहे हैं। मार्जिन ट्रेडिंग फैसिलिटी (एमटीएफ) के जरिए निवेश जून में लगातार तीसरे महीने बढ़कर रिकॉर्ड ₹1.33 लाख करोड़ के स्तर पर पहुंच गया है। एमटीएफ के तहत निवेशक ब्रोकरेज कंपनियों से उधार लेकर शेयर खरीदते हैं।

24 जून तक के आंकड़ों के मुताबिक, इस महीने एमटीएफ निवेश मई से 5.9% ज्यादा रहा। इससे पहले अप्रैल में इसमें 9.7% और मार्च में 8.8% बढ़ोतरी हुई थी। हालांकि, फरवरी में 10 महीने की लगातार तेजी के बाद पहली बार एमटीएफ बुक घटी थी। मार्च में बाजार में बढ़ती अस्थिरता और निवेशकों की सतर्कता के कारण यह घटकर ₹1.05 लाख करोड़ रह गई थी। इसके बावजूद अक्टूबर 2025 से एमटीएफ बुक लगातार ₹1 लाख करोड़ से ऊपर बनी हुई है।

एमटीएफ... 10% देकर खरीदें शेयर, बाकी उधार

ब्याज पर रकमः एमटीएफ में निवेशक किसी शेयर की पूरी कीमत एक साथ नहीं चुकाते। वे केवल ट्रेड वैल्यू का एक हिस्सा (जैसे 10%) जमा करते हैं। बाकी रकम ब्रोकरेज फर्म ब्याज पर उपलब्ध कराती है। प. एशिया तनाव कम होने और क्रूड के दाम घटने से निवेशकों का भरोसा मजबूत हुआ।

मई में देश का औद्योगिक उत्पादन 5.1% बढ़ा, मैन्युफैक्चरिंग में 5.5% की बढ़त

नई दिल्ली | भारतीय अर्थव्यवस्था के मोर्चे से एक अच्छी खबर आई है। इस साल मई में देश का औद्योगिक उत्पादन पिछले साल के मुकाबले 5.1% बढ़ गया है। इंडेक्स ऑफ इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन (आईआईपी) मई 2026 में 122.7 पर पहुंच गया, जो पिछले साल इसी महीने में 116.7 पर था। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (मोस्पी) के डेटा के मुताबिक इस रफ्तार को बनाए रखने में मैन्युफैक्चरिंग, बिजली और गैस सेक्टर का सबसे बड़ा हाथ रहा है। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर ने मई में 5.5 फीसदी की मजबूत बढ़त दर्ज की।

बिजनेस एंकर

फेड के सख्त रुख से और गिरावट के आसार, देश के गोल्ड ईटीएफ से भी निकासी

जून तिमाही में 50 टन बिका घर का सोना, 43% उछाल

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

सोने की अंतरराष्ट्रीय कीमतें जनवरी 2026 के रिकॉर्ड उच्च स्तर 5,597 डॉलर प्रति औंस से लगभग 30% गिर चुकी हैं। इस बीच, भारत में सोने पर आयात शुल्क बढ़ाकर 15% करने और डीलरों द्वारा प्रीमियम प्राइस वसूलने से यह गिरावट करीब 20% रही। इस गिरावट ने भारतीय परिवारों को अपने पुराने गहने और जेवरात बेचने पर मजबूर कर दिया है, क्योंकि निवेशकों को डर है कि कीमतें और नीचे जा सकती हैं। इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के आंकड़ों के मुताबिक, अप्रैल-जून तिमाही में भारतीय परिवारों ने करीब 50 टन पुराना सोना बेचा। यह पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 43% अधिक है।

मई में गोल्ड-सिल्वर ईटीएफ से 2800 करोड़ रुपए निकाले

- मई में गोल्ड-सिल्वर ईटीएफ से 2800 करोड़ की निकासी मई में वैश्विक स्तर पर 16 मीट्रिक टन की निकासी के बाद, गोल्ड ईटीएफ में हालिया हफ्ते में मध्य अप्रैल के बाद की सबसे मजबूत साप्ताहिक आवक दर्ज हुई।
- करीब 1.1 अरब डॉलर का निवेश आया। भारत की बात करें तो एम्फी के मुताबिक, लगातार 13 महीनों तक जबरदस्त निवेश आकर्षित करने के बाद मई में गोल्ड ईटीएफ 725 करोड़ रुपए की निकासी हुई।
- अप्रैल 2026 में गोल्ड ईटीएफ में 3,040 करोड़ रुपए का रिकॉर्ड निवेश आया था। सिल्वर ईटीएफ में भी लगातार चौथे महीने बिकवाली देखी गई।
- गोल्ड और सिल्वर दोनों ईटीएफ को मिलाकर लगभग 2,800 करोड़ रुपए से अधिक की निकासी दर्ज की गई है। हालांकि गोल्ड ईटीएफ के प्रबंधन के तहत एयूएम मई के अंत में बढ़कर 1.85 लाख करोड़ हो गईं, जो एक महीने पहले 1.78 लाख करोड़ थीं।

29 जनवरी की रिकॉर्ड ऊंचाई से सोना 20% और चांदी 43% सस्ती

मेटल	पीक (29 जन.)	25 जून का रेट	पीक से गिरावट (₹ में)	गिरावट (% में)
24 कैरेट सोना	1,75,340	1,39,873	▼ 35,467	▼ 20.23
22 कैरेट सोना	1,60,611	1,28,124	▼ 32,487	▼ 20.23
चांदी (999)	3,79,988	2,16,541	▼ 1,63,447	▼ 43.01

सोना रुपए प्रति 10 ग्राम और चांदी रुपए प्रति किलो में, नोटः इसमें जीएसटी शामिल नहीं। **सोर्सः** आईबीजेए

आगे क्या? सोने की चमक पर ब्याज दरों का साया

सीएमई फेडवॉच के अनुसार बाजार अभी 2026 में तीन ब्याज दर वृद्धि की उम्मीद कर रहे हैं, जो सोने जैसे गैर-ब्याज वाले एसेट के लिए दबाव का कारण बनी हुई है। निवेशकों की नजर अब अमेरिकी नॉन-फार्म पेरोल डेटा और आईएसएम मैन्युफैक्चरिंग पीएमआई पर है। अगर मुद्रास्फीति ठंडी पड़ती है या रोजगार के आंकड़े कमजोर रहे, तो सोना 4,100-4,150 डॉलर की ओर लौट सकता है। लेकिन मजबूत आर्थिक डेटा 4,000 डॉलर के समर्थन स्तर को एक बार फिर परखेगा। विश्लेषकों का कहना है कि चांदी की औद्योगिक मांग होने के कारण यह आर्थिक मंदी की आशंका में सोने से ज्यादा दबाव झेलती है। सोलर एनर्जी और इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग से दीर्घकालिक मांग का समर्थन बना हुआ है।

निटवियर राजधानी...

तिरुपुर से रिकॉर्ड ₹46 हजार करोड़ का निर्यात

बिजनेस संवाददाता | चेन्नई

वैश्विक संकट के बावजूद देश की 'निटवियर राजधानी' तिरुपुर ने रिकॉर्ड निर्यात किया है। तिरुपुर एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन (टीईए) के अनुसार, पश्चिम एशिया संकट और अमेरिकी टैरिफ के बीच वित्त वर्ष 2025-26 में तिरुपुर ने रिकॉर्ड 46,000 करोड़ का निर्यात किया, जो सालाना आधार पर 3% अधिक है। अब एसोसिएशन ने 2030 तक ₹1 लाख करोड़ निर्यात का लक्ष्य रखा है।

टीईए के अध्यक्ष केएम सुब्रमण्यन ने बताया कि तिरुपुर ने वित्त वर्ष 2026 में देश के कुल निटवियर निर्यात में लगभग 60% का योगदान दिया और 10 लाख से अधिक लोगों को रोजगार दिया। उन्होंने कहा, 'भू-राजनीतिक चिंताओं के बावजूद, मजबूत ऑर्डर बुक और डॉलर के मुकाबले कमजोर रुपए से निर्यात को बढ़ावा मिला।'

पर्सनल फाइनेंस • टआईटीआर की बारीकी भी समझें

आईटीआर का ई-वेरिफिकेशन नहीं किया तो अटकेगा रिफंड

मानसी वार्ष्णेय | नई दिल्ली

अगर आपने इनकम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) फाइल कर दिया है, तो सिर्फ इतना काफी नहीं है। रिटर्न के बाद उसका ई-वेरिफिकेशन भी जरूरी है। अगर तय समय के भीतर यह प्रक्रिया पूरी नहीं की तो आईटीआर अमान्य हो सकता है।

- **ई-वेरिफिकेशन क्या है?** यह ऑनलाइन प्रक्रिया है। करदाता यह पुष्टि करता है कि दाखिल किया गया आईटीआर उसी ने जमा किया है और उसमें दी गई जानकारियां सही हैं। आईटीआर फाइल करने की तारीख से 30 दिनों के भीतर ई-वेरिफिकेशन अनिवार्य है।
- **ओटीपी, ई-वेरिफिकेशन कोड जरूरीः** 1. सबसे आसान तरीका आधार से जुड़े मोबाइल नंबर पर मिलने वाले ओटीपी का है। ई-वेरिफिकेशन प्रोसेस करने के बाद ओटीपी से प्रक्रिया पूरी हो जाती है। 2. नेट बैंकिंग, प्री-वैलिडेटेड बैंक खाते से मिलने वाला इलेक्ट्रॉनिक वेरिफिकेशन कोड (ईवीसी) से भी यह प्रक्रिया पूरी की जा सकती है। 3. प्री-वैलिडेटेड डिमैट खाते का ईवीसी, कुछ बैंकों के एटीएम से मिलने वाला ईवीसी और डिजिटल सिग्नेचर सर्टिफिकेट के जरिए भी सत्यापन किया जा सकता है।
- **30 दिन में ई-वेरिफिकेशन नहीं किया तो...** ऐसी स्थिति में करदाता को 'कॉन्डोनेशन डिले' के लिए आवेदन करना होगा। देरी का कारण बताना पड़ेगा। आयकर विभाग की मंजूरी मिलने के बाद ही रिटर्न का सत्यापन किया जा सकेगा। सत्यापन पूरा होने पर स्क्रीन पर सफलता का संदेश और ट्रांजैक्शन आईडी दिखाई देती है।

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

चढ़ावे की चिंता

राम मंदिर चढ़ावे में चोरी का मामला गरमाता जा रहा है। जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ रही है, नए तथ्य सामने आ रहे हैं, वैसे-वैसे लोगों में नाराजगी भी बढ़ रही है। यही कारण है कि उत्तर प्रदेश के फैजाबाद बार एसोसिएशन ने अदालत में आरोपियों का मुकदमा न लड़ने का फैसला किया है। इतना ही नहीं, फैजाबाद के वकीलों में इतनी नाराजगी है कि बार एसोसिएशन ने फैसला किया है कि आरोपियों का मुकदमा लड़ने वाले किसी भी सदस्य वकील पर पांच लाख रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा। चढ़ावा चोरी को लेकर नाराज वकीलों की संस्था ने और भी मांगें रखी हैं और सड़क पर उतरने की चेतावनी भी दी है। आलोचना के घेरे में आए चंपत राय, अनिल मिश्रा और गोपाल राव के लिए आगे के दिन आसान नहीं होंगे। एसआईटी जांच आगे बढ़ रही है, पर बार एसोसिएशन इस लड़ाई को अपनी ओर से भी आगे बढ़ाना चाहता है। वह धारा 156(3) के तहत अदालत में याचिका दायर करके चंपत राय, अनिल मिश्रा और गोपाल राव के खिलाफ मामला दर्ज करने और सीबीआई जांच की मांग करेगा।

गौर करने की बात है, मंदिर के चढ़ावे में 7 से 7.5 करोड़ रुपये की चोरी की शिकायत से विवाद शुरू हुआ था। अब आरोप लग रहे हैं कि 70 किलो चांदी, सैकड़ों राम शिला और 200 करोड़ रुपये नकदी की चोरी हुई है। हालांकि, राम मंदिर ट्रस्ट या मंदिर निकाय अभी भी बचाव की कोशिशों में लगा है। विडंबना ही है, एक ओर, दावा किया गया है कि भक्तों द्वारा दिया गया दान सुरक्षित है और उसका हिसाब रखा गया है। दूसरी ओर, मंदिर निकाय ने बताया है कि वह पिछले कुछ दिनों में श्री राम मंदिर (अयोध्या) में सामने आई घटनाओं से स्तब्ध, आहत और बेहद दुखी है। मंदिर में ईमानदारी सुनिश्चित करने के लिए मंदिर ट्रस्ट या मंदिर निकाय को अब हर संभव प्रयास करने पड़ेंगे। लोगों के मन में जो संदेह उत्पन्न हुए हैं, उन्हें दूर करने के लिए सबसे पहले मंदिर निकाय को ही सजग होना पड़ेगा। ऐसी योजना बनानी पड़ेगी, ऐसे कदम उठाने पड़ेंगे, ताकि मंदिर के चढ़ावे में सोलह आना पारदर्शिता सुनिश्चित हो जाए। रामजी का मंदिर रामभाव से ओतप्रोत होना चाहिए। यह मंदिर दुनिया भर के सनातनियों की आस्था का प्रतीक है, यहां असावधानी या किसी अनियमितता की रत्ती भर भी गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। यहां की हर व्यवस्था देश के दूसरे मंदिरों के लिए आदर्श होनी चाहिए। राम के प्रति आस्था रखने वाले लोग यही चाहेंगे कि क्षति तो हो चुकी है, किंतु आगे कोई क्षति न हो।

राम मंदिर में असावधानी या किसी अनियमितता की रत्ती भर भी गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। यहां की हर व्यवस्था देश के दूसरे मंदिरों के लिए आदर्श होनी चाहिए।

राम मंदिर में चढ़ावा चोरी का मामला सर्वोच्च न्यायालय में भी पहुंच गया है और वहां गर्मी के अवकाश के बाद इसकी सुनवाई होगी। सुनवाई से पहले मंदिर-प्रबंधन को अपने स्तर पर वाजिब कदम उठाने चाहिए, अन्यथा सर्वोच्च न्यायालय में अगर मामला गया, तो विवाद की गंभीरता बहुत बढ़ जाएगी। ध्यान रहे, यह मंदिर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से ही बना है और अब जब उसके प्रबंधन को लेकर सुनवाई होगी, तो कई तथ्य सामने आएंगे, जिससे मंदिर निकाय को परेशानी होगी। जांचकर्ताओं को भी सावधान रहना होगा, क्योंकि जब न्यायालय में सुनवाई होगी, तब जांच में बरती जा रही कमियों पर भी सवाल उठेंगे। यह एक ऐसा गंभीर मामला है, जिसे दबाया नहीं जा सकता। जहां, इस मामले में समाज के विभिन्न पक्ष न्याय के लिए सक्रिय हो रहे हैं, वहीं, विपक्षी पार्टियां भी दिनों-दिन मुखर व हमलावर होती जा रही हैं। ऐसे में, जल्द से जल्द दूध का दूध और पानी का पानी होना चाहिए।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 30 जून, 1951

भिखमंगों की समस्या

दिल्ली म्यूनिसिपल कमेटी ने अपनी एक बैठक में नगर में भिखमंगों की समस्या पर चर्चा की और निराश्रित गृह के सहायतार्थ 18,000 रुपये की रकम स्वीकार की। भिखमंगों की समस्या अकेली दिल्ली की विशेषता नहीं है। सभी बड़े शहरों में उनका अस्तित्व है और तीर्थ-स्थानों में तो भिखारियों की एक बड़ी संख्या नजर आती है।

समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं, जो भिखारियों के अस्तित्व की सर्वथा उपेक्षा करते हैं। जब वे अपने काम-काज से नगर की सड़कों पर गुजरते हैं, तो भिखारियों का आर्तनाद उनके हृदय को द्रवित नहीं कर पाता और उनकी ओर देखे बिना ही वे आगे बढ़ जाते हैं। इसके विपरीत आपको ऐसे लोग भी मिलेंगे, जो इतने कठोर हृदय नहीं होते। भिखमंगों की दयनीय और हीन अवस्था को देखकर उनका दिल द्रवित हो जाता है और वे पैसा-दो पैसा भिखारी की ओर फेंककर अपनी आत्मा को संतोष दे लेते हैं और अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। मनुष्य का स्वाभिमान तो उसी समय समाप्त हो जाता है, जब वह पैसे-दो पैसे के लिए दूसरों के सामने हाथ फैलाना शुरू करता है। फिर दाताओं की उपेक्षा वृत्ति से उसे कोई आघात नहीं पहुंचता। वह निर्ल्लज हो जाता है और अपना भिखारी का पेशा जारी रखता है।

किन्तु भिखारियों की समस्या व्यक्तिगत दान के आधार पर हल नहीं हो सकती। यह एक सामाजिक समस्या है और सामाजिक आधार पर ही उसका हल संभव हो सकता है। समाज में दिन-प्रतिदिन भिखमंगों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह समाज की रुग्णता की निशानी है। यह हमारी समाज-व्यवस्था का दोष है कि लोगों को इतनी बड़ी संख्या में दूसरों की भिक्षा पर अपना जीवन बसर करना पड़ता है। नगर की सड़कों पर क्षत-विक्षत और लुंज-पुंज भिखमंगों का जमाव सारे समाज के लिए लज्जा का विषय है और इसका समुचित इलाज न करके समाज दुनिया की निगाह में अपने को हेय प्रमाणित करता है। ऊंची-ऊंची अट्टालिकाओं और भागती हुई मोटरों के बीच भिखमंगों का आर्तनाद और भी अधिक चुभने वाली वस्तु हो जाती है। भाग्यशीलों और अभागों के बीच की यह विषमता और भी नग्न रूप में हमारी आंखों के सामने आ उपस्थित होती है।

दक्षिण के धनी मंदिरों से सीखना चाहिए

राय की राय

यहां स्कैन करें

विभूति नारायण राय | पूर्व आईपीएस अधिकारी

उत्तर भारत के मंदिरों में चढ़ावों के दुरुपयोग का आरोप पहली बार नहीं लग रहा है। यह स्वस्थ लक्षण है कि राम मंदिर के बहाने पारदर्शी प्रबंधन के लिए विमर्श शुरू हो गया है।

ऐसा कम ही होता है कि चोरी की कोई एक घटना पूरे राष्ट्र को झकझोर कर रख दे। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट से जुड़े लोगों पर जिस तरह से श्रद्धालुओं के चढ़ावों में से नगदी और जेवरात की चोरी के आरोप लगे, उनसे उस विशाल हिंदू मानस का आहत होना बहुत स्वाभाविक है, जिसे संगठित करके समकालीन समाज और राजनीति को प्रभावित कर सकने में समर्थ एक विशाल आंदोलन चलाया गया और जिसने तब से सारे चुनावी समीकरण बदल दिए।

शुरुआत में हल्के-फुल्के ढंग से चढ़ावे में चोरी के आरोप लगाए गए और ट्रस्ट के लोगों ने इसे हल्के में लेकर टालने की कोशिश की। जल्द ही आरोपों ने तूल पकड़ना शुरू कर दिया। रुपये-पैसों की गिनती से शुरू हुई बात शीघ्र ही उन सोने-चांदी की ईंटों और आभूषणों तक पहुंच गई, जिन्हें दर्शनार्थी श्रद्धा से मंदिर में चढ़ाते रहे हैं। आरोपित किया गया कि चढ़ावे की गिनती के समय जिन सीसीटीवी कैमरों को नजर रखनी थी, वे ऐन मौके पर बंद कर दिए जाते थे या उनमें की गई महत्वपूर्ण रिकॉर्डिंग डिलीट कर दी जाती थी। एक बार बांध टूटा, तो फिर आरोपों की बाढ़ आ गई। कई तरह के तथ्य सामने आए। मसलन, रोकड़ गिनने वालों की नियुक्तियां भाई-भतीजावाद से हुईं; पहले भी ऑडिट ने कुछ त्रुटियां पकड़ी थीं, जिन्हें नजरंदाज किया गया; बैंक अधिकारियों की भूमिका भी संदिग्ध थी।

एक बार जोर पकड़ने के बाद यह संभव नहीं रह गया कि आरोपों को कालीन के नीचे बुहारा जा सके। मजबूरन राज्य को हस्तक्षेप करना पड़ा और पूरे मामले की जांच के लिए एक विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया गया। कई दिनों तक अनुमानों, अफवाहों और उत्तेजना का माहौल गर्म रहा और जब एसआईटी की रिपोर्ट आई, तो यह साबित हो गया कि ट्रस्ट की गतिविधियां या चढ़ावे का प्रबंधन संदिग्ध हरकतों में लिप्त था। यह अलग बात है कि रिपोर्ट के आधार पर सिर्फ आठ छोटे मुलाजिमों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराई गई। यद्यपि रिपोर्ट आम जन के लिए जारी नहीं हुई है, पर इस एफआईआर से आम समझ यही बनी कि घपलों का ठीकरा आठ छोटे कर्मचारियों के सिर पर फोड़कर ट्रस्ट के उन ताकतवर सदस्यों को बचाने की कोशिश की गई है, जिनकी छत्रछाया में ये कर्मी फल-फूल रहे थे।

राष्ट्रीय मीडिया और सोशल मीडिया में इससे भूचाल आ गया और ट्रस्ट सदस्य चंपत राय व अनिल मिश्रा को अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा। इनके साथ ही एक अन्य महत्वपूर्ण पदाधिकारी गोपाल राव को भी जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया गया है। इन इस्तीफों से विशाल हिंदू मानस की आहत भावनाएं किस हद तक शांत हो सकेंगी, कह सकना मुश्किल है। सही आकलन के लिए अभी कुछ और प्रतीक्षा करनी होगी।

उत्तर भारत के मंदिरों में आस्थावान हिंदुओं के चढ़ावों के दुरुपयोग का आरोप पहली बार नहीं लग रहा है। यह एक आम जानकारी का विषय है कि ज्यादातर मठों और मंदिरों में श्रद्धालुओं द्वारा सामर्थ्य के अनुसार बड़ी मात्रा में नगदी और सोने-चांदी के आभूषण चढ़ाए जाते हैं और अपवाद स्वरूप ही कुछ में व्यवस्थित ढंग से उनका हिसाब-किताब रखा जाता है। इनमें ऐसे धार्मिक स्थलों की संख्या और कम होगी, जिनकी आय का छोटा सा हिस्सा भी शिक्षा या चिकित्सा जैसे सार्वजनिक कल्याण के कामों पर खर्च किया जाता हो। इनके बरक्स दक्षिण के 'तिरुपति तिरुमला देवस्थानम्' जैसे विशाल आय वाले धार्मिक ट्रस्ट हैं। यह ट्रस्ट प्रसिद्ध वेंकटेश्वर मंदिर का प्रबंध देखता है। यह भी श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ही तरह सरकार द्वारा स्थापित है, पर उसका वित्तीय प्रबंधन निजी क्षेत्र की किसी कुशल कंपनी की तरह होता है।

देश के सबसे धनी मंदिरों में से एक वेंकटेश्वर मंदिर अपनी आय से शिक्षा व चिकित्सा के कई महाविद्यालय और अस्पताल चलाता है। तिरुपति के परिसर में हजारों लोगों को दोनों वक्त भरपेट भोजन कराया जाता है। हजारों लोगों को साफ-सफाई के माहौल में बिना किसी अव्यवस्था के सामूहिक रूप से जीमते देखना एक खास तरह का अनुभव है। यहां कोई भोजन बनाने वालों, परोसने वालों या खाने वालों की जाति नहीं पूछता। यह इसलिए अधिक महत्वपूर्ण है कि दक्षिण के बहुत से मंदिरों में आज भी दलितों को प्रवेश मुश्किल से मिलता है। उत्तर भारत में सिर्फ श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड ही एकमात्र ऐसी धार्मिक संस्था है, जो तिरुपति देवस्थानम से प्रतिस्पर्द्धा कर सकने में समर्थ शैक्षणिक या चिकित्सकीय संस्थान चलाती है। यह संस्था भी मेडिकल और नर्सिंग कॉलेजों के अतिरिक्त दर्शनार्थियों को मुफ्त भोजन और सस्ते आवास जैसी सुविधाएं प्रदान करती है।

यह स्वस्थ लक्षण है कि अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावों की चोरी से इस विमर्श की शुरुआत हुई है कि श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट जैसी अकूत संपदा वाली धार्मिक संस्थाओं के आय-व्यय का पारदर्शी तरीके से लेखा-जोखा रखा जाए। ऐसी भी मांग उठ रही है कि भक्तों से प्राप्त धनराशि का बड़ा हिस्सा सार्वजनिक हित में खर्च किया जाए। उत्तर भारत, खास तौर से हिंदी पट्टी शिक्षा और चिकित्सा जैसे क्षेत्र में दक्षिण के मुकाबले अभी भी बहुत पीछे है। यह अपेक्षा करना अनुचित न होगा कि सामान्य जन से प्राप्त धन भक्तों के कल्याण पर भी खर्च किया जाए।

दरिद्र नारायण की सेवा का माहात्म्य तो हम निरंतर बखानते हैं, पर यदि मंदिर भूखों को निःशुल्क भोजन कराएं, तो क्या यह उनकी सबसे बड़ी सेवा नहीं होगी? हर मंदिर के बाहर एक बड़ी भीड़ भीख मांगती दिखती है, मंदिर उनके लिए सम्मान के साथ भोजन की व्यवस्था तो कर ही सकते हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार, मंदिरों की तिजोरियों में भारतीय रिजर्व बैंक की अभिरक्षा से अधिक सोना पड़ा हुआ है। इस संपदा का उपयोग गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाले भारतीयों की जीवन-स्थिति सुधारने में किया जा सकता है।

अब जब श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में चढ़ावों के दुरुपयोग करने वालों पर कार्रवाई की शुरुआत हो चुकी है, तब देखना यह है कि सिर्फ छोटे कर्मचारियों की गिरफ्तारियों पर ही यह खत्म तो नहीं हो जाएगी। ट्रस्ट और उसे संचालित करने वाले संगठनों की साख तभी बच पाएगी, जब गिरफ्तार लोगों के आकाओं तक कानून के लंबे हाथ पहुंचेंगे।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

तेहरान से रिश्ते सुधारने का यह सही समय

यहां स्कैन करें

नितिन पई | निदेशक, तक्षशिला इंस्टीट्यूशन

अगर अमेरिका ने 2018 में भारत पर ईरान से रिश्ते सीमित करने का दबाव न डाला होता, तो हमारा सालाना द्विपक्षीय व्यापार संभवतः 20 अरब डॉलर से ज्यादा पहुंच चुका होता और हम रोजाना 6,50,000 बैरल कच्चा तेल उससे आयात शामिल होता। इसके साथ ही चाबहार बंदरगाह के जरिये हमारा अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक रणनीतिक संपर्क भी स्थापित हो गया होता। वाशिंगटन के दबाव के कारण भारत को ईरान से तेल आयात कम करना पड़ा और ईरान को अन्य निर्यात भी कम करने पर मजबूर होना पड़ा।

अब, जब युद्ध ने पश्चिम एशिया में एक नई स्थिति पैदा कर दी है, तो भारत को तेहरान से रिश्ते सुधारने की तेज पहल करनी चाहिए। युद्ध बाद की दुनिया में मदद और व्यापार, दोनों देशों को करीब ला सकते हैं। तेहरान ने अयातुल्ला अली खामेनेई के राजकीय अंतिम संस्कार का बुलावा देकर भारत को एक मौका दिया है। नई दिल्ली को इसका जवाब उप-राष्ट्रपति जैसे उच्च स्तरीय प्रतिनिधि को भेजकर देना चाहिए। साथ ही ईरानी लोगों के लिए जरूरी मेडिकल सामानों व दवाओं का सहायता पैकेज भी भेजना चाहिए। लगभग दो दशकों तक अमेरिका, इजरायल, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के साथ मजबूत साझेदारी के नाम पर भारत ने ईरान के साथ अपने रिश्तों को कम अहमियत दी। इसका फायदा भी हुआ। भारत-अमेरिका परमाणु करार के बाद वाशिंगटन के साथ रिश्ते बेहतर हुए। नरेंद्र मोदी सरकार ने अबू धाबी और रियाद के साथ रिश्तों को बदला और तेल अवीव के साथ भी गहरे रिश्ते बनाए। हालांकि, इन फायदों के साथ भारत को एक कीमत भी चुकानी पड़ी। आखिरी झटका तब लगा, जब वाशिंगटन ने यह मांग कर दी कि नई दिल्ली ईरान से कच्चा तेल खरीदना बंद करे।

वियतनाम और अमेरिका के बीच लंबी लड़ाई हुई थी, पर उसके दो दशक से कुछ ही समय बाद वियतनाम अमेरिका का साझेदार बन गया।

भारत और ईरान के करीब आने के पीछे हमेशा से मजबूत भू-राजनीतिक कारण रहे हैं। कौटिल्य की रणनीति के लिहाज से देखें, तो ईरान रणनीतिक आजादी के साथ सहयोगी बन सकता है। शिया ईरान कभी भी अपने अरब सुन्नी पड़ोसियों के साथ सहज नहीं रहा है। पाकिस्तान चाहे अपने हितों को साधने की कितनी भी कोशिश करे, तेहरान को शक है कि इस्लामाबाद सऊदी अरब की राह पर ही चलेगा। तेहरान के कुछ व्यावहारिक रणनीतिकार भारत को एक संभावित सहयोगी के तौर पर देखते हैं और भारत में भी ऐसा सोचने वाले रणनीतिकार हैं। 2000 के दशक के मध्य में, जब पाकिस्तान के जनरल परवेज मुशर्रफ अफगानिस्तान के मामले में अमेरिका को गुमराह कर रहे थे, तब भारत के हित में वाशिंगटन व तेहरान को करीब लाने की कूटनीतिक पहल की वकालत की थी। तब भारत के दोनों के साथ अच्छे संबंध थे और उनके बीच सुलह होने से भारत को फायदा होता, लेकिन नई दिल्ली में इसकी कोई इच्छा ही नहीं दिखाई। भारत के हित खाड़ी देशों के साथ जुड़े थे।

वाशिंगटन और तेहरान के बीच की खाई को पाटना भारत के हित में है। हो सकता है, राजनीतिक हालात अभी अनुकूल न हों, पर चीजें बदल सकती हैं। वियतनाम और अमेरिका के बीच लंबी व भीषण लड़ाई हुई थी, पर उसके दो दशक से कुछ ही समय बाद वियतनाम अमेरिका का साझेदार बन गया। फिलहाल, इस्लामी गणराज्य दो बहुत ताकतवर दुश्मनों से युद्ध में बच गया है, लेकिन उसे अपने क्षतिग्रस्त बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण और अपनी अर्थव्यवस्था को खड़ा करने की चुनौती का सामना करना है। इसलिए, नई दिल्ली के हालिया कुछ कदमों से निराशा के बावजूद, इस बात की संभावना है कि तेहरान भारत की ओर से की गई पहल का सकारात्मक जवाब दे। राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान के निमंत्रण को इसी नजरिये से देखा जाना चाहिए।

ईरान से कच्चे तेल और डामर के आयात को जल्द फिर से शुरू करने से भारत को फायदा होगा। इसी तरह, ईरानी लोग भारतीय चाय, चावल, गेहूं और दवाओं का स्वागत करेंगे। नई दिल्ली को इन वस्तुओं के आयात के लिए ईरान को उदार ऋण की पेशकश करनी चाहिए। नई दिल्ली ईरान के लोगों के लिए भारत में किफायती इलाज भी राह आसान बना सकती है। नई दिल्ली को जल्द से जल्द इस दिशा में कदम उठाना चाहिए।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

अंतर्विरोधों से भरा जीवन

हममें अंतर्विरोध क्यों है? दरअसल, हमने कुछ किया है और हम नहीं चाहते कि दूसरे लोग उसे जानें; हमने कुछ सोचा है और वह उस स्तर का नहीं है, जिस स्तर का उसे होना चाहिए। यह हमें अंतर्विरोध की हालत में ले आता है और यह हमें पसंद नहीं है।

जहां अनुरूपता की कोशिश है, वहां भय होगा ही और यह भय ही है, जो अंतर्विरोध पैदा करता है। यदि कुछ बनना नहीं है, कुछ और हो जाने की चेष्टा नहीं है, तब भय का कोई एहसास नहीं है, वहां कोई अंतर्विरोध नहीं है। हमारी जिंदगी मिजाज और दिखावे की कहानी है। हम अपने मिजाज, अपनी मनोदशा के मुताबिक दिखावा किया करते हैं, जो अंतर्विरोध है। जब वह मिजाज गायब हो जाता है, तब हम जैसे थे, वैसे हो जाते हैं। तो समझने की बात यह है कि जब तक यह अंतर्विरोध है, तब तक एक सतही जीवन है।

इसलिए अंतर्विरोध की जो समस्या है, उसकी गहराई में जाएं। यह बहुत ही मुश्किल काम है, क्योंकि हम संवेदन, उत्तेजना पर अत्यधिक निर्भर हैं और इसीलिए हमारा अधिकांश जीवन अंतर्विरोधों से भरा है। हम स्मृतियों, सम्मतियों पर निर्भर हैं, हमारे अनेक भय हैं, जिन्हें हम छिपाए रखना चाहते हैं। इन सबसे हमारे अपने भीतर अंतर्विरोध निर्मित होता है; जब यह अंतर्विरोध बर्दाश्त के बाहर हो जाता है, तब हम अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं। हम चाहते शांति हैं, लेकिन जो कुछ भी हम करते हैं, वह युद्ध पैदा करता है, परिवार में ही नहीं, बल्कि बाहरी दुनिया में भी। द्वंद्व का कारण क्या है, इसे समझने के बजाय, हम इस कोशिश में लगे रहते हैं कि हम यह बन जाएं, वह बन जाएं। इस तरह हम दरार को और बढ़ा दिया करते हैं।

क्या यह समझ पाना संभव है कि हमारे भीतर अंतर्विरोध क्यों है, न केवल सतही रूप से, बल्कि गहरे मानसिक रूप से भी? सबसे पहली बात, क्या हमें इसका एहसास है कि हम एक अंतर्विरोधी जीवन जी रहे हैं? हम शांति चाहते हैं, पर राष्ट्रवादी हैं; हम सामाजिक दुर्दशा को दूर करना चाहते हैं, फिर भी हममें से हर कोई व्यक्तिवादी है, संकुचित और अपने में घिरा हुआ है। हम निरंतर अंतर्विरोध में जी रहे हैं। क्यों? क्या इसलिए नहीं कि हम संवेदन के, उत्तेजना के दास हैं? इस बात को स्वीकार करने या नकारने की जरूरत नहीं है। इसके लिए संवेदन के निहितार्थों को, जो कि इच्छाएं ही हैं, भली-भांति समझने की आवश्यकता है।

जिसका कोई विपरीत हो, वह सत्य नहीं है। जब मैं कहता हूं, 'मैं आपसे प्रेम करता हूं', तब इसके साथ ईर्ष्या, डाह, चिंता, भय भी जारी रहते हैं, जो अंतर्विरोध हैं। इसे समझना बहुत जरूरी है।

हम कई सारी चीजें चाहते हैं, जो एक-दूसरे के प्रतिकूल होती हैं, परंतु जिसका कोई विपरीत हो, वह सत्य नहीं है। जब मैं कहता हूं, 'मैं आपसे प्रेम करता हूं', तब इसके साथ ईर्ष्या, डाह, चिंता, भय भी जारी रहते हैं, जो अंतर्विरोध है। इसी को समझना बहुत जरूरी है।

जे कृष्णमूर्ति

जो बाइडन | पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति

पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोग यह जानते हुए भी जंग के मोर्चे पर गए कि शायद वे वापस न लौट पाएं। आजादी की कोई स्थायी गारंटी नहीं होती। इसकी लगातार रक्षा करनी पड़ती है और इसके लिए सबसे भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

अनुलोम-विलोम

लिव-इन रिलेशन

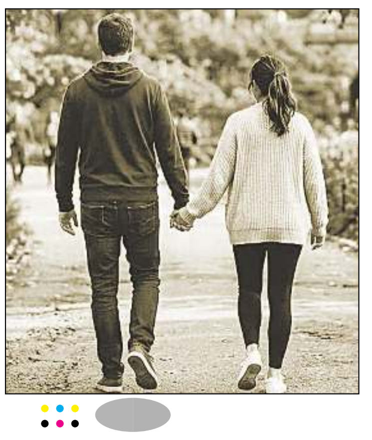

लिव-इन संबंधों को बढ़ावा नहीं मिले

हम इस बात से शत-प्रतिशत सहमत हैं कि लिव-इन रिलेशनशिप को कतई उचित नहीं ठहराया जा सकता है। पिछले दिनों माननीय पंजाब हाईकोर्ट ने लिव-इन में रह रहे एक युवा जोड़े को इसलिए पुलिस सुरक्षा देने से इनकार कर दिया, क्योंकि उन्होंने अपने माता-पिता से साथ-साथ रहने की अनुमति नहीं ली गई थी।

अदालत का कहना है कि भारतीय समाज में विवाह एक पवित्र संस्था के रूप में मान्य है और लिव-इन में रहना किसी की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रश्न नहीं हो सकता। इससे माता-पिता का सम्मान भी प्रभावित होता है। ऐसे में, इस तरह के जोड़ों द्वारा माता-पिता के खिलाफ सुरक्षा की मांग करना किस तरह से उचित कहा जा सकता है? स्पष्ट है, लिव-इन में रहने वाले जोड़े ने इसलिए अपनी सुरक्षा की मांग की, क्योंकि वे बालिग हैं, एक-दूसरे से प्रेम करते हैं और अपने संबंध को आगे बढ़ाना चाहते हैं।

आश्चर्य है कि जो माता-पिता अपने लड़के-लड़कियों को बचपन से पाल-पोसकर बड़ा करते हैं, बड़े होने पर इन युवाओं को वही संरक्षक की जगह बेगाने नजर आने लगते हैं। यह हमारी समझ से बाहर है। अतः हम लिव-इन रिलेशनशिप को उचित नहीं मानते हैं, जिसमें माता-पिता की सहमति नहीं है।

हालांकि, आज नौजवानों का एक वर्ग पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित होकर लिव-इन रिलेशनशिप जैसी आधुनिक जीवनशैली अपना रहा है और साथ-साथ रह रहा है, परंतु अपने परिवार या माता-पिता से अपने रिश्ते को छिपा रहा है। ऐसे में, जब वे अपने इन रिश्तों की सुरक्षा के लिए पुलिस से मदद मांगते हैं, तो कुछ अजीब लगता है। अदालत का कहना है कि घर से भागकर या घरवालों को बिना बताए युवा जब साथ-साथ रहते हैं, तो यह यूं भी नियम के विरुद्ध है। कारण? ऐसे रिश्ते न केवल परिवार की प्रतिष्ठा को प्रभावित करते हैं, बल्कि माता-पिता के गरिमा के साथ जीवन जीने के अधिकार का भी उल्लंघन करते हैं।

इसी कारण माननीय कोर्ट का कहना है कि किसी भी संबंध को लिव-इन रिलेशनशिप का दर्जा देने के लिए भी कुछ आवश्यक शर्तों को पूरा करना बेहद जरूरी है। लिव-इन में रहने वाले दोनों व्यक्तियों का विवाह योग्य उम्र का होना और समाज के सामने पति-पत्नी की तरह रहना आवश्यक है।

दरअसल, हमारे देश में ऐसे रिश्तों की शुरुआत बॉलीवुड कलाकारों ने की है, जिनसे प्रभावित होकर हमारी युवा पीढ़ी भी जॉब के दौरान इस संस्कृति को धड़ल्ले से अपनाने लगी है। इस तरह के रिश्ते बिना सोचे-समझे बनाए जाते हैं, इसलिए ये उचित नहीं कहे जा सकते।

एम एम राजावत 'राज', टिप्पणीकार

जीने की आजादी मौलिक अधिकार

भारतीय समाज में यौन शुचिता का परंपरागत विचार अब खंडित हो रहा है। किशोरावस्था से यौवन की ओर कदम बढ़ाती युवा जोड़ी कई बार अभिभावकों की खुली छूट या बिंदास जीवनशैली जीने के भ्रम में गलत रास्ते पर चली जाती है। अगर समाज में इस तरह के रिश्तों को स्वीकृति मिल जाए, तो इससे उनमें सहजता आ जाएगी।

आज पूरी दुनिया एक गांव में परिवर्तित हो चुकी है, तो समाज की मानसिकता भी इसी के अनुरूप बदलनी चाहिए और विवाह जैसी पुरातन संस्थाओं को उदार बनाया जाना चाहिए, जिसमें लिव-इन जैसे संबंधों की भी मान्यता हो। समाज को पुरानी रूढ़ियों के सहारे हांकने की कोशिश कई बार बड़े भयावह परिणाम लाती है। न जाने क्यों भारतीय समाज में अपनी मर्जी से जीवन साथी चुनने या किसी से प्यार करने के बाद शादी करने को अभी भी समाज हिकारत की नजर से देखता है। आज के दौर में भी बहुत से अभिभावक यह कहने से हिचकते हैं कि उनकी बेटी या बेटे ने अपनी मर्जी से जीवन साथी चुना है। अगर कोई युवा किसी के साथ अफेयर में हो, तो उसे या तो पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव बताया जाता है, या सामाजिक संस्कारों का भंजक माना जाता है। कई बार इसके भी दुष्परिणाम सामने आते हैं। लड़की मां-बाप की पसंद के लड़के के साथ शादी के बाद सामंजस्य बैठाने में असफल रहती है। कई बार आत्महत्या और अब तो मंगेतर या पति के कत्ल तक बात जा पहुंची है। ऐसे कदम घातक और समाज के स्वरूप को नष्ट करने वाले हैं।

बीते दिनों नोएडा से लेकर भोपाल, कोलकाता से लेकर देहरादून तक दहेज हत्याओं या ससुराल में मिली प्रताड़ना के कारण हुई मौतों के कई मामले सामने आए, जिनमें नवयुवतियों की जिंदगी बर्बाद हुई और उनके मां-बाप जिंदगी भर का दुख अब उठा रहे हैं। एक कड़वी सच्चाई यह भी है कि विवाह से पहले स्वतंत्र, स्वच्छंद जीवन जीने का मन बना चुकी लड़कियों को अब ससुराल की बंदिशों में रहकर जीना स्वीकार नहीं है, जिस कारण कई बार वे ससुराल वालों को दहेज उत्पीड़न के झूठे मुकदमों में फंसा जाती हैं। इस सबके लिए जिम्मेदार विवाह पूर्व की स्वच्छंद जीवनशैली है। लड़कियां अब अपने पैरों पर खड़ी हो रही हैं और वे गृहस्थी के झंझट में फंसना नहीं चाहतीं, इसलिए लिव-इन को महत्व दे रही हैं।

आदर्शवादी समाज होने के लिए अब बदलते माहौल की हकीकत को समझना और स्वीकारना चाहिए। भोपाल, नोएडा, इंदौर, पुणे में घटी घटनाएं केवल अपराध कथाएं नहीं हैं, ये समाज के लिए एक चेतावनी हैं, जिन्हें सुनने की जरूरत है।

मनोज कुमार अग्रवाल, टिप्पणीकार

जिज्ञासु होना बुद्धिमान होने की पहचान

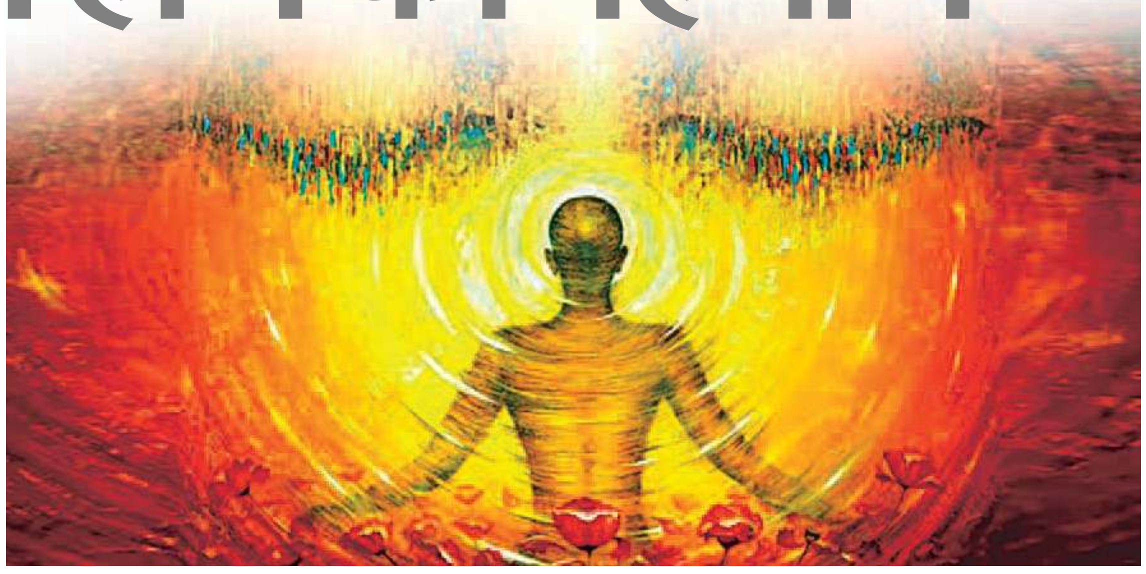

मनुष्य विवेकशील प्राणी है। जिज्ञासा एवं प्रश्न करने के लिए ही उसका जन्म होता है। यह उसका सहज स्वभाव भी है। अधिक प्रश्नों की संख्या का अर्थ है– ज्ञान और विज्ञान में अधिक उन्नति। सभ्यता का विकास हमारी अनंत जिज्ञासाओं के कारण संभव हुआ है, जो आज भी जारी है।

अध्यात्म
स्वामी प्रभुपाद

पिता के साथ भ्रमण करता हुआ एक बालक निरंतर जिज्ञासाएं व्यक्त करता जा रहा है। वह पिता से अनेकानेक विलक्षण प्रश्न पूछता है। पिता को यथोचित उत्तरों से अपने पुत्र को संतुष्ट करना पड़ता है। गृहस्थाश्रम में जब मैं एक युवा पिता था, तो निरंतर साथ रहने वाला मेरा द्वितीय पुत्र मुझसे सैकड़ों प्रश्नों के अंबार लगा देता था।

प्रश्न करना सहज स्वभाव

एक दिन हम संध्या को ट्राम में जा रहे थे कि सामने से बारात जा रही थी। उस चार वर्ष के बालक ने सदा की ही भांति यह प्रश्न किया कि यह विशाल शोभा यात्रा क्या है। विवाह से संबंधित उसके अनेक प्रश्नों के हर संभव उत्तर दिए गए और अंत में उसने पूछा क्या उसके पिता का भी विवाह हुआ है। यह प्रश्न सुनकर उपस्थित सज्जन वृंद जोर से हंस पड़े। यद्यपि वह बालक आश्चर्यचकित था कि हम सब क्यों हंस रहे हैं। किसी प्रकार बालक को उसके विवाहित पिता के द्वारा संतुष्ट किया गया।

ऐसे ही सर्वाधिक बुद्धिमान पुरुषों में से एक महाराज परीक्षित थे। अनजाने में ही एक ब्राह्मण ने उन्हें शाप दे दिया कि सात दिन के भीतर सर्प के काटने के कारण उनकी मृत्यु हो जाएगी। वह ब्राह्मण यद्यपि बालक ही था, किंतु वह अत्यधिक शक्तिशाली था। उन महान राजा का महत्व नहीं जानने के कारण ही उस बालक ने मूर्खतापूर्वक यह शाप दे दिया कि राजा की सात दिन के भीतर मृत्यु हो जाएगी। बालक के पिता को, जिनका महाराज परीक्षित ने अपराध किया था, यह शाप सुनकर अत्यंत शोक हुआ।

शाश्वत सत्य को जानने की इच्छा

जब महाराज को इस दुर्भाग्यशाली शाप के बारे में पता चला, तो तत्काल ही वे अपना राजमहल त्याग कर, निकट भविष्य में होने वाली अपनी मृत्यु की तैयारी करने के लिए गंगा के तट पर चले गए। वे एक महान सम्राट थे, इसलिए प्रायः सभी महर्षि और उच्च कोटि के विद्वान उस स्थान पर एकत्रित हो गए, जहां महाराज परीक्षित अपने नाशवान शरीर को त्यागने के पूर्व उपवास कर रहे थे।

अंत में, सभी संतों में से सर्वाधिक युवा संत, शुकदेव गोस्वामी भी वहां उपस्थित हुए। उनके द्वारा उस संत-समागम का सर्वसम्मति से सभापतित्व स्वीकार किया गया (यद्यपि वहां पर उनके पिता श्रीव्यासदेव भी उपस्थित थे)। महाराज परीक्षित ने अत्यंत आदरपूर्वक शुकदेव गोस्वामी को एक उच्च आसन (व्यास-आसन) अर्पित किया और नश्वर जगत में सातवें दिन होने वाली अपनी मृत्यु के संबंध में उनसे अनेक विवेकपूर्ण प्रश्न किए।

महाराज परीक्षित भगवान के महान भक्त पांडवों के योग्य वंशज थे। उन्होंने महान ऋषि शुकदेव के सामने इस प्रकार संगत जिज्ञासाएं कीं। 'हे ब्राह्मण, आप महान संतों में भी सर्वाधिक महान हैं। मैं आपसे विनम्र निवेदन कर रहा हूं कि आप कृपया यह बताएं कि मेरा क्या कर्तव्य है। मैं अपनी मृत्यु के कगार पर स्थित हूं। अतः मैं इस विषम समय में क्या करूं? कृपा करके मुझे बताइए। हे प्रभो! मैं क्या श्रवण करूं, क्या अर्चन करूं अथवा अब मैं किसका स्मरण करूं? आप जैसे महान ऋषि गृहस्थ के घरों में आवश्यकता से अधिक नहीं ठहरते, इसीलिए यह मेरा सौभाग्य है कि आप करुणावश मेरी मृत्यु के समय यहां आए हैं। अतएव कृपया इस विषम समय में आप मुझे उपदेशामृत का पान कराइए।'

उचित-अनुचित का अंतर जानें

इस प्रकार महाराज परीक्षित द्वारा मधुर भाषा में निवेदन किए जाने पर महर्षि शुकदेव ने उनके प्रश्नों के प्रामाणिक उत्तर दिए। शुकदेव गोस्वामी भागवत-विद्या के न केवल महान विद्वान थे, वरन समस्त दैवी गुणों से संपन्न भी थे। वे वैदिक साहित्य के मूल रचयिता श्री बादरायण (महर्षि वेदव्यास) के योग्य पुत्र थे। शुकदेव गोस्वामी ने कहा, 'प्रिय नृप, तुम्हारी जिज्ञासा अत्यधिक संगत और विवेकपूर्ण है। यह सब समय के समस्त लोगों के लिए हितकर भी है। ऐसी जिज्ञासाएं सर्वोच्च और विवेकपूर्ण भी हैं। दूसरे शब्दों में ऐसी विवेकपूर्ण जिज्ञासाएं वे मुक्त पुरुष करते हैं, जिनको अपने आध्यात्मिक स्वरूप का पूर्ण ज्ञान है।'

एक बुद्धिमान व्यक्ति यह भली-भांति जानता है कि जन्म के साथ ही मृत्यु भी उत्पन्न हो जाती है। उसे यह ज्ञात है कि प्रत्येक क्षण उसकी मृत्यु होती जा रही है। ज्यों ही उसके जीवन का समय समाप्त होगा, त्यों ही मृत्यु का अंतिम रूप सामने आ जाएगा, इसीलिए वह अगले जीवन के लिए अथवा जन्म-मृत्यु रूपी बारंबार होने वाले भवरोग से मुक्त होने की तैयारी करता है।

जिस मनुष्य के पास पर्याप्त बुद्धि नहीं है, वह इस अप्राकृत (दिव्य) जीवन के विषय में जिज्ञासा नहीं करता, वरन इसके स्थान पर वह अनेकानेक असंगत विषयों के प्रति प्रश्न करता रहता है, जिनका उसके शाश्वत (नित्य) अस्तित्व से कोई संबंध नहीं।

विचार-कथा

मन की बुराई ही नहीं अच्छाई भी देखिए

आत्मा की सोचने की शक्ति को मन कहते हैं। उन विचारों को बुद्धि द्वारा आत्मा समझती है। जब वे विचार कर्म-व्यवहार में आते हैं, तो वे कर्म आत्मा पर अपना प्रभाव छोड़ जाते हैं, जिसे संस्कार कहते हैं। मन में ही विचार करने की क्षमता है, इच्छा शक्ति है, कल्पना करने की शक्ति है, महसूस करने की क्षमता है। जब इन क्षमताओं को मनुष्य समझ नहीं पाया, तो वह उसके अधीन हो गया।

जब लोगों का मन वश में नहीं हुआ, तो कह दिया कि मन बहुत दुष्ट है, पापी है, नीच है, लेकिन मन का एक दूसरा पहलू भी है कि मन बहुत सुंदर है। मन की क्षमता को अगर समझा जाए, अगर उसकी वास्तविकता को जानकर उसे यथार्थ दिशा में लगा दिया जाए, तो यह मन बड़ी-से-बड़ी लौकिक और अलौकिक उपलब्धि प्राप्त कर सकता है। इस संदर्भ में मुझे एक कहानी याद आ रही है :

एक राजा था। वह बहुत अशांत और परेशान रहता था। एक बार उसके राज्य में एक महात्मा पधारे। महात्मा बड़े सिद्ध पुरुष थे। जब राजा ने यह बात सुनी, तो वह महात्मा के पास गया और उसने उनसे कहा, 'मेरा मन बहुत परेशान रहता है। मुझे रात भर नींद नहीं आती। कृपया मेरे मन को शांत कीजिए।' महात्मा ने कहा, 'ठीक है, लेकिन उसके लिए आप कल सुबह चार बजे आइए।' राजा ने कहा, 'ठीक है' और वह वहां से जाने लगा, तो महात्मा ने कहा, 'एक बात याद रखना, कल सुबह जब आप चार बजे आओ, तब अपने मन को साथ लेकर आना।' राजा ने कहा, 'ठीक है' और वहां से चला गया।

राजा के मन में अनेक प्रश्न थे कि महात्मा कल सुबह मन शांत कर सकते हैं, तो अभी कर देते। एक रात फिर मेरी परेशानी में जाएगी। पता नहीं, महात्मा मेरे मन को शांत कर पाएंगे या नहीं, फिर सम्राट ने सोचा कि महात्मा ने कहा है कि अपने मन को साथ ले आना। अब मन को कैसे साथ लाना होगा, यह तो बताया ही नहीं।

राजा सुबह चार बजे महात्मा के पास पहुंच गया, तो देखा महात्मा आसन लगाकर बैठे हैं। राजा को देखकर महात्मा ने कहा, 'आइए, आसन ग्रहण कीजिए।' राजा सामने बैठ गए, तो महात्मा ने सबसे पहले उनसे पूछा, 'क्या आप अपने मन को साथ लाए हो?' राजा ने कहा, 'महात्माजी यही बात तो मैं समझ नहीं पाया कि मन को कैसे साथ लाना होता है।' फिर राजा ने कहा, 'अगर मैं आया हूं, तो मन आया ही होगा, क्योंकि मन बाहर नहीं भीतर है ना?' महात्मा ने कहा, 'ठीक समझा है। अब आंखें बंद करो और ढूंढ़ो अपने मन को कि वह कहां है और इस वक्त क्या कर रहा है?'

राजा ने आंखें बंद की और ढूंढ़ने लगे अपने मन को कि कहां है और क्या कर रहा है। काफी समय के बाद राजा को एहसास हुआ कि जिसे वह ढूंढ़ रहा है, वह कोई चीज का नाम नहीं है। वह एक क्रिया का नाम है और वह है सोचने की क्रिया- जैसे ही वह ढूंढ़ने लगा, तो देखा कि विचार शांत हो गए हैं, तब राजा ने मन की शांति का अनुभव किया।

कहानी का भाव यही है कि आज हमारा मन परेशान इसलिए होता है, क्योंकि हम मन के विषय में जानते ही नहीं हैं। आज हमारी जीवन शैली इस प्रकार की बन गई है कि मन किस दिशा में चल रहा है यह महसूस करने के लिए हमारे पास समय ही नहीं है।

ब्रह्माकुमारी चक्रधारी दीदी

सप्ताह के व्रत-त्योहार

30 जून से 06 जुलाई 2026 तक

30 जून (मंगलवार) : आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा (दिन–रात)। आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारंभ।

01 जुलाई (बुधवार) : आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा प्रातः 07.39 मिनट तक पश्चात द्वितीया तिथि। जुलाई मास प्रारंभ।

02 जुलाई (गुरुवार) : आषाढ़ कृष्ण द्वितीया प्रातः 09.39 मिनट तक पश्चात तृतीया तिथि। भद्रा रात्रि 10.30 मिनट से।

03 जुलाई (शुक्रवार) : आषाढ़ कृष्ण तृतीया प्रातः 11.21 मिनट तक पश्चात चतुर्थी तिथि। भद्रा प्रातः 11.21 मिनट तक। पंचक प्रारंभ रात्रि 12.49 मिनट से। श्रीगणेश चतुर्थी व्रत।

04 जुलाई (शनिवार) : आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी दोपहर 12.41 मिनट तक पश्चात पंचमी तिथि। पंचक।

05 जुलाई (रविवार) : आषाढ़ कृष्ण पंचमी दोपहर 01.31 मिनट तक पश्चात षष्ठी तिथि। पंचक।

06 जुलाई (सोमवार) : आषाढ़ कृष्ण षष्ठी दोपहर 01.48 मिनट तक पश्चात सप्तमी तिथि। भद्रा दोपहर 01.48 मिनट से रात्रि 01.37 मिनट तक। पंचक।

–पं. ऋभुकांत गोस्वामी

मास विशेष

आषाढ़ मास के देवता वामन

श्रावणस्य पूर्वे मासे आषाढः पूज्यते हरिः।
स्नानं दानं जपं यज्ञं तद् मासे परमं स्मृतम्॥
(स्कंद पुराण)

अर्थात श्रावण मास से पहले आने वाले आषाढ़ मास में भगवान हरि (विष्णु) की पूजा की जाती है। इस पवित्र महीने में स्नान, दान, जप और यज्ञ करने का बहुत अधिक महत्व बताया गया है। स्कंद पुराण के अनुसार विष्णु के पांचवें अवतार वामन इस मास के देवता हैं, इसलिए इस मास में वामन अवतार की उपासना विशेष फलदायी होती है। इस माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि और प्रत्येक बृहस्पतिवार को भगवान वामन की पूजा और व्रत की परंपरा है। इस मास में खड़ाऊं, छाता और जल दान का विशेष महत्व है।

आषाढ़ मास में विवाह, गृह प्रवेश और मुंडन संस्कार जैसे सभी मांगलिक कार्य वर्जित होते हैं। इन्हें करने से शुभ फल की प्राप्ति नहीं होती यानी निष्फल होते हैं, इसलिए इसे 'शून्य' मास भी माना जाता है। इसका कारण यह है कि आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि (देवशयनी एकादशी) से भगवान विष्णु चार माह के लिए क्षीर सागर में योग निद्रा में चले जाते हैं। इससे सभी शुभ और मांगलिक कार्य रुक जाते हैं। विष्णु के योगनिद्रा में जाने पर शिव सृष्टि के संचालन का भार संभालते हैं।

आषाढ़ मास से ही चातुर्मास प्रारंभ होते हैं। चातुर्मास आषाढ़ शुक्ल एकादशी तिथि से प्रारंभ होकर कार्तिक शुक्ल एकादशी तिथि तक चार माह तक चलते हैं। इस अवधि में साधु-संत अपनी यात्राएं रोककर एक ही स्थान पर रहकर व्रत, ध्यान और तप करते हैं।

आषाढ़ मास में ही शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि के दिन उड़ीसा में जगन्नाथ रथ यात्रा होती है। इस दिन कृष्ण, सुभद्रा और बलराम की पुष्य नक्षत्र में रथ यात्रा निकाली जाती है। इस मास में ही मिथुन संक्रांति में प्रकृति के बदलाव पर 'रज पर्व' बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। तीन दिनों तक चलने वाले इस पर्व में कृषि से जुड़े सभी काम जैसे- जुताई, बुवाई आदि पूरी तरह रोक दिए जाते हैं। यही नहीं सिलबट्टे का उपयोग भी नहीं किया जाता, क्योंकि उसे धरती का ही रूप माना जाता है। प्रसिद्ध शक्ति पीठ कामाख्या मंदिर में भी इसी मास में 'अंबुवाची मेला' लगता है। इस मेले में अच्छे मानसून की कामना से धरती की पूजा की जाती है।

आषाढ़ मास को जीवन और प्रकृति की शुरुआत का मास माना जाता है। वर्षा ऋतु की शुरुआत इस मास से मानी जाती है। कृषि और किसान के लिए यह मास बहुत महत्वपूर्ण है। यह खरीफ फसलों की बुवाई का समय है।

आषाढ़ मास की पूर्णिमा के दिन ही जीवन को सही राह दिखाने वाले गुरु को समर्पित गुरु पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा का पर्व भी मनाया जाता है। आषाढ़ माह में तंत्र और शक्ति उपासना के लिए 'गुप्त' नवरात्र भी मनाए जाते हैं। इस मास में विष्णु के साथ ही जल देवता वरुण की उपासना का भी विशेष महत्व है।

जीवन में ऊर्जा बनी रहे, इसलिए ऊर्जा के प्रतीक सूर्य और मंगल की उपासना का इस मास में विशेष महत्व है।

अश्वनी कुमार

धार्मिक कार्यों में शंखनाद करना जरूरी

आस्था-अनास्था
डॉ. प्रकाशचंद्र गंगराड़े

धार्मिक कार्यों में शंख बजाने की परंपरा क्यों? –श्रुतकीर्ति, मेरठ

पूजा-पाठ, उत्सव, हवन, विजयोत्सव, आगमन, विवाह, राज्याभिषेक आदि शुभ कार्यों में शंख बजाना शुभ और अनिवार्य माना जाता है। मंदिरों में सुबह और शाम के समय आरती में शंख बजाने का विधान है। शंखनाद के बिना पूजा-अर्चना अधूरी मानी जाती है।

अथर्ववेद के चौथे कांड के दसवें सूक्त में स्पष्ट कहा गया है- 'शंख अंतरिक्ष, वायु, ज्योतिर्मंडल एवं सुवर्ण से संयुक्त है। इसकी ध्वनि शत्रुओं को निर्बल करने वाली होती है। यह हमारा रक्षक है। यह राक्षसों और पिशाचों को वशीभूत करने वाला, अज्ञान, रोग एवं दरिद्रता को दूर भगाने वाला तथा आयु बढ़ाने वाला है।' शास्त्रकार कहते हैं-

यस्य शंखध्वनिं कुर्यात्पूजाकाले विशेषतः।
विमुक्तः सर्वपापेन विष्णुना सह मोदते॥
(स्कंद पुराण)

अर्थात पूजा के समय जो व्यक्ति शंख ध्वनि करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और वह भगवान विष्णु के साथ आनंद (मोक्ष) पाता है।

वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु ने अपने यंत्रों के माध्यम से यह खोज लिया था कि एक बार शंख फूंकने से उसकी ध्वनि जहां तक जाती है, वहां तक के अनेक बीमारियों के कीटाणु ध्वनि स्पंदन से निष्क्रिय या नष्ट हो जाते हैं।

शंख में जल भरकर पूजा स्थान में रखा जाना और पूजा-पाठ, अनुष्ठान होने के बाद श्रद्धालुओं पर उस जल को छिड़कने के पीछे मान्यता यह है कि इसमें कीटाणुनाशक शक्ति होती है और शंख में जो गंधक, फासफोरस और कैल्शियम की मात्रा होती है, उसके अंश भी जल में आ जाते हैं। शंख के जल को छिड़कने और पीने से स्वास्थ्य सुधरता है।

(साभार : 'हिंदुओं के रीति-रिवाज तथा मान्यताएं', पुस्तक महल, दिल्ली)

भेजें अपने सवाल

स्वर्ग-नरक की कल्पना का आधार क्या है?
पाप क्या है, पुण्य क्या है? धर्म क्या है, अधर्म क्या है? ईश्वर की आराधना कैसे करें? ऐसे सवाल अकसर हमारे मन में उठते हैं, पर इनका जवाब हमारे पास नहीं होता। मन–मस्तिष्क में आने वाले ऐसे ही सवालों के जवाब हमारे पैनल में शामिल धर्माचार्य आपको देंगे।

अपने सवाल हमें इस पते पर भेजें : धर्मक्षेत्र, हिन्दुस्तान, 11वां तल, द आइकॉन टॉवर, एफ सी–24 सी, फिल्म सिटी, सेक्टर–16ए, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर–201301 (उत्तर प्रदेश)

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : मन अशांत रहेगा। धैर्यशीलता बनाए रखें। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। खर्चों में वृद्धि होगी। वाहन सुख में वृद्धि हो सकती है।

वृष : धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। जीवनसाथी का साथ मिलेगा। नौकरी में कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन : नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। अफसरों का सहयोग मिलेगा, परंतु कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। सेहत का ध्यान रखें।

कर्क : आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी। परिवार का साथ मिलेगा।

सिंह : आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। पिता व जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। शैक्षिक कार्यों में कठिनाई आ सकती है। सचेत रहें।

कन्या : मन में नकारात्मक विचारों से बचें। कारोबार में सुस्ती तो हो सकती है, फिर भी लाभ के अवसर मिल सकते हैं। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

तुला : मन परेशान हो सकता है। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। पिता व मित्रों का सहयोग मिल सकता है। कारोबार के लिए यात्रा पर जा सकते हैं।

वृश्चिक : धर्म के प्रति श्रद्धा भाव बढ़ सकता है। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में वृद्धि हो सकती है।

धनु : मन परेशान हो सकता है। शैक्षिक कार्यों में कठिनाई आ सकती है। सचेत रहें। नौकरी में बदलाव के साथ तरक्की के अवसर मिल सकते हैं।

मकर : मन परेशान हो सकता है। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी।

कुंभ : कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं। किसी दूसरे स्थान पर भी जा सकते हैं। पिता का साथ मिलेगा। यात्रा पर भी जा सकते हैं। सेहत का ध्यान रखें।

मीन : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। कला व संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। कारोबार के लिए यात्रा लाभप्रद रहेगी।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

30 जून, मंगलवार, **शक संवत्** : 09 आषाढ़ (सौर) 1948, **पंजाब पंचांग** : 16 आषाढ़ मास प्रविष्टे 2083, **इस्लाम** : 14 मोहर्रम, 1448, **विक्रमी संवत्** : आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा (दिन–रात), पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र (दिन–रात), ब्रह्म योग अपराह्न 03.19 मिनट तक पश्चात ऐंद्र योग, बालव करण। चंद्रमा धनु राशि में (दिन–रात)।

सूर्य उत्तरायण। सूर्य उत्तर गोल। ग्रीष्म ऋतु। अपराह्न 03 बजे से सायं 04.30 मिनट तक राहुकालम्। आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारंभ।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

अपनी आदतें सुधार कर भी पा सकते हैं लाभ :

- खाना खाने के बाद कभी भी थाली में हाथ न धोएं। रसोई की सिंक में कभी भी कुल्ला नहीं करें, न जूठे हाथ धोएं। ऐसा करना बरकत को खत्म करता है।
- सुबह उठकर सबसे पहले अपना बिस्तर व्यवस्थित करें। इससे आपकी जिंदगी व्यवस्थित होने लगेगी। रात को बाहर से आकर कभी भी अपने कपड़े उल्टे करके न रखें।
- जूते–चप्पल खुले में नहीं होने चाहिए। यदि हों भी, तो उन्हें इधर–उधर फैलाकर न रखें।
- यदि मंदिर जाने की आदत हो, तो कभी भी खाली हाथ नहीं जाना चाहिए।
- घर की दहलीज पर खड़े होकर लेन–देन नहीं करना चाहिए।

वर्ग पहेली : 8375

1		2		■	3	4		
	■		■	5	■		■	■
6			■	7			■	8
	■		■		■	9		
	■	■	10			■	■	
11		12	■		■	13	■	
	■	14			■	15		
■	■		■		■		■	
16				■	17			

बाएं से दाएं

1. ऊपर से टपकना; पानी गिरना; मेह पड़ना (4)
3. तेजी से आगे बढ़ना; झपटना; पकड़ना (4)
6. जताने वाला; बोध कराने वाला; सूचक (3)
7. घिसना; धीरे-धीरे मसलना; रगड़ना; मालिश करना (3)
9. उपकरण; कल; यंत्र (3)
10. चकले पर रोटी बनाना; पतला करना; पोना; बेलाई करना; चौपट करना; नष्ट करना (3)
11. उमंग; हिलोर; तरंग; मौज (3)
14. केंद्रीय; मुख्य; प्रधान; सभापति (3)
15. अघ; गिराने वाला; गुनाह; पाप (3)
16. अमृत; गंगा नदी का पवित्र जल (4)
17. रंधवाना; तैयार करवाना; परिपक्व कराना (4)

ऊपर से नीचे

1. दूसरों को अपमानित करने वाली बात कहना; बड़ी-बड़ी बातें बघारना; बढ़-बढ़ कर बोलना (2,2,3)
2. समान; बराबर; तुल्य (4)
4. किसी अधिकारी के पद का सूचक (4)
5. एक समान सतह करना; तल बराबर करना; सपाट बनाना (4,3)
8. अपने मन के अनुकूल करना; मन के अनुकूल कार्य करना; मनचाही करना (4,3)
12. पारा; श्रृंगार रस; रसौत; रसांजन (4)
13. आराधक; उपासना करने वाला; पूजक; भक्त (4)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8374

1 सी	धा	2 क	र	ना	■	3 पा	■	4 कू
ना	■	ल	■	■	5 क	र	क	ट
6 ता	ली	म	■	7 बा	■	ल	■	कू
न	■	■	8 वा	त	रो	ग	■	ट
9 क	सू	10 र	■	क	■	11 ना	ट	क
र	■	12 ग	ह	रा	ना	■	■	र
च	■	ड़	■	ना	■	13 आ	रं	भ
14 ल	ड़	वा	ना	■	■	व	■	र
ना	■	ना	■	15 मां	ग	क	र	ना

सुडोकू : 8336

* आसान

		8	9		3	4		
		4	2		5	3		
5								6
	1		7		9		2	
2				1				3
	3		6		2		4	
3								7
		2	3		8	1		
		1	4		7	5		

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3×3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8335

7	4	6	2	9	3	8	5	1
8	3	9	5	4	1	7	6	2
5	2	1	7	8	6	3	4	9
2	5	4	6	7	8	1	9	3
1	6	3	9	2	4	5	7	8
9	7	8	3	1	5	4	2	6
4	8	2	1	5	9	6	3	7
6	1	7	4	3	2	9	8	5
3	9	5	8	6	7	2	1	4

कल्पमेधा

हम कभी भी साहसी और सहनशील होना नहीं सीख सकते, अगर जीवन में सिर्फ खुशियां ही हों।

– हेलेन केलर

भ्रष्टाचार का रोग

आमतौर पर सभी सरकारें जनता के स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं पर सबसे ज्यादा ध्यान देने का भरोसा देती हैं, लेकिन इस महकमे में पसरी अव्यवस्था और लोगों को होने वाली असुविधाओं के वास्तविक कारणों को दूर करने को लेकर शायद ही कभी संजीदा होती हैं। दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में दवाओं और चिकित्सा उपकरणों में जिस तरह के घोटाले का खुलासा हुआ, उससे एक बार फिर यही पता चलता है कि सरकारों के लिए आम नागरिकों को एक सुव्यवस्थित और पारदर्शी स्वास्थ्य तंत्र मुहैया कराने का मुद्दा किस हद तक उपेक्षित है। गौरतलब है कि दिल्ली के स्वास्थ्य विभाग में दवाओं, शल्य चिकित्सा संबंधी सामग्री सहित अन्य उपकरणों की खरीद में कुछ समय पहले करीब साढ़े छह सौ करोड़ रुपए का घोटाला उजागर हुआ। अब इसी मामले की छानबीन के क्रम में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने रविवार को दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य विभाग के दो पूर्व अधिकारियों को गिरफ्तार किया है। आरोपों के मुताबिक, स्वास्थ्य सेवाओं की पूर्व महानिदेशक के अधीन संचालित केंद्रीय खरीद एजंसी के जरिए शल्य चिकित्सा से जुड़े उपकरणों और अन्य चिकित्सा सामग्री की खरीद में बड़े पैमाने पर अनियमितता बरती गई।

इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि जिन अस्पतालों पर एक बड़ी आबादी अपनी बीमारियों के इलाज से लेकर आपात स्थिति में जान बचाने तक के लिए निर्भर होती है, उसे संचालित करने वाले अधिकारी खुद भ्रष्टाचार में लिप्त पाए जा रहे हैं। यह छिपा तथ्य नहीं है कि सरकारी अस्पतालों में इलाज के लिए आमतौर पर समाज का वही तबका जाता है, जो निजी अस्पतालों में महंगे इलाज का खर्च वहन नहीं कर पाता है। सरकारी अस्पतालों में इलाज के क्रम में अक्सर मरीजों को चिकित्सा सामग्री की कमी का सामना करना पड़ता है, उनके परिजनों को अपने पैसे से दवा या अन्य चिकित्सा उपकरण बाहर से खरीदने पड़ते हैं। जबकि सामान्य स्थितियों में अस्पतालों में मरीजों के इलाज के लिए दवाओं से लेकर अन्य चिकित्सा सामग्री सरकार की ओर से मुहैया कराई जाती है। मगर जब संसाधनों की खरीद से जुड़े अधिकारी ही दवा और अन्य जरूरी उपकरणों की खरीद को निजी कमाई और भ्रष्टाचार का जरिया बना लें, तो मरीजों के प्रति उनकी संवेदनहीनता का अंदाजा लगाया जा सकता है।

सवाल है कि इस स्तर का भ्रष्टाचार लंबे समय तक कैसे जारी रह पाता है और सरकार के तहत काम करने वाली भ्रष्टाचार निरोधक एजंसी तथा अन्य निगरानी तंत्र क्या कर रहे होते हैं। देश की राजधानी होने के नाते उम्मीद की जाती है कि दिल्ली में शासन-तंत्र अपेक्षया बेहतर तरीके से काम करता होगा और किसी भी महकमे में भ्रष्टाचार को रोकने को लेकर ज्यादा चौकस होगा। मगर अलग-अलग विभागों में अक्सर जिस तरह की अनियमितताएं सामने आती रही हैं, उससे साफ है कि यहां भी अन्य जगहों की तरह ही भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों को समय पर रोक पाना एक मुश्किल काम है। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि स्वास्थ्य महकमे में होने वाला घोटाला सीधे-सीधे आम जनता की सेहत और जीवन से जुड़ा मसला है। स्थानीय स्तर पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से लेकर बड़े अस्पतालों तक में चिकित्सा संसाधनों के अभाव के मामले जगजाहिर रहे हैं। साधारण और गरीब तबकों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराने के बजाय अस्पतालों में जारी भ्रष्टाचार पर अगर रोक नहीं लग पा रही है, तो सरकार के जनहित में व्यापक कल्याण कार्यक्रम संचालित करने के दावों को कैसे देखा जाएगा?

समझौते पर संकट

पश्चिम एशिया में युद्ध समाप्त करने को लेकर हुए प्रारंभिक समझौते से यह माना जा रहा था कि क्षेत्र में शांति कायम करने का स्थायी हल निकाल लिया जाएगा और वैश्विक स्तर पर पैदा हुए ऊर्जा संकट से भी राहत मिलेगी। मगर अमेरिका और ईरान के फिर तल्ख होते तेवर से अब इस समझौते पर ही संकट के बादल मंडराने लगे हैं। अमेरिका के हवाई हमलों के जवाब में ईरान ने बीते रविवार को बहरीन और कुवैत में कई स्थानों को ड्रोन एवं मिसाइलों से निशाना बनाया। हालांकि, अमेरिका की ओर से कहा जा रहा है कि ताजा घटनाक्रम का द्विपक्षीय बातचीत पर कोई असर नहीं पड़ेगा, लेकिन ईरान ने साफ शब्दों में चेतावनी दी है कि यदि उसके क्षेत्र में हमले जारी रहे, तो युद्ध खत्म करने के लिए जारी वार्ता पूरी तरह रोकी जा सकती है। यह विचित्र है कि एक तरफ दोनों देशों ने समझौते को स्थायी रूप से लागू करने के लिए शांति वार्ता को लेकर प्रतिबद्धता जताई है और इस बीच वार-पलटवार का सिलसिला भी जारी है।

मौजूदा हालात में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि अमेरिका और ईरान इस समझौते को लेकर वास्तव में गंभीर हैं भी या नहीं? यह आशंका इसलिए गहरा रही है, क्योंकि दोनों देशों की ओर से समझौते के नियमों का पालन करने को लेकर कोई संजीदगी नजर नहीं आती है। हमले और वार्ता दोनों साथ-साथ कैसे चल सकते हैं? और अगर ऐसा होता भी है, तो जाहिर है कि कोई सकारात्मक परिणाम सामने आने की गुंजाइश बेहद कम होगी। अमेरिका के रुख के बाद ईरान की ओर से बहरीन और कुवैत पर ये हमले ऐसे समय हुए, जब अमेरिकी नौसेना की निगरानी में काम करने वाली एक बहुराष्ट्रीय समुद्री संस्था ने बीते शनिवार को कहा कि होर्मुज जलमार्ग में ओमान के पास स्थित एक मार्ग का विस्तार किया जाएगा, ताकि उससे खाड़ी में प्रवेश करने और बाहर जाने वाले पोतों की आवाजाही आसान हो सके। इस कदम से अमेरिका और ईरान के बीच टकराव का एक नया मोर्चा खुल सकता है, क्योंकि ईरान इस महत्त्वपूर्ण जलमार्ग से जहाजों की आवाजाही पर अपना पूरा नियंत्रण बनाए रखना चाहता है।

वेनेजुएला में भूकम्प का सबक

वेनेजुएला में हाल में आए भूकम्प से बड़े पैमाने पर जानमाल का नुकसान हुआ है। यह त्रासदी भारत समेत उन तमाम देशों के लिए एक सबक है, जो भूकम्प की दृष्टि से संवेदनशील हैं।

पुष्परंजन

वेनेजुएला में हाल में आए भूकम्प के 7.2 और 7.5 तीव्रता वाले दो झटकों से वहां बड़े पैमाने पर जान-माल का नुकसान हुआ है। सैकड़ों लोगों की मौत हो गई और हजारों लोग अब भी लापता हैं। भूकम्प के बाद वहां शुरुआती माहौल घबराहट और दुख का था, लेकिन अब सरकार की ओर से त्वरित मदद को लेकर लोगों में निराशा और गुस्सा बढ़ रहा है। मौजूदा सरकार के कार्यकाल में यह आपदा अब तक की सबसे बड़ी चुनौती है। जैसे-जैसे मरने वालों की संख्या बढ़ रही है, लोगों में डर और सरकार के प्रति नाराजगी भी बढ़ती जा रही है। भूकम्प के कुछ घंटों बाद सरकार ने आपात स्थिति की घोषणा की और हालात से निपटने के लिए दुनिया से मदद की अपील की। भारत ने भी तुरंत मदद का हाथ आगे बढ़ाते हुए विशेष अभियान की घोषणा की, जिसके तहत राहत कार्यों में सहयोग के लिए जरूरी मानवीय मदद लेकर वायुसेना के दो सी-17 विमान वेनेजुएला के लिए रवाना हुए। यह त्रासदी भारत समेत उन तमाम देशों के लिए एक सबक है, जो भूकम्प की दृष्टि से संवेदनशील हैं। विदेश मंत्री जयशंकर ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि वेनेजुएला में भूकम्प पीड़ितों की मदद के लिए शुरू किए गए अभियान में भारतीय सेना की एक सचल अस्पताल इकाई, पैंतीस टन से ज्यादा राहत सामग्री, जिनमें दवाइयां और चिकित्सा उपकरण भी शामिल हैं।

अधिकारिक जानकारी के मुताबिक, वेनेजुएला में आए भूकम्प के दो झटकों से राजधानी काराकस में कई इमारतें गिर गईं और लोगों के बीच हाहाकार मच गया। भूकम्प का प्रभाव कई क्षेत्रों में महसूस किया गया और बड़े पैमाने पर जानमाल का नुकसान हुआ। वहां की कार्यकारी राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिग्स का कहना है कि बचाव अभियान अभी जारी है और मलबे के नीचे दबे लोगों की तलाश की जा रही है। वहां भूकम्प प्रभावित इलाकों में व्यवस्था को संभालने के लिए सेना को तैनात किया गया है। जो लोग भी इन इलाकों में जाना चाहते हैं, उन्हें काराकास में अपना पंजीकरण कराना पड़ता है। मीडिया कर्मियों को भी इलाके में तभी जाने दिया जाता है, जब उन्हें सरकारी बसों में ले जाया जाए। गौरतलब है कि वेनेजुएला में मादुरो को हटाने के बाद रोड्रिग्स को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सहमति से वेनेजुएला की कमान सौंपी गई थी।

एमहर्स्ट कालेज के राजनीतिक विज्ञानी खाबियर कोरालेस के मुताबिक वेनेजुएला में इस प्राकृतिक आपदा का ज्यादा असर सिर्फ भूकम्प की तीव्रता की वजह से ही नहीं, बल्कि जमीन पर खराब हालात की वजह से भी पड़ा है। पिछले पच्चीस वर्षों से वेनेजुएला पर सोशलिस्ट राष्ट्रपति का शासन रहा है, चाहे वह रोड्रिग्स हों, मादुरो हों या शावेज। मगर भूकम्प के बाद विपक्ष की नेता मारिया कोरिना मचाडो वेनेजुएला लौटने की कोशिश कर रही हैं, जिन्हें दिसंबर में नोबेल शांति पुरस्कार लेने के लिए विदेश ले जाया गया था। मचाडो को भविष्य में राष्ट्रपति पद के लिए संभावित उम्मीदवारों में एक प्रमुख चेहरा माना जाता है।

वेनेजुएला में भाई-भतीजावाद और उपभोक्तावाद की समस्या भारत की तरह ही है। यह तरीका रोड्रिग्स की चुनावी मुकाबले की ताकत बढ़ा सकता है। वेनेजुएला के विपक्ष की तरफ से स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों की बढ़ती मांगों के

बावजूद, रोड्रिग्स ने अब तक इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई है कि चुनाव कब होंगे, या उन्हें कैसे आयोजित किया जाएगा। मगर कुछ विश्लेषकों का तर्क है कि रोड्रिग्स भूकम्प की त्रासदी का इस्तेमाल अपनी राजनीतिक स्थिति मजबूत करने के लिए कर सकती हैं। वेनेजुएला को दुनिया भर से भूकम्प राहत

> **भारत में भले ही सरकारी कागजों में बहुमंजिला इमारतों के निर्माण में भूकम्प-रोधी तकनीक के महत्त्व को रेखांकित किया गया है, लेकिन जमीनी स्तर पर इसे लागू करने में कोई गंभीरता नजर नहीं आती है। देश भर में बहुत कम निर्माण ऐसे होंगे, जिनमें भूकम्प-रोधी तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। यहां तक कि सरकारी निर्माण कार्यों में भी इस तकनीक के इस्तेमाल की निगरानी का अभाव साफ नजर आता है। ऐसे में जरूरी है कि इस मामले में हर स्तर पर जिम्मेदारी और गंभीरता दिखाई जाए। यही नहीं, भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदा के बाद के हालात से निपटने के लिए भी माकूल ढांचा विकसित करना होगा, ताकि प्रभावित लोगों के जीवन को फिर से पटरी पर लाया जा सके।**

के तौर पर बड़ी रकम मिल सकती है और रोड्रिग्स इसे अंतरराष्ट्रीय संबंधों में अपनी कुशलता के तौर पर प्रस्तुत कर सकती हैं। वेनेजुएला की मौजूदा सरकार वही कर सकती है, जो वह करती आई है। अंतरराष्ट्रीय मदद के जरिए मिली रकम का एक बड़ा हिस्सा भूकम्प पीड़ितों के बजाय अमीरों और जनता के एक खास वर्ग को अपने साथ जोड़ने के लिए खर्च कर दिया जाए, तो हैरानी की बात नहीं होगी।

पिछले दिनों वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिग्स भारत के दौरे पर आईं थीं। इस दौरान भारत और वेनेजुएला के बीच ऊर्जा, व्यापार, निवेश एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग के संकल्प किए गए थे। अब वेनेजुएला में आए भीषण भूकम्प के बाद भारत ने मदद का हाथ बढ़ाया है। मगर सवाल है कि क्या भारत इस प्राकृतिक आपदा में बड़े पैमाने पर हुए नुकसान से कोई सबक लेगा? इसमें दोराय नहीं कि भारत को अपनी भूकम्प-रोधी निर्माण क्षमता को सुधारने, कमजोर इमारतों की पहचान करने और आपदा राहत के लिए स्वदेशी सचल अस्पताल प्रणाली को हर समय तैयार रखने की जरूरत है। देश का लगभग 59 फीसद भू-भाग भूकम्प की लिहाज से संवेदनशील माना जाता है। दिल्ली-एनसीआर जैसे घने और अधिक आबादी वाले शहरों में बहुत सारी इमारतें तीव्र भूकम्प झेलने में सक्षम नहीं हैं। देश में कमजोर इमारतों की तुरंत पहचान कर उन्हें मजबूत करना होगा और नए निर्माणों में भूकम्प-रोधी नियमों का सख्ती से पालन सुनिश्चित करना होगा।

देश में भले ही सरकारी कागजों में बहुमंजिला इमारतों के निर्माण में भूकम्प-रोधी तकनीक के महत्त्व को रेखांकित किया गया है, लेकिन जमीनी स्तर पर इसे लागू करने में कोई गंभीरता नजर नहीं आती है। देश भर में बहुत कम निर्माण ऐसे होंगे, जिनमें भूकम्प-रोधी तकनीक का इस्तेमाल किया गया हो। यहां तक कि सरकारी निर्माण कार्यों में भी इस तकनीक के इस्तेमाल की निगरानी का अभाव साफ नजर आता है। ऐसे में जरूरी है कि इस मामले में हर स्तर पर जिम्मेदारी और गंभीरता दिखाई जाए। यही नहीं, भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदा के बाद के हालात से निपटने के लिए भी माकूल तैयारी करनी होगी। युद्ध स्तर पर बचाव कार्य और पुनर्वास कार्यक्रमों का एक व्यापक ढांचा विकसित करना होगा, ताकि प्रभावित लोगों के जीवन को फिर से पटरी पर लाया जा सके।

हाल के दिनों में भारत के लिए वेनेजुएला कच्चे तेल का एक महत्त्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता बन गया था। मगर भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदा के कारण बंदरगाहों के बाधित होने और जहाजों की आवाजाही में देरी से भारत के ऊर्जा आयात पर असर पड़ सकता है। ऐसे में भविष्य में संभावित आपदाओं को ध्यान में रखकर भारत को अपने कच्चे तेल के स्रोतों में और अधिक विविधता लाने की आवश्यकता है। वेनेजुएला में भूकम्प की कम गहराई और कोई पूर्व चेतावनी प्रणाली न होने की वजह से भी जानमाल का भारी नुकसान हुआ है। इसलिए भारत को उन्नत 'अर्ली वार्निंग सेंसर नेटवर्क' (शीघ्र चेतावनी तंत्र) और एनडीआरएफ की त्वरित तैनाती की क्षमता को और मजबूत करना होगा। देश में ऐसे संकटों से निपटने के लिए चिकित्सा और आपदा प्रबंधन क्षमता को भी बढ़ाने की जरूरत है। साथ ही सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नए बनने वाले घर, स्कूल, अस्पताल और सरकारी इमारतें अनिवार्य रूप से भूकम्परोधी हों। बड़े शहरों और कस्बों में असुरक्षित एवं अनियोजित निर्माण पर प्रभावी तरीके से रोक लगाने की जरूरत है। इसके अलावा आपातकालीन स्थिति के लिए सुरक्षित स्थानों पर भोजन, दवाइयां और अन्य जरूरी राहत सामग्री का पर्याप्त भंडार बनाए रखना भी बेहद आवश्यक है।

अहं की दीवारें

सुप्रिया सत्यार्थी

आज का समय तकनीक, सुविधा और तीव्र गति का समय है। मनुष्य पहले से अधिक जुड़ा हुआ दिखाई देता है, लेकिन भीतर से उतना ही अकेला भी होता जा रहा है। मोबाइल की स्क्रीन पर हजारों संपर्क हैं, लेकिन दिलों के बीच संवाद का पुल कमजोर पड़ता जा रहा है। रिश्ते बन तो जल्दी जाते हैं, पर टिक नहीं पाते। इसका सबसे बड़ा कारण केवल परिस्थितियां नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर बढ़ता हुआ 'सिर्फ मैं' का भाव है। यही 'मैं' आज रिश्तों की जड़ों को भीतर ही भीतर खोखला कर रहा है। जहां प्रेम में साझेदारी के सरोकार के भाव वाले 'हम' का विस्तार होना चाहिए था, वहां अहंकार ने 'सिर्फ मैं' की ऊंची दीवारें खड़ी कर दी हैं। नतीजतन, रिश्ते अब संवेदनाओं के नहीं, बल्कि अपेक्षाओं और स्वार्थों के केंद्र बनते जा रहे हैं।

रिश्तों का आधार हमेशा से विश्वास, त्याग, धैर्य और संवाद रहा है। जब दो लोग एक-दूसरे से जुड़ते हैं, तब वे भावनाओं से भी जुड़ते हैं। मगर आज लोग अपनी इच्छाओं, अपने विचारों और अपनी सुविधाओं को इतना अधिक महत्त्व देने लगे हैं कि उनके पास दूसरों की भावनाओं को समझने का समय ही नहीं बचा। हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी बात सुनी जाए, भावनाओं को समझा जाए, उसके अनुसार व्यवहार किया जाए, लेकिन वही व्यक्ति दूसरे को सुनने और समझने की जिम्मेदारी से बचता दिखता है। यह असंतुलन रिश्तों में दरार पैदा करता है।

दुनिया मेरे आगे

> **संयुक्त परिवारों में कभी सहनशीलता, सामूहिकता और त्याग की भावना अधिक होती थी। लोग एक-दूसरे की कमियों को स्वीकार कर लेते थे। अब छोटी-छोटी असहमतियां भी बड़े विवाद का रूप ले लेती हैं। जहां केवल अधिकारों की मांग होती है और कर्तव्यों की उपेक्षा, वहां संबंध अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकते।**

दरअसल, प्रतिस्पर्धा और सफलता की अंधी दौड़ ने मनुष्य को अत्यधिक आत्मकेंद्रित बना दिया है। वह हर संबंध को लाभ और हानि की दृष्टि से देखने लगा है। रिश्ते अब भावनात्मक सहारे की जगह सामाजिक प्रदर्शन का माध्यम बनने लगे हैं। सोशल मीडिया ने इस प्रवृत्ति को और बढ़ाया है। एक आभासी चमक ने मनुष्य के भीतर तुलना और अहंकार को जन्म दिया है। जबकि अहंकार किसी भी रिश्ते का सबसे बड़ा शत्रु होता है। यह मनुष्य को झुकने नहीं देता, माफी नहीं मांगने नहीं देता और अपनी गलती स्वीकार करने का साहस भी नहीं देता। छोटी-छोटी बातों पर रिश्ते टूट जाते हैं, क्योंकि कोई भी व्यक्ति पहला कदम पीछे नहीं लेना चाहता। पति-पत्नी, माता-पिता और संतान, मित्र या भाई-बहन- हर संबंध में यह समस्या दिखाई देती है। संवाद की जगह विवाद ने ले ली है। लोग सुनते कम हैं और अपनी बात मनवाने का प्रयास अधिक करते हैं। जबकि हर व्यक्ति की सोच, अनुभव और दृष्टिकोण अलग होता है। अगर हम केवल अपनी दृष्टि को ही अंतिम सत्य मान लेंगे, तो रिश्तों में सामंजस्य कभी संभव नहीं हो सकेगा। भारतीय दर्शन में 'अनेकांतवाद' की अवधारणा सिखाती है कि सत्य केवल एक पक्ष में सीमित नहीं होता, बल्कि उसके अनेक आयाम हो सकते हैं। अगर हम यह स्वीकार कर लें कि सामने वाला व्यक्ति भी अपनी जगह सही हो सकता है, तो अधिकांश मतभेद अपने आप समाप्त हो जाएंगे। यह समझ आवश्यक है कि हर विवाद में जीतना जरूरी नहीं होता। जो व्यक्ति झुकना जानता है, वही वास्तव में संबंधों को सहेज सकता है।

संयुक्त परिवारों में कभी सहनशीलता, सामूहिकता और त्याग की भावना अधिक होती थी। लोग एक-दूसरे की कमियों को स्वीकार कर लेते थे। अब छोटी-छोटी असहमतियां भी बड़े विवाद का रूप ले लेती हैं। जहां केवल अधिकारों की मांग होती है और कर्तव्यों की उपेक्षा, वहां संबंध अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकते। मनुष्य अब भावनाओं को समझने के बजाय तर्कों में उलझ गया है। वह हर बात का उत्तर चाहता है, हर व्यवहार का हिसाब चाहता है। जबकि प्रेम और अपनापन गणित के नियमों से नहीं चलते। रिश्तों में कभी-कभी मौन भी संवाद होता है और त्याग भी प्रेम की अभिव्यक्ति। मगर आज व्यक्ति की अपेक्षाएं पूरी नहीं होतीं, तो वह तुरंत दूरी बना लेता है।

वास्तव में झुकना हर बार कमजोरी नहीं, बल्कि परिपक्वता का भी प्रतीक है। जो वृक्ष फल से लदे होते हैं, वे झुक जाते हैं। उसी प्रकार जो व्यक्ति भीतर से मजबूत और संवेदनशील होता है, वही रिश्तों के लिए अपने अहं को त्याग सकता है। जीवन में हर जगह स्वयं को साबित करना आवश्यक नहीं होता। कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं, जहां जीतने से अधिक महत्त्वपूर्ण उन्हें बचाए रखना होता है। अगर हर व्यक्ति केवल अपनी जीत चाहता रहेगा, तो आखिर हार रिश्तों की ही होगी। जब लोग खुलकर अपनी भावनाएं साझा करते हैं, तब गलतफहमियों की गुंजाइश कम हो जाती है। मगर संवाद केवल बोलने का नाम नहीं है। सुनना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। आज अधिकांश लोग सुनते नहीं, केवल उत्तर देने की प्रतीक्षा करते हैं। यही कारण है कि लोग साथ रहते हुए भी एक-दूसरे को समझ नहीं पाते। अगर हम धैर्यपूर्वक सामने वाले की बात सुनें, उसकी परिस्थितियों और भावनाओं को समझने का प्रयास करें, तो अनेक समस्याएं खत्म हो सकती हैं।

दरअसल, अत्यधिक अपेक्षाएं संबंधों को बोझ बना देती हैं। प्रेम तब सुंदर होता है जब उसमें स्वतंत्रता और विश्वास हो। अगर हर समय सामने वाले से पूर्णता की आशा की जाएगी, तो निराशा ही हाथ लगेगी। मनुष्य अपूर्ण है और यही अपूर्णता उसे मानवीय बनाती है। रिश्तों की खूबसूरती इसी में है कि हम एक-दूसरे की कमियों के साथ भी एक-दूसरे को स्वीकार करें। रिश्तों में 'सिर्फ मैं' का अत्यधिक विस्तार मनुष्य को भीतर से अकेला बना रहा है। अगर हमें अपने संबंधों को बचाना है, तो 'मैं' से 'हम' की यात्रा करनी होगी। हमें यह समझना होगा कि रिश्ते तर्क से नहीं, संवेदना से चलते हैं। वहां अहंकार नहीं, अपनापन काम आता है। संसार में सबसे सुंदर अनुभव किसी पर अधिकार जमाने में नहीं, बल्कि किसी के साथ आत्मीयता से जुड़ने में है।

सुरक्षा और जवाबदेही

किसी भी दुर्घटना के बाद दोषियों की पहचान करना और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकना सरकार का दायित्व है। मगर बीते कुछ दिनों में देश के विभिन्न शहरों में हुई घटनाओं के बाद जिस तरह की सरकारी प्रतिक्रिया सामने आई है, उसने सुरक्षा और जवाबदेही के वास्तविक अर्थ पर नई बहस छेड़ दी है। ऐसा लगता है कि हर बड़ी दुर्घटना के बाद सबसे आसान रास्ता कार्रवाई और सुरक्षा मानकों के नाम पर किसी को भी कठघरे में खड़ा कर देना बन गया है। सुरक्षा की आवश्यकता से किसी को असहमति नहीं हो सकती, परंतु चयनात्मक और तात्कालिक कार्रवाई न्याय का विकल्प नहीं हो सकती। सुरक्षा मानकों का कठोर पालन होना चाहिए, लेकिन वह नियमित, पारदर्शी और समान रूप से लागू हो, न कि किसी हादसे के बाद जन आक्रोश शांत करने का औजार बने। जवाबदेह शासन वही है जो दुर्घटना होने से पहले जोखिमों को पहचान कर उन्हें दूर करे। यदि हर त्रासदी के बाद केवल नए अभियान शुरू होते रहें और व्यवस्था अपनी पुरानी गलती पर मौन रहे, तो यह सुरक्षा नहीं, बल्कि जवाबदेही से बचने की संस्कृति को मजबूत करेगा।

– मो अजहर आलम अंसारी, पूर्णिया

समाधान की राह

इस बार की भीषण गर्मी और गहराते जल संकट ने हम सभी को प्रकृति की चेतावनी के बारे में बता दिया है। पानी की बूंद-बूंद के लिए मची हाहाकार इस बात का स्पष्ट संकेत है कि अब हमें अपनी आदतों को बदलना होगा। जब तक मानसून की भरपूर बारिश से हमारे जल स्रोत पूरी तरह भर नहीं जाते, तब तक इस समस्या से राहत मिलना संभव नहीं है, लेकिन इस आपदा को हमें एक बड़े बदलाव के अवसर के रूप में देखना चाहिए। आने वाले वर्षों में इस भयावह त्रासदी से मुक्ति पाने का एकमात्र रास्ता जल संरक्षण और पानी का विवेकपूर्ण उपयोग ही है। हमें वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देकर अपने पारंपरिक जल स्रोतों को जीवित करने में गंभीरता दिखानी होगी। पानी की बर्बादी रोक कर और प्रकृति के साथ तालमेल बैठा कर ही हम आने वाली पीढ़ियों को पानी के इस बड़े संकट से बचा सकते हैं। इसके लिए न केवल सरकार को, बल्कि समाज को भी आगे आना होगा।

– अमृतलाल मारू 'रवि', इंदौर

निर्णायक मोड़ पर

पंजाब की राजनीति एक बार फिर निर्णायक मोड़ पर है। वर्ष 2022 में ऐतिहासिक बहुमत के साथ सत्ता में आई आम आदमी पार्टी अब सत्ता विरोधी माहौल, धार्मिक विवादों, कानून-व्यवस्था की चुनौतियों और नशे के बढ़ते कारोबार जैसे गंभीर मुद्दों से जूझ रही है। सरकार महिलाओं को केंद्र में रख कर नई योजनाओं के माध्यम से जनसमर्थन बनाए रखने की कोशिश कर रही है, लेकिन हाल के राजनीतिक और धार्मिक विवादों ने उसकी मुश्किलें बढ़ा दी हैं। मुख्यमंत्री भगवंत मान कई विवादों के कारण विपक्ष के निशाने पर रहे हैं। दूसरी ओर कांग्रेस अपने बिखरे संगठन को एकजुट कर सत्ता में वापसी की उम्मीद देख रही है, जबकि भारतीय जनता पार्टी पहली बार पंजाब में मजबूत दावेदारी पेश करने की तैयारी कर रही है। पंजाब में क्षेत्रीय अस्मिता, किसान आंदोलन, सीमावर्ती सुरक्षा और सिख राजनीति का गहरा प्रभाव रहा है। आज सबसे बड़ी चुनौती जनता के भरोसे को बनाए रखने की है।

– कांतिलाल मांडोत, लखनऊ

राह के कांटे

'शुल्क पर सवाल' (संपादकीय, 27 जून) पढ़ा। पासपोर्ट पर अधिक शुल्क लगाने के पीछे सरकार की क्या मंशा है, यह तो वही जाने। इस बढ़ोतरी से अमीरों पर कोई खास फर्क पड़ता नजर नहीं आता है, पर श्रमिक और विद्यार्थी वर्ग के लिहाज से सरकार का यह कदम बेचैन करने करने वाला है। समय-समय पर सामने आने वाली जानकारी के अनुसार, विदेश जाने वालों में बहुत सारे लोग भ्रमण के अलावा कमाई को ठिकाने लगाने भी जाते हैं। मगर विदेश जाकर वापस आने और पैसा कमा कर लाने का काम मूलतः श्रमिक ही करते नजर आते हैं। इस हिसाब से देखा जाए, तो सरकार ने पासपोर्ट बनवाना महंगा कर विदेशी पूंजी कमा कर लाने वालों की राह में कांटे बोए हैं। देश का पैसा विदेश में जाकर लुटाने वालों को दो-तीन हजार रुपए अधिक खर्च करने में कोई ज्यादा भार नहीं पड़ेगा।

– राजेश श्रीवास्तव, सागर

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

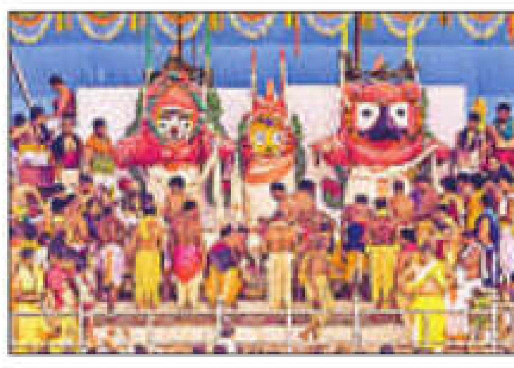

स्नान पूर्णिमा

पुरी में रथयात्रा से पहले 'स्नान पूर्णिमा' उत्सव के मौके पर भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा और बलभद्र की पूजा-अर्चना में जुटे श्रद्धालु।

बोल

भारत व दक्षिण कोरिया गणराज्य को करीब से सहयोग करना चाहिए। पोत निर्माण, डिजिटल सेवा, स्वास्थ्य, अवसंरचना व रक्षा जैसे क्षेत्रों में हमारे बीच संभावनाओं का पूरी तरह उपयोग किया जाना चाहिए। – एस जयशंकर, विदेश मंत्री

बोल

शिक्षा मौलिक अधिकार है, जिसे संघर्ष और युद्ध जैसी परिस्थितियों में भी कायम रहना चाहिए। बच्चों की सुरक्षा और उनके अधिकारों की रक्षा के प्रति भारत की प्रतिबद्धता अटूट है। – हरीश पर्वतनेनी, संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि

सम-सामयिक

आवारा कुत्ते : इंसानों की सुरक्षा के साथ जानवरों से न्याय भी जरूरी

जनसत्ता संवाद

सड़कों पर बढ़ते आवारा कुत्तों के खतरे के बीच सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिया है कि लोगों की सुरक्षा से समझौता नहीं हो सकता। हालांकि, सवाल है कि क्या शहर ऐसे समाधान खोज पाएंगे जो इंसानों को सुरक्षित रखें और जानवरों के साथ भी न्याय करें?

सुप्रीम कोर्ट ने 19 मई 2026 को पशु कल्याण संगठनों और आम लोगों की उन याचिकाओं को खारिज कर दिया, जिनमें सात नवंबर 2025 के आदेश को बदलने की मांग की गई थी। उस आदेश में अदालत ने भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक स्थानों जैसे स्कूल-कालेज, अस्पताल, बस डिपो और रेलवे स्टेशनों से आवारा कुत्तों को हटाने के निर्देश दिए थे। अदालत ने माना कि संविधान हर नागरिक को बिना किसी डर के सार्वजनिक जगहों पर घूमने की आजादी देता है, और इंसानी जान को खतरे में डालने वाली समस्या को यूं ही नहीं छोड़ा जा सकता।

जिम्मेदारी का सवाल

शहरों को आवारा कुत्तों की समस्या से निपटने के लिए नसबंदी, शेल्टर होम और मालिकों की जिम्मेदारी तय करने जैसे तरीकों पर काम करना होगा। नगर निगमों के लिए यह काम काफी मुश्किल है। उन्हें खुद उन जगहों की पहचान करनी होगी जहां ज्यादा भीड़ होती है, ताकि वहां से कुत्तों को हटाया जा सके।

नवंबर 2025 के आदेश में, कोर्ट ने माना था कि सड़कों, हाईवे और सरकारी परिसरों में आवारा जानवरों की बढ़ती तादाद एक बड़ा खतरा है। नसबंदी कार्यक्रमों की कमी से कुत्तों का तेजी से बढ़ना, कचरे और बचे हुए खाने का ठीक से निपटारा न होना, सरकारी विभागों में तालमेल की कमी और कुत्ता काटने पर इलाज को लेकर जनता में जागरूकता की कमी ही इस बिगड़ते हालात की असली वजहें हैं। अदालत ने आदेश दिया कि देश के हर जिले में कम से कम एक चालू 'पशु जन्म नियंत्रण केंद्र' जरूर बनाया जाए। साथ ही, अधिकारी भीड़-भाड़ वाले इलाकों से भी आवारा कुत्तों को दूर रखने का फैसला लें। अदालत ने हर समय एंटी-रेबीज टीके की उपलब्धता सुनिश्चित करने को भी कहा। इसके अलावा, बहुत ज्यादा आक्रामक, खतरनाक या लाइलाज रूप से बीमार कुत्तों को मारने की अनुमति दी गई है। साथ ही, उच्च न्यायालयों को निर्देश दिया गया है कि वे अधिकारियों के खिलाफ झूठे या परेशान करने वाले मुकदमों को तुरंत खारिज करें। अदालत ने आवारा कुत्तों से जुड़े हादसों को लेकर आंकड़ों का संज्ञान लिया। उदयपुर में इस साल अब तक कुत्ते के काटने के लगभग 1,750 मामले दर्ज हो चुके हैं। तमिलनाडु में इस साल अब तक 2.63 लाख मामले सामने आए हैं और 17 मौत दर्ज हो चुकी है। नई दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे जनवरी 2026 से अब तक अलग-अलग टर्मिनल पर कम से कम 31 ऐसी घटनाएं सामने आई हैं। भारत सरकार की 20वीं पशुधन गणना (2019) के मुताबिक 1.53 करोड़ आवारा कुत्ते थे, लेकिन स्वतंत्र आकलनों में यह संख्या लगभग 6.2 करोड़ बताई गई है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, दुनिया भर में रेबीज से होने वाली मौत में 36 फीसद हिस्सेदारी अकेले भारत की है। इसके अलावा, भारत में रेबीज के कुल मामलों और मौत में से 30 से 60 फीसद शिकार 15 साल से कम उम्र के बच्चे होते हैं, क्योंकि बच्चों को काटने के कई मामले दर्ज ही नहीं हो पाते। अंतरराष्ट्रीय अनुभव बताते हैं कि कुत्तों को बीच-बीच में अचानक हटाने की कोशिशों से उनकी आबादी को हमेशा के लिए कम नहीं किया जा सकता। सरकार को ऐसा रास्ता निकालना होगा, जिससे लोगों की जान भी बचे और जानवरों के साथ भी क्रूरता न हो।

सुप्रीम कोर्ट ने लोगों की सुरक्षा को अहम माना है, लेकिन असली काम नगर निगमों को करना है। अगर बिना पूरी तैयारी के कुत्तों को सिर्फ भगाया गया, तो वे खत्म होने के बजाय दूसरी कालोनियों में चले जाएंगे। इसलिए, असली चुनौती इंसानों की सुरक्षा या जानवरों की भलाई में से किसी एक को चुनने की नहीं है। सरकारों को ऐसा रास्ता निकालना होगा जिससे लोगों की जान भी बचे और जानवरों के साथ भी क्रूरता न हो।

शोध

बढ़ती गर्मी से मधुमक्खियों के अस्तित्व पर संकट

जनसत्ता संवाद

बढ़ती गर्मी से मधुमक्खियों पर संकट मंडराने लगा है। तनों पर छत्ता बनाने वाली प्रजातियां सबसे अधिक खतरे में हैं। आस्ट्रेलिया में हुए एक अहम अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि बढ़ती गर्मी का असर अलग-अलग मधुमक्खी की प्रजातियों पर अलग तरह से पड़ सकता है। इसके उलट जमीन में छत्ता बनाने वाली मधुमक्खियां गर्मी से खुद को बेहतर तरीके से बचा सकती हैं।

अध्ययन में मधुमक्खियों की 95 प्रजातियों पर शोध किया गया। यह अध्ययन प्रतिष्ठित पत्रिका 'नेचर कम्युनिकेशंस' में प्रकाशित हुआ है। इसमें पूर्वी आस्ट्रेलिया में पाई जाने वाली 95 देशी मधुमक्खी प्रजातियों का अध्ययन किया गया। ये प्रजातियां उष्णकटिबंधीय उत्तरी क्षेत्रों से लेकर ठंडे दक्षिणी हिस्सों तक फैली हुई हैं। छत्ता बनाने के स्थान के आधार पर गर्मी से सहनशीलता का अंतर पाया गया। बढ़ता वैश्विक तापमान मधुमक्खियों की आबादी और परागण क्षमता पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है, कृषि उत्पादन भी प्रभावित होगा।

उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की मधुमक्खियां अधिक संवेदनशील पाई गई हैं। पहले से गर्म वातावरण में अतिरिक्त गर्मी चुनौती बन रही है। आस्ट्रेलिया में लगभग 1,700 देशी मधुमक्खी प्रजातियां पाई जाती हैं। ये मधुमक्खियां आमतौर पर तीन तरह से छत्ता बनाती हैं। कुछ मधुमक्खियां जमीन के अंदर सुरंग बनाकर रहती हैं, कुछ पेड़ों के खोखलों या लकड़ी के अंदर बने खाली स्थानों में छत्ता बनाती हैं, और कुछ प्रजातियां पौधों के तनों या टहनियों के अंदर छोटे छेदों में अपना छत्ता बनाती हैं।

शोधकर्ताओं के अनुसार, छत्ता बनाने की जगह ही यह तय करती है कि मधुमक्खी गर्मी को कितनी आसानी से सहन कर पाएगी। जमीन के नीचे रहने वाली मधुमक्खियां बाहरी गर्मी से काफी हद तक सुरक्षित रहती हैं, क्योंकि मिट्टी तापमान को संतुलित रखती है। वहीं पौधों के तनों में रहने वाली मधुमक्खियां सीधे बाहरी तापमान के संपर्क में रहती हैं। मैकार्वरी यूनिवर्सिटी की शोधकर्ता ने कहा है कि तनों में रहने वाली मधुमक्खियां गर्मी से बच नहीं पातीं, क्योंकि उनके घोंसले में बहुत कम सुरक्षा होती है। इसलिए वे जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ती गर्मी से सबसे ज्यादा प्रभावित हो सकती हैं। शोध में कहा गया है कि यह समझना बहुत कठिन है कि कौन सी प्रजातियां जलवायु परिवर्तन से सुरक्षित रहेंगी। उन्होंने कहा कि कई बार जो प्रजातियां गर्मी सहन करने में सक्षम होती हैं, वे भी खतरे में आ सकती हैं, क्योंकि वे पहले से ही अपने अधिकतम सहनशील तापमान के करीब रहती हैं।

मधुमक्खियां केवल शहद बनाने के लिए ही नहीं जानी जातीं, बल्कि वे प्रकृति और कृषि दोनों के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण हैं। वे परागण का काम करती हैं, जिससे पौधों और फसलों का उत्पादन संभव होता है। शोध के अनुसार, मधुमक्खियां पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के लिए बहुत जरूरी हैं। वे कई फसलों के उत्पादन में मदद करती हैं, जिनमें मैकाडामिया नट्स, एवोकाडो, आम और लीची जैसी फसलें शामिल हैं।

शोध के मुताबिक, भूमध्य रेखा के पास मधुमक्खियां जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। इन क्षेत्रों में तापमान पहले से ही अधिक होता है, इसलिए अतिरिक्त गर्मी इनके लिए और अधिक खतरनाक साबित हो सकती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि केवल यह देखना पर्याप्त नहीं है कि कोई प्रजाति कितनी गर्मी सह सकती है। यह भी जरूरी है कि वह अपने वातावरण में कितनी सुरक्षा पा सकती है।

> 'नेचर कम्युनिकेशंस' में प्रकाशित शोध के मुताबिक, पूर्वी आस्ट्रेलिया में पाई जाने वाली 95 देशी मधुमक्खी प्रजातियों का अध्ययन किया गया। ये प्रजातियां उष्णकटिबंधीय उत्तरी क्षेत्रों से लेकर ठंडे दक्षिणी हिस्सों तक फैली हुई हैं। छत्ता बनाने के स्थान के आधार पर गर्मी को सहने की क्षमता में अंतर पाया गया। बढ़ता वैश्विक तापमान मधुमक्खियों की आबादी और परागण क्षमता पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है। इससे कृषि उत्पादन भी प्रभावित होगा।

(फाइल फोटो)

विश्व परिक्रमा

बकिंघम पैलेस : नवीनीकरण पर 36.9 करोड़ पाउंड का खर्च

जनसत्ता संवाद

ब्रिटेन के महाराजा चार्ल्स तृतीय बकिंघम पैलेस के 10 वर्षों तक 36.9 करोड़ पाउंड (लगभग 48.7 करोड़ अमेरिकी डालर) के व्यापक नवीनीकरण कार्यक्रम के पूरा होने के बाद भी वहां स्थायी रूप से नहीं रहेंगे। 2017 में शाही परिवार ने 10 वर्षीय नवीनीकरण परियोजना शुरू की, जिसके तहत पुरानी जलापूर्ति, विद्युत और कमरे गर्म करने प्रणालियों को आधुनिक बनाया जा रहा है, ताकि यह भवन अगले 50 वर्षों तक सुरक्षित और उपयोगी बना रहे।

यह परियोजना अगले वर्ष पूरी होने की संभावना है। राजशाही का मानना है कि इस ऐतिहासिक भवन को आम जनता के लिए अधिक सुलभ बनाया जाना चाहिए। हालांकि, शाही अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि महाराजा चार्ल्स और महारानी कैमिला बकिंघम पैलेस से अपने आधिकारिक कार्य करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि यह महल आगे भी राजशाही का 'औपचारिक और प्रशासनिक केंद्र' बना रहेगा, लेकिन चार्ल्स के पूरे शासनकाल के दौरान महाराजा और महारानी (बकिंघम पैलेस के) निकट स्थित क्लेरेंस हाउस में निवास करेंगे।

महाराजा के वित्तीय मामलों की देखरेख करने वाले वरिष्ठ शाही अधिकारी जेम्स चाल्मर्स ने कहा, 'बकिंघम पैलेस राजशाही का मुख्यालय है और आगे भी बना रहेगा। यह हमारे राष्ट्रीय भवनों का सबसे अनमोल रत्न है।' इस निर्णय की घोषणा हाल में की गई। दूसरे, किंग चार्ल्स देश के पहले ऐसे सम्राट बन गए हैं, जिन्होंने सार्वजनिक रूप से यह जानकारी दी कि उन्होंने सरकार को कितना कर अदा किया। वित्त वर्ष 2024-25 में किंग चार्ल्स ने आयकर और पूंजीगत लाभ कर के रूप में 1.29 करोड़ पाउंड (करीब 1.61 करोड़ अमेरिकी डालर) का भुगतान किया, जबकि पिछले वर्ष उन्होंने 1.17 करोड़ पाउंड कर चुकाया था।

जानें-समझें

भारत-बांग्लादेश संबंध

तारिक के चीन दौरे से बढ़ीं चुनौतियां

जनसत्ता संवाद

बांग्लादेश के प्रधानमंत्री तारिक रहमान के चीन दौरे के बाद दोनों देशों ने एक संयुक्त बयान जारी किया है, जिसमें मोंगला पोर्ट और तीस्ता परियोजना का जिक्र है। संयुक्त बयान सामने आने के बाद भारत में सबसे ज्यादा चर्चा इन्हीं दो मुद्दों को लेकर है। मोंगला बांग्लादेश का दूसरा सबसे बड़ा समुद्री बंदरगाह है। यहां चीन आर्थिक क्षेत्र विकसित करने वाला है। पहले यह जमीन भारत को देने की योजना थी, लेकिन 2025 में मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार ने इस योजना से भारत को अलग करने की घोषणा कर दी थी। दूसरे, चीन ने तीस्ता नदी प्रबंधन में मदद देने का वादा किया है। तीस्ता नदी प्रबंधन को लेकर भी भारत में चिंता जताई जा रही है। यह नदी पश्चिम बंगाल और पूर्वोत्तर राज्यों से होकर बांग्लादेश जाती है। चीन का इसमें शामिल होना भारत की सुरक्षा दृष्टि से संवेदनशील माना जा रहा है।

हिंद महासागर में समीकरण

मोंगला परियोजना के जरिए चीन बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी मौजूदगी को और मजबूत कर सकता है। चीन पाकिस्तान के ग्वादर से लेकर अफ्रीका के जिबूती तक कई बंदरगाहों में निवेश कर चुका है। चीन और बांग्लादेश ने चटगांव में भी संयुक्त रूप से आर्थिक और औद्योगिक गलियारे विकसित करने पर सहमति जताई है। साथ ही चीन ने तीस्ता नदी प्रबंधन में मदद देने का वादा भी किया है। बांग्लादेश द्वारा तीस्ता नदी परियोजना में चीनी भागीदारी से भारत में रणनीतिक चिंता बढ़ सकती है। प्रस्तावित परियोजना हमारे देश के संवेदनशील सिलीगुड़ी गलियारे के निकट स्थित है।

मोंगला का मामला

मोंगला बांग्लादेश का दूसरा सबसे बड़ा समुद्री बंदरगाह है। बांग्लादेश इकोनामिक जोंस अथारिटी (बेजा) ने 25 जून को बेजिंग में चाइना सिविल इंजीनियरिंग कंस्ट्रक्शन कारपोरेशन के साथ समझौता किया, जिसके तहत बागेरहाट जिले में मोंगला बंदरगाह के पास 110 एकड़ जमीन पर आर्थिक क्षेत्र बनाया जाएगा। यह जमीन पहले भारत के आर्थिक क्षेत्र के लिए तय की गई थी। यह पहल 2015 में दोनों देशों के बीच शुरू हुई थी। मोंगला पोर्ट कोलकाता के करीब है, जिससे माल ढुलाई का समय घटेगा और व्यापार और तेज हो सकता था। बेजा ने दावा किया था कि भारत की ओर से चुनी गई कंपनियां तय समय में काम शुरू नहीं कर पाईं, इस कारण परियोजना को अक्तूबर 2025 में अंतरिम सरकार ने सूची से हटा दिया। गौर करने वाली बात यह है कि पहले ही जून 2025 में ढाका स्थित चीनी दूतावास ने उसी जगह पर चीनी आर्थिक क्षेत्र बनाने का प्रस्ताव दिया था।

तीस्ता का मुद्दा

तीस्ता नदी पूर्वी हिमालय से निकलती है और बांग्लादेश में प्रवेश करने से पहले भारतीय राज्यों सिक्किम और पश्चिम बंगाल से होकर बहती है। दशकों से यह नदी जल बंटवारे को लेकर ढाका और नई दिल्ली के बीच विवाद का केंद्र रही है। हालांकि, चीन और बांग्लादेश में नवीनतम समझौते का महत्व जल राजनीति से कहीं अधिक है।

प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा

तीस्ता परियोजना बांग्लादेश में प्रभाव के लिए भारत और चीन के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा का प्रतीक बन गई है। तीस्ता परियोजना में चीन एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में कई साल पहले उभरा था। इस परियोजना की अनुमानित लागत एक अरब अमेरिकी डालर से अधिक थी। परियोजना क्षेत्र रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण सिलीगुड़ी कारिडोर के निकट स्थित है, जो भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों को देश के शेष भाग से जोड़ने वाली 22 किलोमीटर चौड़ी भू-पट्टी है। शेख हसीना के दौर में इस परियोजना को लेकर भारत ने काम शुरू किया था।

– प्रस्तुति : दीपक रस्तोगी

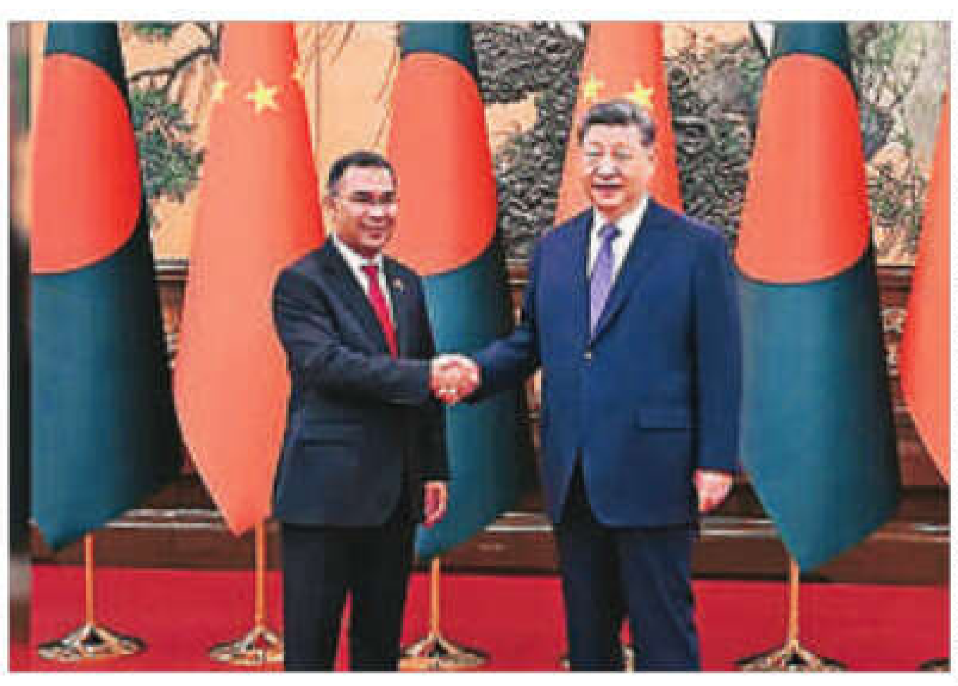

(फाइल फोटो)

भारत और बांग्लादेश के वर्ष 2024 के संयुक्त बयान में कहा गया था कि तीस्ता व मोंगला परियोजनाए भारत के सहयोग से पूरी होंगी। चीन को शामिल करना भारत की सुरक्षा के लिए खतरा है। मौजूदा कदम भारत-बांग्लादेश दोस्ती के वादे के मुताबिक नहीं है। – *वीना सिकरी, बांग्लादेश में भारत की पूर्व उच्चायुक्त*

चीन त्वरित आर्थिक सहायता और कम राजनीतिक शर्तों का प्रस्ताव देता है। भारत भौगोलिक अपरिहार्यता का प्रस्ताव देता है। तारिक रहमान के पिता और मां के दौर में भी बांग्लादेश का झुकाव चीन की ओर रहा। भारत के साथ इस परिवार का अतीत बहुत अच्छा नहीं रहा है। – *अजय बिसारिया, पूर्व राजनयिक*

चीन की मौजूदगी

चीनी कंपनियां हिंद महासागर क्षेत्र के 17 बंदरगाहों से जुड़ी हुई हैं। इनमें 13 बंदरगाहों के निर्माण में उनकी भूमिका है, जबकि आठ परियोजनाओं में उनकी हिस्सेदारी है। उसकी लगभग 80 फीसद ऊर्जा आयात हिंद महासागर पर निर्भर है। बांग्लादेश 2016 में चीन की 'बेल्ट एंड रोड' पहल से जुड़ा था। इसका मकसद बेजिंग के वित्तीय संसाधनों का उपयोग कर अपने बुनियादी ढांचे और आर्थिक एकीकरण को मजबूत करना था। चीन बांग्लादेश में बड़ा निवेशक रहा है। उसकी प्रमुख परियोजनाओं में चटगांव में 750 एकड़ के औद्योगिक क्षेत्र का विकास और चटगांव बंदरगाह पर ढांचे का निर्माण है। बांग्लादेश में तारिक रहमान के नेतृत्व वाली नई सरकार ने भारत के साथ संबंध बनाए रखते हुए, चीन और अन्य क्षेत्रीय शक्तियों के साथ भी संबंध मजबूत करने की नीति अख्तियार की है।

व्यक्तित्व

एथन वाज : भारत को मिला नया ग्रैंडमास्टर

जनसत्ता संवाद

भारत को 28 जून की रात अपना एक और ग्रैंडमास्टर मिल गया, जब 14 वर्षीय एथन वाज ने बोस्निया और हर्जेगोविना में आयोजित 'चेस समर इन साराजेवो – जीएम मिक्स' नामक स्पर्धा में अपना तीसरा और अंतिम ग्रैंडमास्टर नार्म हासिल किया। वाज उन चुनिंदा खिलाड़ियों के समूह में शामिल हो गए हैं, जिन्होंने इतनी कम उम्र में यह मुकाम हासिल किया। इस सूची में विश्व चैंपियन गुकेश डोम्माराजू, प्रज्ञानानंद, अर्जुन एरिगैसी, निहाल सरीन और रौनक साधवानी शामिल हैं। आर्थिक तंगी के कारण, 2023 तक वाज विदेशी स्पर्धाओं में शामिल होने के लिए निजी स्तर पर यात्राओं से बचते थे। एशियाई, राष्ट्रमंडल या विश्व प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व उन्होंने जरूर किया। वर्ष 2023 में ही गोवा के इस खिलाड़ी ने विदेशों में ओपन टूर्नामेंट में खेलना शुरू किया और अपने करिअर को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। उसी वर्ष वे फिडे मास्टर बने, 2024 में इंटरनेशनल मास्टर और अब ग्रैंडमास्टर हैं।

एथन के पिता एडविन ने शनिवार रात साराजेवो में मीडियाकर्मियों से कहा, 'हमने उसके करिअर को धीरे-धीरे आगे बढ़ाया है। पांच वर्षों तक हमने उसे कभी विदेश नहीं ले गए, सिवाय भारत का प्रतिनिधित्व करने और देश के लिए पदक जीतने के अवसरों के।' वाज का शुरुआती करिअर उतार-चढ़ाव भरा रहा है। प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को प्रायोजक मिलने में संघर्ष करना भारतीय शतरंज में एक आम बात है। वाज से पहले भारत के 94वें और 95वें ग्रैंडमास्टर मयंक चक्रवर्ती और अरण्यक घोष के परिवारों को भी आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा था। वाज परिवार ने एक अनोखा तरीका अपनाया – लोगों से वित्तीय मदद (क्राउडफंडिंग)। वर्ष 2022 से, परिवार धन जुटाने के लिए 'क्राउडफंडिंग' का सहारा ले रहा है।

जब मार्च 2011 में सुनामी ने जापान को तबाह किया और फुकुशिमा परमाणु रिएक्टर में हादसा हुआ, तब उनके माता-पिता, जो दोनों साफ्टवेयर पेशेवर थे, सात साल से ज्यादा समय से जापान में रह रहे थे। उनके पिता एडविन, तब तक जापानी भाषा में माहिर हो चुके थे। परिवार टोक्यो में घर खरीदने की सोच भी रहा था। जब सुनामी आई और फुकुशिमा में परमाणु दुर्घटना हुई, तो एडविन ने वहां से निकलने का फैसला किया। उन्होंने बताया, 'सुनामी का हम पर सीधा असर नहीं हुआ। लेकिन परमाणु रिएक्टर हादसे के बाद रेडियोधर्मी विकिरण फैलने लगा था। वहां रहना खतरनाक था। शायद, भगवान हमें बताना चाह रहे थे कि गोवा लौटने का यह सही समय है।'

गोवा लौटने के बाद, उन्होंने अपनी खुद की आइटी कंपनी शुरू की। लगभग छह महीने बाद एथन का जन्म हुआ। वाज दंपति ने अपने दोनों बेटों को शतरंज की कक्षा में डाल दिया ताकि वे टीवी कार्टून के आदी न हो जाएं। एडविन के मुताबिक, एक बार जब एथन ने खेलना शुरू कर दिया, तो उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

दैनिक जागरण

अपनी प्रसन्नता का निर्धारक व्यक्ति स्वयं होता है

देर के साथ अंधेर भी

यह संतोषजनक कम, आश्चर्यजनक अधिक है कि श्रीनगर के सरकारी अस्पताल की कश्मीरी पंडित नर्स सरला भट्ट के अपहरण और हत्या के मामले में 35 वर्ष बाद आतंकी सरगना यासीन मलिक और उसके साथियों के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया गया। यासीन मलिक प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन जेकेएलएफ का प्रमुख है। सरला भट्ट की बर्बर हत्या कश्मीर में आतंक से जुड़ी एक ऐसी खौफनाक घटना थी, जिसने घाटी से कश्मीरी पंडितों के पलायन को हवा दी थी। इस मामले में इतने लंबे समय बाद आरोप पत्र दाखिल करने की नौबत आना यही बताता है कि अपने देश में किस तरह कुछ संगीन मामलों में भी आवश्यकता से अधिक देर होती है। जब आतंकवाद से जुड़े गंभीर मामलों में भी ऐसा होता है तो न केवल पीड़ितों के बीच निराशा घर करती है, बल्कि आतंकवाद से लड़ने की प्रतिबद्धता को लेकर भी सवाल उठते हैं। समझना कठिन है कि करीब तीन दशक से भी अधिक समय तक किसी ने इसकी आवश्यकता क्यों नहीं समझी कि सरला भट्ट को न्याय मिले? सरला भट्ट का प्रकरण पहला ऐसा मामला नहीं, जिसमें दोषियों को कठघरे में खड़ा करने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में इतनी देर हुई हो कि उसे अंधेर कहा जा सकता है। इस तरह के और भी अनेक मामले हैं, जिनमें कश्मीरी पंडितों को आतंकित करने और उन्हें पलायन के लिए विवश करने वाली हत्या और हिंसा की घटनाओं की अनदेखी की गई हो। इस अनदेखी में जम्मू-कश्मीर सरकार के साथ तत्कालीन केंद्र सरकारों की भूमिका रही।

एक पीड़ादायक तथ्य यह भी है कि एक बार सुप्रीम कोर्ट ने भी यह कहकर कश्मीरी पंडितों की हत्या के मामलों की जांच-पड़ताल की जरूरत को इस आधार पर खारिज कर दिया था कि अब बहुत देर हो चुकी है। आखिर जब अन्य मामलों की जांच-पड़ताल दशकों बाद होने के प्रसंग सामने आ चुके हों तब फिर कश्मीरी पंडितों के साथ हुए भीषण अत्याचारों के मामलों की जांच में संवेदनहीनता क्यों दिखाई गई? अफसोस की बात केवल यह नहीं कि कश्मीरी पंडितों के साथ हुए अत्याचारों की अनदेखी हुई और उन्हें न्याय देने की वैसी कोई ठोस पहल नहीं हुई, जैसी अपेक्षित थी, बल्कि यह भी है कि यासीन मलिक जैसे जो आतंकी तत्व इन अत्याचारों के लिए उत्तरदायी थे, उनके खिलाफ सख्ती दिखाने और उन्हें न्याय के कठघरे में खड़ा करने से इन्कार किया गया। इससे भी खराब बात यह हुई कि कश्मीर समस्या के समाधान में कथित तौर पर सहायक मानकर उन्हें गांधीवादी करार दिया गया। यासीन मलिक के मामले में तो ऐसा तब किया गया, जब उस पर वायुसेना के चार कर्मियों की हत्या का आरोप था। ये हत्याएं भी 1990 में की गई थीं। यह अच्छी बात यह है कि इस मामले में भी उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई हो रही है, लेकिन जो देरी हुई, उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

सुरक्षित रोजगार

सरकारी कार्यालयों में व्यवस्था और विकास योजनाओं का क्रियान्वयन करने वालों में सबसे बड़ी संख्या संविदा कर्मचारियों की है। यह वर्षों से पूरी निष्ठा के साथ काम कर रहे हैं। हरियाणा सरकार की ओर से इनकी सेवा सुरक्षा के लंबित आवेदनों का निपटारा आगामी स्वतंत्रता दिवस तक करने का निर्देश केवल प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सरकार की नीयत और जवाबदेही की परीक्षा भी है। विधानसभा सत्र में सेवा सुरक्षा का कानून बनाना बड़ा महत्वपूर्ण कदम था, लेकिन उससे भी अधिक आवश्यक है कि उसका लाभ समय पर हर पात्र कर्मचारी तक पहुंचना सुनिश्चित हो। कोई भी रोजगार केवल मासिक वेतन का साधन नहीं होता, बल्कि पूरे परिवार की आर्थिक स्थिरता, बच्चों की पढ़ाई, बुजुर्गों के इलाज और भविष्य की उम्मीदों का आधार होता है। जब कर्मचारी को यह विश्वास मिलता है कि उसकी नौकरी मनमाने ढंग से समाप्त नहीं होगी, तब उसका पूरा ध्यान काम की गुणवत्ता और सरलता पर केंद्रित होता है। इसका सीधा लाभ सरकारी व्यवस्था के साथ-साथ आम नागरिकों दोनों को ही मिलता है। सरकार के सामने चुनौती केवल समय-सीमा तय करने की नहीं, उसे धरातल पर उतारने की है। लिहाजा, हर अधिकारी की जवाबदेही तय होनी चाहिए, साथ ही पूरी प्रक्रिया को समयबद्ध पूरा किया जाना अत्यावश्यक है।

> जब किसी कर्मचारी को विश्वास मिलता है तब उसका पूरा ध्यान काम की गुणवत्ता और सरलता पर केंद्रित होता है

तेज प्रगति के लिए तैयार बिहार

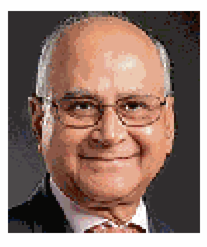

जीएन वाजपेयी

कुछ कमियों के बावजूद बिहार में विपुल संभावनाओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता। डबल इंजन सरकार में राज्य के विकास की आस बढ़ी है

रितेश पांडेय

भारत की प्रगति की रेल बहुत तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है, लेकिन इसमें कुछ डिब्बे पीछे रह गए हैं। ऐसा ही एक डिब्बा है- बिहार। जबकि प्राचीन समृद्ध भारत के मानचित्र को देखें तो यही क्षेत्र सबसे संपन्न इलाकों में से एक नजर आएगा। अपनी गहरी सभ्यतागत जड़ों, उर्वर भूमि और प्रतिभाशाली युवाओं की अच्छी-खासी संख्या वाले राज्य को देश में उदारीकरण की बयार के बाद तेज रफ्तार से तरक्की पर सवार होना चाहिए था, लेकिन विरोधाभासों में उलझा यह प्रदेश इस कसौटी पर खरा नहीं उतर पाया। यह सही है कि पिछले कुछ समय से बिहार विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर है, लेकिन फिर भी प्रति व्यक्ति आय, औद्योगिक पैठ एवं मानव विकास सूचकांकों के पैमाने पर राज्य अपेक्षाकृत पिछड़ा हुआ है।

वित्त वर्ष 2024-25 में बिहार की प्रति व्यक्ति जीडीपी केवल 76,490 रुपये रही, जो राष्ट्रीय औसत का लगभग 35.7 प्रतिशत है। बात केवल प्रति व्यक्ति आय या ऐसे अन्य संकेतकों की ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय असंतुलन की भी है। पटना और उसके आसपास के इलाकों की तुलना में उत्तर एवं पूर्वी बिहार के क्षेत्र कम विकसित हैं। इसका परिणाम पलायन के रूप में सामने आता है। स्थानीय प्रतिभाएं बेहतर अवसरों की तलाश में बाहर चली जाती हैं और राज्य को उनका समुचित लाभ प्राप्त नहीं हो पाता।

स्वतंत्रता उपरांत परिदृश्य की बात करें तो उस समय बिहार की स्थिति बहुत सशक्त थी। अपनी उर्वर मैदानी भूमि के कारण बिहार कृषि उपज का प्रमुख केंद्र था। यहां देश की एक चौथाई चीनी और बागवानी उत्पादों के एक बड़े हिस्से का उत्पादन होता था। डालमिया नगर जैसे शहर आरंभिक औद्योगिक केंद्रों के प्रतीक थे। फिर 1970 से 1990 के दशक में बिहार दिशाहीन राजनीतिक नेतृत्व से त्रस्त रहा। इस नेतृत्व के पास विकास को लेकर न तो कोई समझ थी और न ही दृष्टि। बदहाल कानून एवं व्यवस्था और सरकारी संस्थानों के लचर रवैये ने उद्यमियों के उत्साह पर तुषारापात किया। इसके चलते राज्य के उद्यमियों ने या तो अपने प्रतिष्ठान बंद कर दिए या फिर उन्हें कहीं और ले गए। इस कारण राज्य में निवेश संकुचित होता गया। विकास को गति प्रदान करने वाले स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्र उपेक्षा के शिकार होते गए।

जब तमिलनाडु में चेन्नई और कर्नाटक में बेंगलुरु जैसे शहरों को आधुनिक उद्योगों के अनुरूप विकसित किया जा रहा था, तब बिहार में चरवाहा विद्यालय खोले जा रहे थे। परिणामस्वरूप, बिहार निरंतर पिछड़ता चला गया। वर्तमान में भी बिहार की अर्थव्यवस्था प्रगति के साथ असंतुलन को ही दर्शाती है। राज्य के आर्थिक उत्पादन में सेवा क्षेत्र की सर्वाधिक 60 प्रतिशत हिस्सेदारी है, जबकि विनिर्माण और कृषि दोनों 20 प्रतिशत के स्तर पर ही ठिठके हैं। कृषि अभी भी छोटी जोतों, अपर्याप्त सिंचाई, लचर विस्तारित सेवाओं और सीमित भंडारण क्षमताओं के साथ ही बाढ़ एवं सूखे सरीखे जलवायु परिवर्तन के झटकों से उबरने की दृष्टि से कमजोरी जैसे पहलुओं से जूझ रही है। अनुकूल प्राकृतिक परिवेश के लाभ बिहार के उत्पादन में रूपांतरित नहीं हो पा रहे हैं। उत्पादन में महज 20 प्रतिशत योगदान के बावजूद करीब 50 प्रतिशत कामकाजी आबादी कृषि कार्यों में संलग्न है। ऐसे में, नीतिगत चुनौती फसल उत्पादन बढ़ाने की नहीं, बल्कि विविधीकरण, उचित संयोजन, लाजिस्टिक्स, खाद्य प्रसंस्करण और बाजार तक पहुंच के जरिये किसानों की आय बढ़ाने की है। औद्योगिक क्षेत्र में तो मुश्किल की खाई और भी चौड़ी है। विनिर्माण में बिहार की हिस्सेदारी उसकी वास्तविक क्षमता से बहुत नीचे है। यह न भूला जाए कि उद्योगीकरण केवल प्रोत्साहनों के दम पर ही नहीं पनप सकता। उसके लिए निर्बाध एवं भरोसेमंद बिजली आपूर्ति, सुगम ढुलाई एवं परिवहन, अनुबंधों के प्रवर्तन की व्यवस्था, वित्तीय संसाधनों तक पहुंच, बुनियादी सुविधाओं के साथ पर्याप्त भूमि, कार्यकुशल कामकाजी आबादी एवं नियमों की सुनिश्चितता भी उतनी आवश्यक है। निवेशक केवल राज्यों के दावों या आकांक्षाओं को ही नहीं देखते, बल्कि उनके लिए धरातल पर वास्तविक स्थिति कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है। पूंजी का प्रवाह सदैव उन्हीं स्थानों की ओर होता है, जहां समग्र तंत्र अनुकूलता लिए होता है। सेवा क्षेत्र में भी राज्य अपनी क्षमताओं को पूरी तरह नहीं भुना पा रहा है।

प्रतिकूलताओं के बाद भी बिहार कई स्तरों पर बहुत सहज अवस्था में है। जीडीपी के अनुपात में राज्य का कर्ज 35 से 40 प्रतिशत के दायरे में ही है, जो नियंत्रण में ही कहा जाएगा। ग्रामीण परिवहन एवं कनेक्टिविटी की स्थिति सुधरी है। विद्युतीकरण एवं डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर भी मजबूत हुआ है। हालांकि, औद्योगिक इकोसिस्टम, शहरी बुनियादी ढांचे और लाजिस्टिक्स के साथ ही भंडारण क्षमताओं में सुधार होना शेष है। इन कमियों के बावजूद बिहार में विद्यमान विपुल संभावनाओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता। भारत में आज चुनिंदा राज्य ही इतनी युवा आबादी वाले हैं, क्योंकि अधिकांश राज्यों में आबादी बुढ़ाती जा रही है। कम ही राज्यों के पास बिहार जैसी उपजाऊ भूमि और जल-संसाधनों से समृद्ध कृषि क्षमता मौजूद है। ऐसे राज्य भी अंगुलियों पर ही गिने जा सकते हैं जो पूर्वी भारत, नेपाल और गंगा के विस्तृत मैदानी इलाकों के बड़े बाजार के बीच इतने रणनीतिक रूप से अवस्थित हैं। अपनी क्षमताओं का उपयोग करे तो बिहार केवल श्रमिकों की आपूर्ति करने वाले राज्य की छवि को तोड़कर उद्यमों को आकर्षित करने वाले एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरने का माद्दा रखता है।

भाजपा के पहली बार नेतृत्व की भूमिका में आने के साथ ही पार्टी के बहुचर्चित डबल इंजन सरकार की चर्चा तेज हो गई है। उत्तर प्रदेश पहले ही ऐसी संकल्पना का लाभ उठाकर आगे बढ़ रहा है और अब इसका फायदा उठाने की बिहार की बारी है। बिहार को अब देश की तेजी से हो रही तरक्की के साथ कदमताल करनी होगी। यहां के लोग बेहतर परिणामों के पात्र हैं।

(वाजपेयी सेबी एवं एलआइसी के पूर्व चेयरमैन और पांडेय लोक-नीति विश्लेषक हैं)
response@jagran.com

अवधेश राजपूत

सहयोग के नए दौर में भारत और फ्रांस

तियेरी मातू

जी-7 की पहलों को आगे बढ़ाने के लिए अभी कई कार्य-समूह बैठकें होंगी, जिनमें भारत की महत्वपूर्ण भूमिका होगी

फ्रांस की अध्यक्षता में इस साल हुए जी-7 समिट के नाकाम हो जाने की कई वजहें थीं। कई झगड़े, समुद्री व्यापार के रास्तों में रुकावट, ऊर्जा संकट, महामारी का फैलना, ग्लोबल मैक्रो-इकोनमिक असंतुलन, मदद के तरीकों में रुकावट और विभाजित विश्व की वजह से दांव पर बहुत कुछ लगा था। फिर भी 15 से 17 जून तक फ्रांस के एवियन में जो हुआ, वह एक साथ आने का दुर्लभ मौका था। नेताओं के बीच सहयोग से बड़ी चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस वादे मुमकिन हो पाए। यह सफलता न केवल जी-7 सदस्य देशों (कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका) के बीच, बल्कि जी-7 प्लस के जरूरी सहयोगी देशों-खासकर भारत और साथ ही ब्राजील, मिस्र, केन्या और दक्षिण कोरिया के साथ भी करीबी तालमेल का नतीजा थी। यूक्रेन, यूएई और कतर को भी अपनी राय देने के लिए नेताओं के समिट में बुलाया गया था। इस अनोखे जी-7 प्लस फार्मेट के जरिये फ्रांस की अध्यक्षता ने न केवल समिट में, बल्कि समिट से पहले तैयारी की प्रक्रिया के दौरान भी पहली बार भारत और सहयोगी देशों के अनुभव और विजन का इस्तेमाल करने का फैसला किया।

भारत और फ्रांस के जी-7 के साथ रिश्ते बहुत पुराने हैं। जी-7 के साथ भारत का जुड़ाव 2003 में फ्रांस के न्योते पर एवियन में शुरू हुआ था। इस साल समिट में भारत की 13वीं और प्रधानमंत्री मोदी की लगातार सातवीं भागीदारी थी, जब फ्रांस ने अपनी पिछली अध्यक्षता के दौरान भारत को जी-7 बियारिट्ज समिट में बुलाया था। इस साल जी-7 प्लस में भारत का योगदान सभी मामलों में अहम था, खासकर स्वास्थ्य और डिजिटल टेक्नोलाजी से जुड़ी ग्लोबल चुनौतियों पर। जी-7 नेताओं ने सर्वसम्मति से नौ घोषणाओं को अपनाया और कई को सहयोगी देशों का समर्थन मिला। ये हमारी बड़ी साझा सफलताएं थीं। जी-7 ने यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता, रक्षा और ऊर्जा बुनियादी ढांचे के समर्थन के मामले में मजबूत एकजुटता और संकल्प दिखाया। हमने हाल के महीनों में युद्ध के मैदान में यूक्रेन के साहस की तारीफ़ की और उस नई गति पर जोर दिया, जिससे इस आक्रामक युद्ध का न्यायपूर्ण और अंतिम समाधान निकल सकता है।

शिखर पर भारत-फ्रांस की मैत्री। फाइल

हमने अमेरिका और ईरान के बीच हुए समझौते का स्वागत किया और होर्मुज से बिना किसी रोक-टोक या टोल के आने-जाने के अधिकार को फिर से दोहराया। हमने लेबनान में तुरंत और मजबूत युद्धविराम की भी पुरजोर मांग की, क्योंकि यह बहुत जरूरी है। मैक्रो-इकोनमिक असंतुलन से निपटने के लिए नेताओं ने संतुलित, टिकाऊ और मजबूत विकास का समर्थन किया। उन्होंने माना कि निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करते हुए, उद्योगों और नौकरियों की रक्षा करते हुए, और भविष्य के व्यापार युद्धों और वित्तीय संकटों से बचते हुए आर्थिक नीतियों में सहयोग और समन्वय सभी के हित में है। चूंकि इस बड़ी चुनौती के समाधान में सभी की भागीदारी जरूरी है, इसलिए फ्रांसीसी अध्यक्षता ने चीन के साथ रचनात्मक जुड़ाव को प्राथमिकता दी। चीन ने जी-7 एवियन शिखर सम्मेलन से पहले विकास के लिए एक अभूतपूर्व वर्चुअल सम्मेलन में भाग लिया, जो 20 वर्षों में पहली बार हुआ।

डिजिटल तकनीक और एआइ पर, इंडिया एआइ इम्पैक्ट समिट के बाद जी-7 प्लस नेताओं ने बच्चों की आनलाइन सुरक्षा को बेहतर बनाने पर सर्वसम्मति से सहमति व्यक्त की। हम एआइ सुरक्षा जोखिमों का सामना कर रहे लोकतंत्रों के बीच सहयोग के लिए एक साझा मंच बनाने की योजना बना रहे हैं ताकि साझा मानक स्थापित किए जा सकें। जी-7 प्लस सदस्य सुरक्षित और लाभकारी एआइ के इस्तेमाल को तेज करने के लिए प्रमुख कंपनियों के साथ काम करेंगे। इसमें भारत की सर्वम एआइ भी शामिल है।

नेताओं ने अंतरराष्ट्रीय एकजुटता की आवश्यकता को दोहराया, विशेष रूप से मानव विकास और सबसे कमजोर लोगों की सुरक्षा के लिए। फ्रेंच डेवलपमेंट एजेंसी द्वारा कार्यान्वित 'फाइनेंस इन कामन' इस दिशा में उपयोगी भूमिका निभाएगा। सभी नेता महत्वपूर्ण खनिजों पर अपनी मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत करने पर सहमत हुए। इस उद्देश्य के लिए कुल 195 ठोस सहयोग परियोजनाएं शुरू की गईं, जिनमें 64 अरब यूरो का संयुक्त निवेश शामिल है। सुरक्षा मुद्दों पर हमने क्रमशः नशीली दवाओं की तस्करी और प्रवासियों की तस्करी से निपटने के लिए मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। जी-7 अध्यक्षता अभी समाप्त नहीं हुई है। इन विभिन्न पहलों को आगे बढ़ाने के लिए 2026 में कई मंत्री-स्तरीय और कार्य-समूह बैठकें होंगी, जिनमें भारत की अहम भूमिका होगी। ब्रिक्स चेयरमैन के तौर पर भारत और जी20 के चेयरमैन के तौर पर अमेरिका, दोनों ही इन चुनौतियों पर ठोस पहल को आगे बढ़ाने और दुनिया के बीच की दूरियों को कम करने में अहम भूमिका निभाएंगे। यह ऐसे समय में हो रहा है जब सभी की ओर से तालमेल और रचनात्मक जुड़ाव पहले से कहीं ज्यादा जरूरी है।

(लेखक भारत में फ्रांस के राजदूत हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

परिस्थिति

मनुष्य के जीवन की परिस्थितियां केवल भाग्य का परिणाम नहीं होतीं, बल्कि उसके विचारों, कर्मों और मनोभावों से निर्मित होती हैं। जैसा हमारा चिंतन होता है, वैसा ही हमारा व्यक्तित्व बनता है और वैसा ही जीवन का परिवेश भी निर्मित होने लगता है। इसलिए कहा गया है-जैसी मनःस्थिति, वैसी परिस्थिति। यदि हमारे विचार सकारात्मक, कर्म श्रेष्ठ और संकल्प दृढ़ हैं, तो विपरीत परिस्थितियां भी धीरे-धीरे अनुकूल बनने लगती हैं। इसके विपरीत, नकारात्मक सोच और निराशा जीवन को कठिन बना देती है।

मनुष्य का अर्थ है 'मन्यु', अर्थात हिम्मत। जिसके भीतर संघर्ष करने और लड़ने का साहस है, वही सच्चा मनुष्य है। जिसके भीतर हिम्मत होती है, वह जीवन में कभी हार नहीं मानता। वह निरंतर परिस्थितियों से संघर्ष करता रहता है। अपनी मंजिल प्राप्त करके ही दम लेता है। दुर्भाग्य यह है कि हम अपनी इस आंतरिक क्षमता को पहचानने के बजाय परिस्थितियों के सामने स्वयं को असहाय मान लेते हैं। एक बात हमेशा याद रखें कि कठिनाइयां मनुष्य की शक्ति की परीक्षा लेती हैं और संघर्ष ही उसके व्यक्तित्व को निखारता है। प्रत्येक मनुष्य के भीतर ईश्वर प्रदत्त असीम शक्ति विद्यमान है।

जीवन में सुख और दुख, अनुकूलता और प्रतिकूलता स्थायी नहीं होते। परिवर्तन ही प्रकृति का नितांत शाश्वत नियम है। इसलिए कठिन समय में निराश होने के बजाय धैर्य, परिश्रम और सकारात्मक चिंतन के साथ आगे बढ़ना ही बुद्धिमानी है। जो व्यक्ति अपनी भीतरी शक्ति को पहचानकर संघर्ष का मार्ग चुनता है, वही इतिहास रचता है। इसलिए परिस्थितियों पर विलाप करने के बजाय अपने मन, विचार और कर्म को श्रेष्ठ बनाइए। जब मनःस्थिति बदलती है, तब परिस्थितियां भी बदलने लगती हैं।

मुकेश ऋषि

जवाबदेह स्वास्थ्य व्यवस्था की दरकार

मुनीष भाटिया

> बीमारी जब आती है, तब एक मजबूत, संवेदनशील और जवाबदेह स्वास्थ्य व्यवस्था ही सबसे बड़ा सहारा बनती है

हाल में न्यायपालिका द्वारा चिकित्सा क्षेत्र की कार्यप्रणाली से जुड़े मामलों में हस्तक्षेप ने व्यापक चर्चा को जन्म दिया है। पहली दृष्टि में यह हस्तक्षेप सकारात्मक प्रतीत होता है। विशेषकर तब, जब स्वास्थ्य सेवाएं महंगी और जटिल होती जा रही हों। आज इलाज केवल बीमारी से लड़ाई नहीं रह गया है, बल्कि बढ़ते खर्चों, जटिल प्रक्रियाओं और स्वास्थ्य सेवाओं की असमान उपलब्धता के कारण आम आदमी के लिए एक कठिन संघर्ष बनता जा रहा है।

सरकारी अस्पताल स्वयं अनेक समस्याओं से घिरे हुए हैं। डाक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ के हजारों पद वर्षों से रिक्त पड़े हैं। मरीजों को घंटों लंबी कतारों में खड़ा रहना पड़ता है। आवश्यक दवाओं की उपलब्धता अनिश्चित रहती है और कई बार जीवन रक्षक जांच के लिए महीनों इंतजार करना पड़ता है। अनेक अस्पतालों में एक डाक्टर को कई पदों का कार्य संभालना पड़ रहा है। निजी अस्पतालों की ओर रुख करने वाले लोगों की समस्याएं भी कम नहीं हैं। बढ़ती चिकित्सा लागत, महंगे परीक्षण, पैकेज आधारित उपचार और स्वास्थ्य बीमा कंपनियों की जटिल प्रक्रिया मरीजों और उनके परिवारों के लिए अतिरिक्त मानसिक और आर्थिक बोझ बन जाती हैं। बीमा धारक भी कागजी औपचारिकताओं, दावों के अस्वीकार होने और अस्पष्ट नियमों के जाल में उलझ जाते हैं। परिणामस्वरूप बीमारी केवल शारीरिक कष्ट तक सीमित नहीं रहती, बल्कि आर्थिक असुरक्षा और मानसिक तनाव का कारण भी बन जाती है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि स्वास्थ्य व्यवस्था में व्याप्त असमानता धीरे-धीरे सामाजिक असमानता का रूप लेती जा रही है। जो व्यक्ति आर्थिक रूप से सक्षम है, उसके पास बेहतर उपचार के विकल्प उपलब्ध हैं, जबकि सीमित संसाधनों वाला नागरिक अक्सर व्यवस्था की कमियों का सबसे बड़ा शिकार बनता है। यह स्थिति किसी भी कल्याणकारी राज्य के लिए चिंता का विषय होनी चाहिए।

स्वास्थ्य क्षेत्र को केवल बाजार अथवा प्रशासनिक व्यवस्था के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व और सार्वजनिक निवेश के दृष्टिकोण से देखा जाए। सरकारी अस्पतालों को संसाधनों, आधुनिक उपकरणों और पर्याप्त मानव बल से सशक्त बनाया जाए। डाक्टरों के रिक्त पदों को शीघ्र भरा जाए, चिकित्सा बीमा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाया जाए तथा चिकित्सा क्षेत्र में सेवा और नैतिकता के मूल्यों को प्रोत्साहित किया जाए। साथ ही डाक्टरों और मरीजों के बीच विश्वास का संबंध मजबूत करना भी उतना ही आवश्यक है। बीमारी कभी सूचना देकर नहीं आती, लेकिन जब वह आती है, तब एक मजबूत, संवेदनशील और जवाबदेह स्वास्थ्य व्यवस्था ही जीवन और मृत्यु के बीच सबसे बड़ा सहारा बनती है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

किशोरावस्था में संवाद महत्वपूर्ण

'और बढ़ी संतान से संवाद की महत्ता' शीर्षक से लिखे अपने आलेख में डा. ऋतु सारस्वत ने अभिभावकों और बच्चों के बीच घटते संवाद और इससे प्रभावित पक्ष को रेखांकित किया है। वास्तव में बाल्यावस्था के बाद बच्चा धीरे-धीरे जब बड़ा होता जाता है, तो उसके मन में विचारों की बाढ़ आती है और उस द्वंद्व में वह कई बार सही-गलत के बीच भेद नहीं कर पाता। यदि इस समय उसे परिवार का विश्वास, संवाद और भावनात्मक सहयोग नहीं मिलता, तो वह अपने प्रश्नों के उत्तर बाहर खोजने लगता है, जिसके परिणाम कई बार चिंताजनक होते हैं। वर्तमान समय में अभिभावक अक्सर बच्चों की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति को ही अपना दायित्व समझ लेते हैं, जबकि बच्चों को सबसे अधिक आवश्यकता अपने माता-पिता के समय, विश्वास और स्नेह की होती है। यदि परिवार में खुला संवाद हो, जहां बच्चा बिना भय के अपनी बात कह सके, तो वह जीवन के महत्वपूर्ण कौशलों को स्वयं ही सीख लेता है। इसके विपरीत संवाद की कमी बच्चों को अकेलेपन, तनाव, अवसाद और कई बार गलत दिशा की ओर भी ले जा सकती है। यदि हमें भविष्य में आत्मविश्वासी, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक चाहिए, तो हमें किशोरावस्था को केवल अनुशासन का नहीं, बल्कि विश्वास, संवाद और मार्गदर्शन का काल मानना होगा और इसके लिए सिर्फ माता-पिता की जिम्मेदारी तय करना काफी नहीं होगा। किशोर केवल घर से ही नहीं, बल्कि विद्यालय, मित्रों और डिजिटल माध्यमों से भी प्रभावित होते हैं। इसलिए आवश्यक है कि विद्यालयों में जीवन कौशल, मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक शिक्षा और परामर्श जैसी शिक्षण व्यवस्थाओं को अमल में लाया जाए।

शिवम सिंह, बांदा (उप्र)

मेलबाक्स

जनता का आक्रोश

''तृणमूल के पराभव में सबक लिए सबक'' शीर्षक से प्रकाशित राहुल वर्मा का आलेख वर्तमान भारतीय राजनीति के बदलते स्वरूप और जनता के मनोविज्ञान को गहराई से समझने का प्रयास करता है। विशेषकर पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के अनेक नेताओं की चुनावी पराजय और उसके बाद सामने आए जनभाव ने यह स्पष्ट कर दिया है कि लोकतंत्र में सत्ता चाहे कितनी भी प्रभावशाली क्यों न दिखे, अंततः जनता का धैर्य टूटने पर परिणाम बेहद कठोर होते हैं। बंगाल में पिछले वर्षों में राजनीतिक हिंसा, भय और संगठनात्मक अहंकार जिस प्रकार बढ़ा, उसने आम नागरिकों के भीतर गहरी नाराजगी पैदा की। पंचायत चुनावों से लेकर लोकसभा चुनाव तक हिंसा, बूथ कब्जे, विपक्षी कार्यकर्ताओं पर हमले और प्रशासनिक पक्षपात के आरोप लगातार उठते रहे। लोकतंत्र केवल चुनाव जीतने का माध्यम नहीं होता, बल्कि जनता के विश्वास और मर्यादा को बनाए रखने का दायित्व भी होता है। जब सत्ताधारी दल के कुछ नेताओं और कार्यकर्ताओं में यह भावना घर कर जाती है कि सत्ता स्थायी है और जनता विवश है, तब वही जनता अवसर मिलते ही अपनी नाराजगी सबसे तीखे रूप में व्यक्त करती है। तृणमूल कांग्रेस के अनेक नेताओं के साथ जनता द्वारा किया जा रहा व्यवहार भी इसी आक्रोश का परिणाम माना जा रहा है। अन्य राज्यों में भी चुनावों के बाद सरकारें बदली हैं, दल सत्ता से बाहर हुए हैं, किंतु इस प्रकार का व्यापक जनाक्रोश बहुत कम देखने को मिला। इसका कारण यही है कि बंगाल में लंबे समय से राजनीतिक प्रतिशोध और भय का वातावरण चर्चा का विषय बना हुआ था। यह पूरा घटनाक्रम देश देता है कि क्षेत्रीय दल हों या राष्ट्रीय दल, जनता अब केवल नारों और भावनात्मक अभियानों से लंबे समय तक प्रभावित रहने वाली नहीं है। जनता शासन में विनम्रता, उत्तरदायित्व और लोकतांत्रिक व्यवहार चाहती है। सत्ता का अहंकार, संगठनात्मक हिंसा और विरोधियों के प्रति असहिष्णुता अंततः किसी भी दल को भारी पड़ सकती है। लोकतंत्र में सबसे बड़ी शक्ति जनता ही होती है, और जब वही मौन मतदाता अपना निर्णय सुनाता है तो बड़े-बड़े राजनीतिक दुर्ग भी ढह जाते हैं।

सुशील कुमार बतरा, मेरठ

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें:
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: response@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा-201309 से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी* दूरभाष: नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

30 अरब डालर तक पहुंच चुका है भारत और इंडोनेशिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार। इसके अलावा इंडोनेशिया, आसियान में भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में शामिल हो गया है। साथ ही भारत इंडोनेशिया के लिए एक महत्वपूर्ण निर्यात बाजार बन चुका है।

आजकल

भारत-इंडोनेशिया में बढ़ती साझेदारी

भारतीय प्रधानमंत्री की प्रस्तावित इंडोनेशिया यात्रा ऐसे समय हो रही है, जब हिंद महासागर वैश्विक राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र बनता जा रहा है। ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री व्यापार, आपूर्ति शृंखलाएं और महाशक्तियों की बढ़ती प्रतिस्पर्धा- इन सबका केंद्र अब यही क्षेत्र है। ऐसे समय में भारत और इंडोनेशिया के बीच बढ़ती निकटता को केवल एक और राजनयिक घटना के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह बदलती विश्व व्यवस्था में उभरती एक नई साझेदारी का संकेत है

गौतम कुमार झा
असिस्टेंट प्रोफेसर, भाषा, संस्कृति और साहित्य अध्ययन विद्यालय, जेएनयू

प्रतीकात्मक

पिछले वर्ष इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो भारत के गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि थे। इसके बाद दोनों देशों के बीच उच्चस्तरीय यात्राओं, मंत्रिस्तरीय बैठकों, रक्षा संवाद, समुद्री सहयोग और आर्थिक भागीदारी में उल्लेखनीय तेजी आई है। दोनों देशों के विदेश मंत्रालयों के बीच नियमित संवाद हो रहे हैं और सहयोग का दायरा व्यापार से आगे बढ़कर स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यटन, संस्कृति और विज्ञान तक फैल चुका है। यह स्पष्ट संकेत है कि दिल्ली और जकार्ता अपने संबंधों को नई दिशा देना चाहते हैं।

स्वाभाविक प्रश्न है कि भारत की विदेश नीति में इंडोनेशिया का महत्व अचानक इतना क्यों बढ़ गया है? इसका पहला उत्तर हिंद महासागर और इंडो-पैसिफिक की बदलती भू-राजनीति में मिलता है। भारत और इंडोनेशिया, दोनों हिंद और प्रशांत महासागरों को जोड़ने वाले समुद्री मार्गों पर स्थित लोकतांत्रिक देश हैं। मलक्का जलडमरूमध्य से होकर दुनिया के समुद्री व्यापार का बड़ा हिस्सा गुजरता है। यह दोनों ही देशों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है।

भारत और इंडोनेशिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार 30 अरब डालर तक पहुंच चुका है। इंडोनेशिया, आसियान में भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में है और भारत भी इंडोनेशिया के लिए एक महत्वपूर्ण निर्यात बाजार बन चुका है। इसके बावजूद भारत को इंडोनेशिया के साथ बड़ा व्यापार घाटा उठाना पड़ता है। यदि केवल आर्थिक लाभ ही विदेश नीति का आधार होता, तो इतनी असमानता दोनों देशों को और करीब लाने के बजाय दूरी पैदा करती। स्पष्ट है कि इस संबंध की बुनियाद कहीं अधिक गहरी है। भारत के राजदूत संदीप चक्रवर्ती भी इस रिश्ते को केवल समकालीन भू-राजनीति के चश्मे से नहीं देखते। उनके अनुसार भारत-इंडोनेशिया संबंध आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं से कहीं पुराना है।

वस्तुतः हाल के वर्षों में दोनों देशों के संबंधों का दायरा उल्लेखनीय रूप से विस्तृत हुआ है। आयुर्वेद और इंडोनेशिया की पारंपरिक चिकित्सा पद्धति 'जामू' के बीच सहयोग, जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधनों पर संयुक्त अनुसंधान, विश्वविद्यालयों के बीच बढ़ती भागीदारी, थिंक टैंकों का संवाद और समुद्री विरासत पर साझा अध्ययन इस बात के संकेत हैं कि साझेदारी अब केवल विदेश मंत्रालयों या रक्षा प्रतिष्ठानों तक सीमित नहीं रही। दोनों देश समझ रहे हैं कि भविष्य की कूटनीति केवल सैन्य शक्ति और व्यापारिक आंकड़ों से संचालित नहीं होगी, उसकी मजबूती ज्ञान, नवाचार और समाजों के बीच बढ़ते विश्वास से तय होगी।

स्पेसपोर्ट परियोजना : इंडोनेशिया के पूर्वी प्रांत पापुआ के बियाक द्वीप में प्रस्तावित एक स्पेसपोर्ट परियोजना है। भूमध्य रेखा के निकट स्थित होने के कारण बियाक उपग्रह प्रक्षेपण के लिए दुनिया के सबसे उपयुक्त स्थानों में गिना जाता है। भारत के लिए यह केवल एक अंतरिक्ष परियोजना नहीं हो सकती। पिछले छह दशकों में इसरो ने कम लागत, विश्वसनीयता और प्रौद्योगिकीय दक्षता के आधार पर वैश्विक प्रतिष्ठा अर्जित की है। यदि भारत अपनी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, प्रक्षेपण अनुभव और संस्थागत क्षमता के साथ इंडोनेशिया के इस प्रयास का भागीदार बनता है, तो इससे दोनों देशों के संबंधों में एक नया अध्याय जुड़ सकता है।

वैश्विक राजनीति का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। बहुपक्षीय संस्थाएं पहले जैसी प्रभावी नहीं रह गई हैं और बड़ी शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा तेज हो रही है। ऐसे समय में भारत और इंडोनेशिया जैसे देशों के सामने चुनौती केवल अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने की नहीं, बल्कि सहयोग का ऐसा माडल विकसित करने की भी है जो विकास, विश्वास और साझी समृद्धि पर आधारित हो।

भारत और इंडोनेशिया की समानताएं केवल इतिहास तक सीमित नहीं हैं। दोनों विशाल लोकतंत्र हैं। दोनों के पास युवा आबादी है, समृद्ध जैव विविधता है, लंबी समुद्री सीमाएं हैं और वैश्विक दक्षिण की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता है। जलवायु परिवर्तन, समुद्री संसाधनों का संरक्षण, ब्लू इकोनमी, खाद्य सुरक्षा, डिजिटल प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में दोनों देश मिलकर ऐसे समाधान विकसित कर सकते हैं, जिनका लाभ पूरे क्षेत्र को मिले।

भारत की विदेश नीति आज ऐसे दौर में प्रवेश कर रही है, जहां उसे केवल सामरिक संतुलन नहीं, बल्कि वैचारिक नेतृत्व भी स्थापित करना है। भारत यदि स्वयं को एक सभ्यतागत राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करता है, तो उसकी विदेश नीति में भी उस दृष्टि का प्रतिबिंब दिखाई देना चाहिए। इंडोनेशिया ऐसा देश है, जहां यह दृष्टि स्वाभाविक रूप से विकसित हो सकती है, क्योंकि दोनों समाजों के बीच इतिहास केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान की वास्तविकता और भविष्य की संभावना भी है।

इक्कीसवीं सदी का इंडो-पैसिफिक केवल युद्धपोतों, सैन्य गठबंधनों और शक्ति-संतुलन से परिभाषित नहीं होगा। उसकी दिशा वे देश तय करेंगे, जो इतिहास, भूगोल, विज्ञान और समाज चारों को साथ लेकर चल सकें। भारत और इंडोनेशिया ऐसी ही दो प्राचीन सभ्यताएं हैं। यदि दोनों अपने साझा इतिहास को आधुनिक विज्ञान, समुद्री सुरक्षा, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, उच्च शिक्षा और सांस्कृतिक सहयोग से जोड़ने में सफल होते हैं, तो यह केवल द्विपक्षीय संबंधों की सफलता नहीं होगी। यह वैश्विक दक्षिण के लिए सहयोग का एक नया प्रतिमान प्रस्तुत करेगी। प्रधानमंत्री मोदी की प्रस्तावित यात्रा का वास्तविक महत्व इसी संभावना में निहित है।

हिंद महासागर में भारत की बढ़ती सामरिक शक्ति

डा. लोकेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, सत्यवती कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

हिंद महासागर क्षेत्र वर्तमान में वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा सुरक्षा का प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है। विश्व के लगभग 80 प्रतिशत समुद्री तेल व्यापार तथा एक-तिहाई वैश्विक समुद्री व्यापार का आवागमन हिंद महासागर के माध्यम से होता है। यही कारण है कि इस क्षेत्र में स्थित छोटे द्वीपीय देशों का सामरिक महत्व निरंतर बढ़ रहा है। लगभग 115 द्वीपों वाला देश सेशेल्स भौगोलिक दृष्टि से भले ही एक छोटा राष्ट्र हो, किंतु इसका लगभग 13 लाख वर्ग किलोमीटर का विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र तथा अफ्रीका, एशिया और मध्य-पूर्व को जोड़ने वाले समुद्री मार्गों के निकट स्थित होना इसे वैश्विक शक्ति-प्रतिस्पर्धा का केंद्र बनाता है।

भारत और सेशेल्स के संबंधों की नींव ऐतिहासिक समुद्री व्यापार, भारतीय प्रवासी समुदाय तथा सांस्कृतिक निकटता पर आधारित रही है। वर्ष 1976 में सेशेल्स की स्वतंत्रता के बाद भारत ने उसे एक विश्वसनीय विकास साझेदार के रूप में सहयोग दिया। भारत-सेशेल्स संबंधों का सबसे महत्वपूर्ण आयाम समुद्री सुरक्षा है। भारत ने हिंद महासागर क्षेत्र को सहयोग, सुरक्षा और साझा विकास का क्षेत्र बनाने के उद्देश्य से यह नीति समुद्री सुरक्षा, क्षमता निर्माण, क्षेत्रीय सहयोग तथा नियम-आधारित समुद्री व्यवस्था पर आधारित है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हालिया सेशेल्स यात्रा कई दृष्टियों से ऐतिहासिक रही। वस्तुतः ब्लू इकोनमी वर्तमान में भारत-सेशेल्स संबंधों का सबसे उभरता हुआ क्षेत्र है। मत्स्य संसाधन, समुद्री जैव विविधता, समुद्री पर्यटन, नवीकरणीय ऊर्जा तथा समुद्री वैज्ञानिक अनुसंधान दोनों देशों की प्राथमिकताओं में शामिल हैं। सेशेल्स जैसे छोटे द्वीपीय देशों के लिए जलवायु परिवर्तन अस्तित्व का प्रश्न बन चुका है। समुद्र-स्तर में वृद्धि, तटीय कटाव तथा चक्रवात जैसी प्राकृतिक चुनौतियां इनके विकास को प्रभावित कर रही हैं। भारत ने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन सहयोग के माध्यम से सेशेल्स को निरंतर समर्थन प्रदान किया है। भविष्य में हरित ऊर्जा, समुद्री पारिस्थितिकी संरक्षण तथा जलवायु अनुकूल अवसंरचना के क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाएं हैं।

भारत और सेशेल्स के आर्थिक व्यापार, निवेश, विकास सहायता तथा क्षमता निर्माण पर आधारित हैं। भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग कार्यक्रम, छात्रवृत्तियां, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, ई-गवर्नेंस, स्वास्थ्य सेवाएं तथा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वर्तमान में डिजिटल भुगतान, साइबर सुरक्षा तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित समुद्री निगरानी जैसे नए क्षेत्रों में भी दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ रहा है।

भारत हिंद महासागर क्षेत्र में एक विश्वसनीय, उत्तरदायी और दीर्घकालिक समुद्री साझेदार के रूप में अपनी भूमिका को और सुदृढ़ करना चाहता है। आने वाले वर्षों में समुद्री डोमेन जागरूकता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित समुद्री सुरक्षा, हरित ऊर्जा, ब्लू इकोनमी, डिजिटल संपर्क, आपदा प्रबंधन तथा बहुपक्षीय संस्थाओं जैसे हिंद महासागर रिम एसोसिएशन, कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन, हिंद महासागर आयोग तथा संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से सहयोग दोनों देशों के संबंधों को ऊंचाइयों तक ले जाएगा।

भारत और सेशेल्स की रणनीतिक साझेदारी केवल द्विपक्षीय हितों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हिंद महासागर क्षेत्र में शांति, सुरक्षा, सतत विकास एवं नियम आधारित समुद्री व्यवस्था तथा वैश्विक दक्षिण के सशक्तीकरण की दिशा में एक प्रभावशाली और अनुकरणीय माडल के रूप में उभर रही है। भारत-सेशेल्स संबंधों का महत्व पहले की तुलना में कहीं अधिक व्यापक, बहुआयामी और रणनीतिक हो गया है।

खरी-खरी

दलाल की हस्ती है कि मिटती नहीं

मनीष कुमार चौधरी

दलाल किसे कहें! सृष्टि में जब-जब किसी का काम रुका है, तब-तब दलाल ही संकट मिटाने के लिए आगे आया है। वह विघ्नहर्ता है, संकट मोचक है। काम से जुड़े सारे पात्र यानी अधिकारी-कर्मचारी बदल जाएं, पर दलाल की हस्ती है कि मिटती नहीं। इसे कोई शस्त्र (कानून) मिटा नहीं सकता। न हवा सुखा सकती है, न आग जला सकती है। जिस तरह आत्मा शरीर बदलता है, कभी मरता नहीं। ठीक उसी तरह दलाल नए-नए रूप में जन्म लेता रहता है। आप इसे दल्ला कहें या बिचौलिया, कमीशनखोर कहें या मध्यस्थ, कोई फर्क नहीं पड़ेगा। सभ्य भाषा में उसे एजेंट या डीलर भी कह दें, काम उसका वही रहता है- दलाली करना।

इंसान परेशानी में पड़ता है तो भगवान को बाद में, पहले दलाल को याद करता है। दरअसल दलाल भगवान का ही रूप होता है। कभी-कभी तो वह आपको ऐसी मुसीबतों से निकाल लाता है जिसके लिए भगवान को याद करके आप थक गए होते हैं। जन्म से लेकर मरने तक की प्रक्रिया में दलाल सक्रिय भूमिका निभाता है। जन्म का प्रमाण-पत्र हो या मरने का सर्टिफिकेट, दलाल से तो साबका पड़ेगा ही।

पुराने समय में राजा के दरबार में न्याय की गुहार लगाने के लिए द्वारपाल दलाल होता था। प्रजा उसे बिना दलाली दिए राजा से मिल ही नहीं सकती थी। दलाल है, दलाली तो वह लेगा ही। बेचने वाला कोई हो, खरीदने वाला कोई हो, दलाल को अपनी दलाली से मतलब। उसे तो दोनों पार्टियों से अपनी दलाली मिलनी है सो वह लेकर रहेगा।

सत्ता के गलियारे क्या, पूरा देश एक दलाल स्ट्रीट है। वोटर भी मुगालते में न रहें, थोड़े-बहुत तो वे भी हैं ही। नेता वोटों की दलाली ले रहे हैं तो वे भी नेता की रेवड़ी (दलाली) लपकने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे। भले ही सिस्टम चलाने के लिए हमने इन दलाल पात्रों के नाम कुछ भी रख दिए हों, होते वे दलाल ही हैं। यह एक संस्कृति है। फर्क सिर्फ इतना है कि पहले यह काम थोड़ा परदे की आड़ में होता था, अब खुल्लम-खुल्ला। यानी दलाल था, दलाल है, दलाल रहेगा।

X पोस्ट

दो दिन ईरान पर हमले करना और फिर अगले चार दिन बातचीत और उसके मुताबिक बाजार में उतार-चढ़ाव! ऐसा लगता है डोनाल्ड ट्रंप ने युद्ध को ही अपना नया बिजनेस माडल बना दिया है।
मधुरेंद्र कुमार@Madhurendra13

एक ही दिन दो शर्मनाक पराजय। महिला विश्व कप में दक्षिण अफ्रीका के बाद आस्ट्रेलिया से हारकर भारत सेमीफाइनल की होड़ से बाहर हुआ। डब्ल्यूपीएल की सफलता ने महिला क्रिकेटरों के लिए समृद्धि के द्वार तो खोले, लेकिन सुधार की बयार नदारद दिखती है। पुरुष टीम ने तो आयरलैंड के खिलाफ शृंखला गंवा दी। मुश्किल पिच पर जीत दूभर दिखी।
सुशील दोशी@RealSushilDoshi

अकाल तख्त के समक्ष पंजाब के सभी सिख विधायकों की पेशी हुई। सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी, विपक्षी कांग्रेस और अकाली दल के सिख विधायक अकाल तख्त पहुंचे। क्या ऐसा हो सकता है कि कृष्ण जन्मभूमि में यूपी के सभी हिंदू विधायकों की पेशी हो और उन्हें कहा जाए कि वे कृष्ण जन्मभूमि मुक्ति अभियान के लिए कार्य करें।
अशोक श्रीवास्तव@AshokShrivasta6

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या अमेरिका और ईरान के बीच शांति समझौता खटाई में पड़ता दिख रहा है?

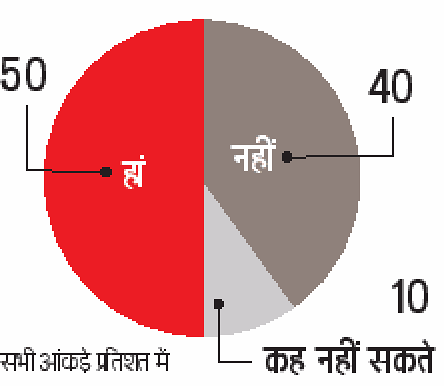

सभी आंकड़े प्रतिशत में

आज का सवाल

क्या श्रेयस अय्यर टी-20 कप्तान के रूप में नाकाम होते दिख रहे हैं?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है

जनपथ

स्वप्न दिखाने चल पड़े हैं भाई अखिलेश,
समझ रहे वह मूर्ख है जैसे सारा देश।
जैसे सारा देश दूध का जला पतीला,
देगा उनको सौंप भूलकर उनकी लीला!
करके राम विरोध लगे थे रक्त बहाने,
अब मंदिर के नाम चले वे स्वप्न दिखाने!!
-ओम प्रकाश तिवारी

कर्ज के बोझ पर 'विकसित बंगाल' का सपना

जयकृष्ण वाजपेयी
राज्य ब्यूरो प्रमुख, बंगाल

बंगाल डायरी

बंगाल की राजनीति में लंबे समय बाद हुए सत्ता परिवर्तन के बाद 22 जून को प्रस्तुत हुआ 2026-27 का पहला पूर्ण बजट केवल आंकड़ों का दस्तावेज नहीं, बल्कि एक व्यापक वैचारिक और प्रशासनिक बदलाव का दावा है। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में और वित्त मंत्री स्वपन दासगुप्ता द्वारा प्रस्तुत 4.38 लाख करोड़ रुपये का यह बजट 'पंचशक्ति' (सेवा-शक्ति : सुशासन और नागरिक कल्याण पर केंद्रित। युवा-शक्ति : रोजगार, शिक्षा और तकनीकी नवाचार को समर्पित। नारी-शक्ति : आर्थिक स्वतंत्रता, सुरक्षा और अधिकारिता सुनिश्चित करना। कृषि एवं ग्रामीण-शक्ति : किसानों की आय बढ़ाना और बुनियादी ढांचा मजबूत करना। उद्योग-शक्ति : औद्योगीकरण और निवेश के द्वार खोलना) के माध्यम से 'विकसित बंगाल' का प्रारूप प्रस्तुत करता है। लेकिन इस महत्वाकांक्षी दृष्टि के पीछे छिपी आर्थिक चुनौतियां और राजनीतिक रणनीतियां इसे एक जटिल, बहुआयामी दस्तावेज बना देती हैं।

सबसे पहले, इस बजट का मूल स्वर स्पष्ट है- यह केवल कल्याणकारी योजनाओं का विस्तार नहीं, बल्कि 'सिस्टम करेक्शन' का प्रयास भी है। पिछली सरकारों से विरासत में मिले 8.15 लाख करोड़ रुपये के भारी कर्ज के बावजूद सरकार ने राजकोषीय अनुशासन पर जोर देते हुए राजस्व घाटे को 1.02 प्रतिशत और वित्तीय घाटे को 2.91 प्रतिशत तक सीमित रखने का लक्ष्य रखा है। यह संकेत देता है कि सरकार खर्च बढ़ाने के साथ-साथ आर्थिक विश्वसनीयता बनाए रखने की कोशिश कर रही है।

इस बजट का सबसे मजबूत और स्पष्ट राजनीतिक आयाम रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के जरिये जनाधार को मजबूत करना है। एक लाख सरकारी नौकरियों की घोषणा- जिसमें 33 प्रतिशत महिलाओं के लिए आरक्षण- न केवल युवाओं की बेरोजगारी की चिंता के समाधान के रूप में है, बल्कि प्रशासनिक पारदर्शिता की बहाली का भी दावा करती है, क्योंकि भर्ती प्रक्रिया को यूपीएससी जैसी संरचना के तहत लाने की बात कही गई है। इसके साथ ही बेरोजगार युवाओं के लिए मासिक भत्ता, ग्रासरूट कर्मियों के वेतन में वृद्धि और पेंशन योजनाओं का विस्तार- ये सभी कदम उस वर्ग को सीधे राहत देने की कोशिश हैं, जो लंबे समय से असंतोष का केंद्र रहा है।

विधानसभा में बजट पेश करने के बाद शुभेंदु अधिकारी (बाएं) और स्वपन दासगुप्ता। फाइल

महिला सशक्तीकरण को इस बजट में अभूतपूर्व प्राथमिकता दी गई है। 'अन्नपूर्णा योजना' के तहत तीन हजार रुपये मासिक सहायता, छात्राओं को 50 हजार रुपये की एकमुश्त मदद और बसों में मुफ्त यात्रा जैसी योजनाएं स्पष्ट रूप से महिला मतदाताओं को केंद्र में रखकर बनाई गई हैं। यह माडल पूर्ववर्ती 'लक्ष्मी भंडार' योजना का एक विस्तारित और अधिक आक्रामक संस्करण प्रतीत होता है, जो सामाजिक सुरक्षा और राजनीतिक लाभ- दोनों को साधने की कोशिश करता है।

हालांकि, यह बजट केवल लोकलुभावन योजनाओं तक सीमित नहीं है। इसका दूसरा बड़ा स्तंभ है- इंफ्रास्ट्रक्चर और औद्योगिक पुनरुत्थान। इस बजट का एक और महत्वपूर्ण पहलू है प्रशासनिक सुधार। 'आपकी सरकार आपके पास' जैसी पहल, टोल-फ्री शिकायत प्रणाली, नए जिलों का गठन और पुलिस व्यवस्था में सुधार- ये सभी कदम शासन को अधिक जवाबदेह और विकेंद्रीकृत बनाने की दिशा में हैं। कोलकाता को एक पूर्ण प्रशासनिक जिला बनाने का निर्णय भी इसी व्यापक सोच का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य निर्णय-प्रक्रिया को जमीनी स्तर तक ले जाना है। इसके साथ ही 'सिंडिकेट राज' और कथित भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त रुख इस बजट को राजनीतिक रूप से और अधिक धार देता है। यदि सरकार वास्तव में व्यवसायों को 'तोलाबाजी' और अवैध वसूली से मुक्त कराने में सफल होती है, तो यह निवेश के माहौल में बड़ा बदलाव ला सकता है। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि ऐसे वादों की सफलता पूरी तरह क्रियान्वयन पर निर्भर करती है।

फिर भी, इस पूरे बजट के केंद्र में एक बड़ा विरोधाभास है। एक तरफ सरकार व्यापक कल्याणकारी योजनाओं के जरिये सामाजिक आधार को मजबूत कर रही है, तो दूसरी तरफ बड़े पैमाने पर पूंजीगत निवेश के जरिये दीर्घकालिक आर्थिक विकास का दावा कर रही है। यह संतुलन साधना आसान नहीं है- खासकर तब, जब राज्य पहले से ही भारी कर्ज के बोझ तले दबा हो।

अंततः यह बजट एक स्पष्ट संदेश देता है- बदलाव, पुनर्निर्माण और राजनीतिक पुनर्संरचना का। लेकिन बंगाल की जनता अब केवल घोषणाओं से संतुष्ट नहीं होगी। उसे परिणाम चाहिए- नौकरियां, निवेश, पारदर्शिता और वास्तविक विकास। 'विकसित बंगाल' का यह सपना कागज पर जितना आकर्षक दिखता है, जमीन पर उतना ही कठिन साबित होगा। यही इस बजट की सबसे बड़ी चुनौती और सबसे बड़ी परीक्षा है।

शांति और विकास का संदेश

छत्तीसगढ़ डायरी

डा. सुनील गुप्ता
संपादकीय प्रभारी, बिलासपुर

बस्तर आज एक नए दौर का साक्षी बन रहा है। वर्षों तक हिंसा, भय और असुरक्षा की छाया में जीने वाला यह क्षेत्र अब शांति, विश्वास और विकास की नई कहानी लिख रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानो बस्तर की धरती पर विकास का नया सूरज उदित हुआ है, जिसकी किरणें हर गांव और हर परिवार तक आशा का संदेश लेकर पहुंच रही हैं। इस परिवर्तन को केवल आंकड़ों या योजनाओं से नहीं, बल्कि यहां के लोगों के चेहरों की मुस्कान से महसूस किया जा सकता है।

बस्तर और छत्तीसगढ़ ने वह कठिन दौर भी देखा है, जब माओवादी हिंसा ने एक पूरी पीढ़ी का भविष्य प्रभावित कर दिया था। विकास की गति थम गई थी, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसी मूलभूत सुविधाएं भी लोगों की पहुंच से दूर होती चली गई थीं। भय का ऐसा वातावरण था कि सामान्य जनजीवन भी असामान्य बन गया था। ऐसे समय में देश के सुरक्षा बलों और स्थानीय पुलिस के जवानों ने अपने अदम्य साहस, कर्तव्यनिष्ठा और सर्वोच्च बलिदान से शांति की नींव रखने का कठिन कार्य किया। उनके त्याग और समर्पण को सदैव सम्मान के साथ स्मरण किया जाएगा। आज बस्तर में जो शांति और विकास की नई आहट सुनाई दे रही है, उसके पीछे इन वीर जवानों का अमूल्य योगदान है।

प्राकृतिक सौंदर्य, घने जंगलों और अपार खनिज संपदा से समृद्ध बस्तर को छत्तीसगढ़ का मुकुट कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। लंबे समय तक सुरक्षा की चुनौती के कारण इस क्षेत्र की वास्तविक संभावनाएं सामने नहीं आ सकीं। किंतु अब परिस्थितियां बदल रही हैं। सुरक्षा व्यवस्था मजबूत होने के साथ-साथ प्रशासन और सरकार भी गांव-गांव तक पहुंचने का प्रयास कर रही है। वह समय दूर नहीं जब स्थानीय पुलिस और प्रशासन पूरी तरह जनसहभागिता के साथ विकास को नई दिशा देंगे और बस्तर अपनी नई पहचान के साथ देश के सामने उभरेगा। इस सकारात्मक बदलाव का सबसे जीवंत उदाहरण है किसकोड़ो गांव। कभी यह गांव माओवादी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र माना जाता था। यहां तथाकथित जन अदालतें लगती थीं और भय का वातावरण बनाया जाता था। देश-दुनिया में इस गांव की पहचान हिंसा और दहशत के प्रतीक के रूप में बन चुकी थी। लेकिन आज वही किसकोड़ो परिवर्तन की नई इबारत लिख रहा है। यह बदलाव केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक परिवर्तन का भी प्रतीक है।

उपमुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री विजय शर्मा का हाल ही में किसकोड़ो गांव पहुंचना और ग्रामीणों के बीच जमीन पर बैठकर उनकी समस्याएं सुनना इस परिवर्तन का महत्वपूर्ण संकेत माना जा सकता है। उन्होंने न केवल लोगों की बातें गंभीरता से सुनीं, बल्कि उनकी समस्याओं के समाधान का भरोसा भी दिलाया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि उन्होंने किसकोड़ो को आदर्श ग्राम बनाने का संकल्प व्यक्त किया। यह केवल एक गांव के विकास की घोषणा नहीं, बल्कि पूरे बस्तर के लिए विश्वास और भागीदारी का संदेश है। सरकार का यह प्रयास स्पष्ट करता है कि अब विकास केवल शहरों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि दूरस्थ और कभी उपेक्षित रहे गांव भी उसकी मुख्यधारा में शामिल होंगे। सड़क, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, रोजगार और संचार जैसी सुविधाओं का विस्तार तभी सार्थक होगा, जब लोगों का सरकार पर भरोसा मजबूत होगा। किसकोड़ो में हुई चौपाल इसी भरोसे को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह संदेश भी है कि सरकार स्वयं लोगों के द्वार तक पहुंचेगी और उनकी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देगी।

शांति और विकास एक दूसरे के पूरक : शांति और विकास एक-दूसरे के पूरक हैं। जहां शांति होती है, वहीं निवेश, शिक्षा, पर्यटन और रोजगार के अवसर विकसित होते हैं। बस्तर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, जनजातीय परंपराएं, प्राकृतिक पर्यटन स्थल और हस्तशिल्प देश-दुनिया के आकर्षण का केंद्र बन सकते हैं। यदि विकास की वर्तमान गति बनी रही, तो आने वाले वर्षों में बस्तर केवल अपनी प्राकृतिक संपदा के लिए ही नहीं, बल्कि समावेशी विकास और सामाजिक परिवर्तन के माडल के रूप में भी पहचाना जाएगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि शासन, प्रशासन, सुरक्षा बल और स्थानीय समाज मिलकर इस सकारात्मक वातावरण को बनाए रखें। विकास योजनाओं में जनभागीदारी बढ़े, युवाओं को शिक्षा और रोजगार के बेहतर अवसर मिले तथा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास किए जाएं।

उत्तर बस्तर कांकेर प्रवास के दौरान ग्रामीणों से संवाद करते उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा। जनसंपर्क

यही तो नया बस्तर है : बस्तर की मुस्कुराहट आज केवल एक क्षेत्र की खुशी नहीं, बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ की नई उम्मीद है। यह मुस्कुराहट बताती है कि विश्वास, संवाद, सुरक्षा और विकास के समन्वित प्रयासों से सबसे कठिन परिस्थितियों को भी बदला जा सकता है। आने वाला समय निश्चित रूप से उस बस्तर का होगा, जहां बंदूकों की आवाज नहीं, बल्कि बच्चों की हंसी, किसानों की समृद्धि और विकास की नई गाथा सुनाई देगी। यही नया बस्तर है, यही नई पहचान है और यही शांति एवं विकास का सच्चा संदेश भी।

प्रिस्टीन लाजिस्टिक्स ने आइपीओ दस्तावेज जमा किए

नई दिल्ली : प्रिस्टीन लाजिस्टिक्स एंड इन्फ्राप्रोजेक्ट्स लिमिटेड ने आइपीओ के जरिये धन जुटाने के लिए सेबी के पास गोपनीय मार्ग के तहत प्रारंभिक दस्तावेज दाखिल किए हैं। इस व्यवस्था के तहत कंपनियां निर्गम के आकार समेत प्रस्ताव से जुड़ी जानकारी को शुरू में सार्वजनिक नहीं करती हैं। यह प्रक्रिया कंपनियों को नियामकीय सुझावों और बाजार की परिस्थितियों के अनुसार निर्गम की संरचना में बदलाव करने की सुविधा भी देती है। (प्रेट्र)

कंपनी ने परिचालन दक्षता बढ़ाने और ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के पांच स्टार्टअप को अपने साथ जोड़ा है।

– हिसाशी तेकुची, एमडी और सीईओ, मारुति सुजुकी इंडिया

संसेक्स	76,728.37	▼ 372.10
निफ्टी	23,946.25	▼ 109.75
सोना प्रति दस ग्राम	₹ 1,46,600	▲ ₹ 1,300
चांदी प्रति किलो ग्राम	₹ 2,24,000	▼ ₹ 2,000
डालर	₹ 94.51	▼ ₹ 0.06
क्रूड प्रति बैरल	$ 73.09	

पासपोर्ट बनवाना महंगा, गलत जानकारी देकर बैंक ग्राहक को नहीं बेच पाएंगे वित्तीय उत्पाद

एक जुलाई 2026 से देश में कई बड़े बदलाव लागू होने जा रहे हैं, जिनका सीधा असर आपकी जेब और आपके बैंक अकाउंट पर पड़ने वाला है। इन बदलावों में इनकम टैक्स रिटर्न भरने की आखिरी तारीख से लेकर आधार कार्ड, क्रेडिट कार्ड और पासपोर्ट से जुड़े कई नियम शामिल हैं। इसके अलावा आरबीआइ ने बैंक ग्राहकों को बड़ी राहत देते हुए मिस सेलिंग से जुड़ा एक नया नियम भी बनाया है। इन सभी नियमों के बारे में पहले से जान लेना बहुत जरूरी है ताकि आपको आगे चलकर किसी तरह का नुकसान नहीं उठाना पड़े और आप अपने पैसों का सही प्रबंधन कर सकें।

तत्काल पासपोर्ट 5000 में

अगर आप नया पासपोर्ट बनवाने की सोच रहे हैं तो आपके लिए यह जानना जरूरी है कि एक जुलाई से पासपोर्ट बनवाना महंगा हो जाएगा। विदेश मंत्रालय ने सामान्य और तत्काल दोनों ही श्रेणियों के शुल्क में वृद्धि करने का फैसला किया है। अब सामान्य पासपोर्ट बनवाने के लिए 1,500 की जगह 2,500 रुपये देने होंगे। तत्काल पासपोर्ट बनवाने के लिए 5,000 रुपये देने होंगे। पहले यह शुल्क 3,500 रुपये था। अब लोगों को नया पासपोर्ट बनवाने या पुराने पासपोर्ट को रीइश्यू कराने के लिए पहले के मुकाबले ज्यादा पैसे खर्च करने पड़ेंगे।

आइटीआर भरने की आखिरी तारीख का रखें ध्यान

वित्त वर्ष 2025-26 के लिए आइटीआर 1 और आइटीआर 2 दाखिल करने की आखिरी तारीख 31 जुलाई तय की गई है। अगर आप इस तय समयसीमा के अंदर अपना रिटर्न फाइल नहीं करते हैं, तो आपको जुर्माना भरना पड़ सकता है। देरी से रिटर्न भरने पर आपको अपनी पसंद के टैक्स रिजिम को चुनने में दिक्कत हो सकती है। वेतन पाने वाले कर्मचारी और वे लोग जिन्हें कैपिटल गेन, और अन्य ऐसी गैर कारोबारी आय होती है, जिसके लिए आडिट की जरूरत नहीं है, उन्हें इस तरह के फार्म भरने होते हैं।

आधार में ईमेल मुफ्त में करा सकेंगे अपडेट

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण ने आधार कार्ड में रजिस्टर्ड ईमेल आइडी को अपडेट कराने पर लगने वाले शुल्क को हटा लिया है। अभी तक इसके लिए 75 रुपये का शुल्क देना पड़ता था। अगर आधार एप का इस्तेमाल करके ईमेल आइडी अपडेट करते हैं, तो अगले छह महीने तक आपसे कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।

क्रेडिट कार्ड के नियम बदले

एसबीआइ कार्ड ने फोनपे एसबीआइ क्रेडिट कार्ड पर्पल व फोनपे एसबीआइ क्रेडिट कार्ड सेलेक्ट ब्लैक के रिवार्ड पाइंट्स के नियमों को बदल दिया है। अब इन पर रिवार्ड पाइंट कमाने की सीमा तय कर दी गई है और कुछ खास ट्रांजैक्शन पर रिवार्ड पाइंट नहीं मिलेगा।

बिना टिकट यात्रा पर भारी जुर्माना

अब ट्रेन में बिना टिकट यात्रा करने पर 250 से 500 रुपये तक का जुर्माना देना पड़ सकता है। महिला डिब्बों (कोच) में अनधिकृत रूप से यात्रा करने वाले पुरुष यात्रियों पर 2,500 रुपये का भारी जुर्माना लगाया जा सकता है।

यूपीआइ के जरिये निकाला जा सकेगा पीएफ

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) के जुलाई में अपने नए डिजिटल प्लेटफार्म ईपीएफओ 3.0 को लांच करने की उम्मीद है। इसके शुरू होने के साथ ईपीएफओ सब्सक्राइबर यूपीआइ के जरिये पीएफ का पैसा निकाल सकेंगे। नई व्यवस्था लागू होने के बाद पीएफ का पैसा निकालने में कुछ दिन नहीं, बल्कि चंद मिनट लगेंगे।

कारों की बढ़ने वाली हैं कीमतें

टाटा, किआ, एमजी और बीएमडब्ल्यू सहित कई वाहन कंपनियों ने एक जुलाई से अपने वाहनों की कीमतें बढ़ाने का एलान किया है। टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल ने अपने वाहनों की कीमत में 1.5 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी का एलान किया है। वहीं, टाटा मोटर्स कमर्शियल व्हीकल ने कीमतों को 2.5 प्रतिशत तक बढ़ाने की घोषणा की है।

मिस सेलिंग पर आरबीआइ की सख्ती

अक्सर देखा जाता है कि बैंक कर्मचारी ग्राहकों को गलत जानकारी देकर या गुमराह करके कोई भी वित्तीय उत्पाद या बीमा पालिसी बेच देते हैं। इसे मिस सेलिंग कहा जाता है। नए नियमों के मुताबिक, अगर किसी बैंक ने ग्राहक को गलत जानकारी देकर कोई उत्पाद बेचा है, तो बैंक को ग्राहक का पैसा वापस करना होगा।

सात जुलाई है टीडीएस जमा करने की आखिरी तारीख

अगर आयकर कानून, 2025 के प्रविधानों के तहत आकलन अधिकारी ने तिमाही आधार पर टीडीएस जमा करने की मंजूरी दी है तो अप्रैल-जून तिमाही के लिए टीडीएस जमा करने की आखिरी तारीख सात जुलाई है।

तत्काल टिकट के नियमों में भी बदलाव

आइआरसीटीसी के जरिये तत्काल टिकट बुक कराने के नियमों में भी बदलाव किया गया है। अब आनलाइन तत्काल टिकट बुक करने के लिए यूजर का आधार वेरिफिकेशन (आधार ओटीपी सत्यापन) अनिवार्य कर दिया गया है।

जागरण इन्फो

एक नजर में

तीन बैंकों ने केंद्र को दिया 7,023 करोड़ का लाभांश

नई दिल्ली : सार्वजनिक क्षेत्र के केनरा बैंक, बैंक आफ बड़ौदा और इंडियन बैंक ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए केंद्र सरकार को कुल 7,023 करोड़ रुपये का लाभांश दिया है। केनरा बैंक ने 2,397 करोड़ रुपये, बैंक आफ बड़ौदा ने 2,811 करोड़ और चेन्नई स्थित इंडियन बैंक ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को 1,815.05 करोड़ रुपये के लाभांश का चेक सौंपा। पिछले वित्त वर्ष में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को अच्छा लाभ हुआ है। इसके साथ ही उनके फंसे हुए कर्ज (एनपीए) का अनुपात भी कम हुआ है। (प्रेट्र)

आरईसी के पीएफसी में विलय को मंजूरी

नई दिल्ली : पावर फाइनेंस कारपोरेशन (पीएफसी) और आरईसी लिमिटेड के निदेशक मंडलों ने आरईसी के पीएफसी में विलय की योजना को मंजूरी दे दी है। विलय से एक ऐसी वित्तीय कंपनी बनेगी जिसका कुल कर्ज खाता 11 लाख करोड़ रुपये से अधिक का होगा। आरईसी के शेयरधारकों को 10-10 रुपये अंकित मूल्य वाले प्रत्येक चुकता 100 शेयर के बदले पीएफसी के 10-10 रुपये अंकित मूल्य के 88 चुकता शेयर जारी किए जाएंगे। ये शेयर उन शेयरधारकों को मिलेंगे, जिनके पास पीएफसी व आरईसी के निदेशक मंडलों द्वारा तय रिकार्ड तारीख पर शेयर होंगे। (प्रेट्र)

बजाज आटो का शेयर बायबैक एक जुलाई से

नई दिल्ली : बजाज आटो लिमिटेड का 5,632.8 करोड़ रुपये का शेयर पुनर्खरीद कार्यक्रम एक जुलाई, 2026 से शुरू होगा। कंपनी 10 रुपये अंकित मूल्य वाले 46.94 लाख तक पूर्ण चुकता शेयरों को 12,000 रुपये प्रति शेयर की दर से वापस खरीदेगी। यह पुनर्खरीद नकद भुगतान के माध्यम से की जाएगी और इसका कुल आकार अधिकतम 5,632.8 करोड़ रुपये होगा। कंपनी ने कहा कि यह कदम अतिरिक्त नकदी को प्रभावी और कुशल तरीके से शेयरधारकों को लौटाने की उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। (प्रेट्र)

औद्योगिक उत्पादन में मैन्युफैक्चरिंग का दबदबा

मजबूत मांग से मई में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक बढ़कर 5.1 प्रतिशत, अप्रैल में 4.9% रही थी वृद्धि

- पिछले साल के मुकाबले कैपिटल गुड्स के उत्पादन में 12.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई
- यह नई सीरीज पर आधारित औद्योगिक उत्पादन सूचकांक का दूसरा मासिक आंकड़ा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर के बेहतर प्रदर्शन से औद्योगिक उत्पादन मई में बढ़कर 5.1 प्रतिशत रहा। इससे पिछले महीने इसमें 4.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। यह नई सीरीज पर आधारित औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आइआइपी) का दूसरा मासिक आंकड़ा है।

सोमवार को सांख्यिकी विभाग की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक मई में मैन्यूफैक्चरिंग में पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 5.5 प्रतिशत तो कैपिटल गुड्स में 12.9 प्रतिशत का इजाफा रहा। कैपिटल गुड्स में बढ़ोतरी का मतलब है कि उद्यमी भविष्य में उत्पादन बढ़ाने और नए उत्पादन की तैयारी कर रहे हैं। मैन्युफैक्चरिंग में बढ़ोतरी मजबूत मांग से ही होती है। जानकारों का कहना है कि गत 14 जून को अमेरिकी राष्ट्रपति की तरफ से ईरान के साथ युद्ध विराम की घोषणा के बाद वैश्विक मांग में तेजी की उम्मीद की जा रही है। इससे आने वाले महीनों में औद्योगिक उत्पादन में और तेजी आएगी।

मई में बिजली के उत्पादन और गैस सप्लाई में 9.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी रही। बिजली की खपत मुख्य रूप से औद्योगिक सेक्टर में होती है। इस कारण बिजली की मांग अधिक रही। हालांकि मई में खनन के क्षेत्र में 1.6 प्रतिशत की गिरावट देखी गई। मैन्यूफैक्चरिंग के आंकड़ों को तैयार करने में 23 औद्योगिक समूह के आंकडों को लिया जाता है। इनमें से 16 समूह के औद्योगिक उत्पादन में सकारात्मक बढ़ोतरी रही।

मई में वाहन निर्माण में 14.5 प्रतिशत, इलेक्ट्रिक उपकरण में 20.8 प्रतिशत तो बेसिक मेटल में 4.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई। इस साल अप्रैल और मई दोनों महीनों में आटोमोबाइल बिक्री का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा। आंकड़ों के मुताबिक मई में प्राइमरी गुड्स में 2.6 प्रतिशत, इंटरमीडिएट गुड्स में 5.8 प्रतिशत, इंफ्रास्ट्रक्चर व निर्माण गुड्स में 5.9 प्रतिशत, कंज्यूमर ड्यूरेबल गुड्स में 7.2 प्रतिशत तो कंज्यूमर नान ड्यूरेबल गुड्स में 3.6 प्रतिशत का इजाफा रहा।

हमें उम्मीद है कि जून में आइआइपी वृद्धि और बेहतर होकर 5.7 प्रतिशत हो जाएगी, क्योंकि आधार प्रभाव वृद्धि की रफ्तार को बनाए रखने में मदद करेगा। कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से भी जून में ग्रोथ की रफ़्तार को सपोर्ट मिलने की संभावना है। **–मेधा अरोड़ा**, डायरेक्टर, इंडिया रेटिंग्स एंड रिसर्च

आने वाले महीनों में औद्योगिक उत्पादन में थोड़ी नरमी आएगी। मैन्यूफैक्चरिंग और कंस्ट्रक्शन सेक्टर को मुख्य आयात इनपुट पर ज्यादा लागत के दबाव का सामना करना पड़ रहा है। **–दीप्ति देशपांडे**, क्रिसिल की मुख्य अर्थशास्त्री

औद्योगिक उत्पादन को लेकर बहुत सकारात्मक होने से बचें

बैंक आफ बड़ौदा ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि पूरे साल भारत के औद्योगिक उत्पादन को लेकर बहुत ज्यादा सकारात्मक होने से बचना चाहिए, क्योंकि पश्चिम एशिया में भू-राजनीतिक तनाव कम होने के बावजूद सप्लाई चेन को पूरी तरह से सामान्य होने में कई महीने लग सकते हैं। हालांकि, रिपोर्ट में यह उम्मीद जताई गई है कि आने वाले महीनों में औद्योगिक उत्पादन में कुछ तेजी आएगी, क्योंकि पश्चिम एशिया में भू-राजनीतिक तनाव काफी कम हो गया है।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

स्टील क्षेत्र में ग्रीन टेक्नोलाजी के प्रोत्साहन के लिए नई योजना

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार स्टील बनाने की प्रक्रिया में स्वच्छ प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने के लिए 5,000 करोड़ रुपये की एक योजना लाने की तैयारी कर रही है। एक अधिकारी ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य घरेलू इस्पात उद्योग से होने वाले कार्बन उत्सर्जन को कम करना है। 'नेशनल स्ट्रैटेजी फार सस्टेनेबल सेकेंडरी स्टील' नामक इस योजना को अगले तीन महीने में शुरू किए जाने की संभावना है। मामले की जानकारी रखने वाले एक अन्य अधिकारी ने कहा, 'इस योजना को कैबिनेट की मंजूरी के लिए भेजा जा सकता है।'

योजना का लाभ देश के सभी इस्पात उत्पादकों को मिलेगा। हालांकि, इसके तहत आवंटित धनराशि का बड़ा हिस्सा द्वितीयक इस्पात उत्पादकों के लिए निर्धारित किया जाएगा। योजना का उद्देश्य इस्पात निर्माण की विभिन्न प्रक्रियाओं में स्वच्छ प्रौद्योगिकियों और वैकल्पिक सामग्रियों को बढ़ावा देना है, ताकि घरेलू इस्पात उद्योग से होने वाले कार्बन उत्सर्जन में कमी लाई जा सके। यह पहल इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत ने पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं और वह शुद्ध शून्य उत्सर्जन वाला देश बनने का लक्ष्य रखता है। इस्पात क्षेत्र सबसे अधिक कार्बन उत्सर्जन करने वाले उद्योगों में शामिल है। भारत में इस क्षेत्र का देश के कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 10-12 प्रतिशत हिस्सा है। देश में प्रति टन कच्चे इस्पात के उत्पादन पर 2.55 टन कार्बन डाइआक्साइड का उत्सर्जन होता है, जबकि वैश्विक औसत लगभग 1.9 टन है।

5,000 करोड़ की योजना का लाभ देश के सभी स्टील उत्पादकों को मिलेगा

एनआइआइएफ में 30 हजार करोड़ रुपये और डालेगी सरकार

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय कैबिनेट ने देश में इन्फ्रास्ट्रक्चर (बुनियादी ढांचे) के विकास को रफ्तार देने के लिए 'नेशनल इन्वेस्टमेंट एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड' (एनआइआइएफ) में 30 हजार करोड़ की नई पूंजी डालने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। इस फैसले के बाद एनआइआइएफ के लिए सरकार की कुल प्रतिबद्धता 60,000 करोड़ रुपये हो गई है।

एनआइआइएफ भारत सरकार समर्थित सावरेन एंकर फंड है, जिसे नेशनल इन्वेस्टमेंट एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड लिमिटेड पेशेवर तरीके से चलता और प्रबंधित करता है। भारत सरकार एनआइआइएफ में 49 प्रतिशत हिस्सेदार है। इस 30 हजार करोड़ की मदद से बड़े-बड़े सावरेन वेल्थ फंड्स और अंतरराष्ट्रीय संस्थागत निवेशकों (पेंशन फंड्स आदि) को भारत से जोड़ा जाएगा।

पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ने से सेंसेक्स-निफ्टी में गिरावट

मुंबई, प्रेट्र : अमेरिका और ईरान के बीच तनाव फिर से बढ़ने और कच्चे तेल के दाम में तेजी से सोमवार को स्थानीय शेयर बाजारों में गिरावट आई और दोनों मानक सूचकांक नुकसान में रहे। तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 372.10 अंक टूटकर 76,728.37 अंक पर बंद हुआ। वहीं निफ्टी 109.75 अंक की गिरावट के साथ 23,946.25 अंक पर बंद हुआ।

सेंसेक्स की कंपनियों में कोटक महिंद्रा बैंक में 3.24 प्रतिशत की गिरावट आई। बैंक ने कहा कि उसके एमडी और सीईओ अशोक वासवानी तीन साल का कार्यकाल पूरा होने पर पद छोड़ देंगे। इसके अलावा महिंद्रा एंड महिंद्रा, मारुति, इंटरग्लोब एविएशन, अल्ट्राटेक सीमेंट और लार्सन एंड टुब्रो में प्रमुख रूप से गिरावट रही।

सोना 1,300 बढ़ा चांदी 2,000 रुपये घटी

नई दिल्ली, प्रेट्र : कम कीमत पर खरीदारी के चलते सोमवार को राष्ट्रीय राजधानी में सोने की कीमत 1,300 रुपये बढ़कर 1,46,600 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई। हालांकि, चांदी की कीमतों में लगातार चौथे कारोबारी दिन में गिरावट दर्ज की गई और यह 2,000 रुपये घटकर 2,24,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई। विश्लेषकों ने सोने में आई इस रिकवरी का कारण हालिया गिरावट के बाद कम कीमत पर खरीदारी को बताया। जबकि विदेशी बाजारों की कमजोरी का असर जारी रहा।

जर्मन कंपनी नागारो का अधिग्रहण करेगी पर्सिस्टेंट सिस्टम्स

नई दिल्ली, प्रेट्र : पर्सिस्टेंट सिस्टम्स जर्मनी की डिजिटल इंजीनियरिंग कंपनी नागारो का 1.1 अरब यूरो (11,800 करोड़ रुपये) में अधिग्रहण करेगी। इस कदम से पर्सिस्टेंट एक वैश्विक एआइ आधारित डिजिटल इंजीनियरिंग कंपनी के रूप में उभरेगी।

यह विलय 2.9 अरब डालर की एआइ आधारित इंजीनियरिंग दिग्गज कंपनी बनाएगा, जिसमें 40 से अधिक देशों में 46,000 से अधिक कर्मचारी होंगे। इनमें भारत में 37,000, उत्तरी अमेरिका में लगभग 3,500 और यूरोप में लगभग 3,000 कर्मचारी शामिल हैं। उधर, नागारो के अधिग्रहण के एलान के बाद सोमवार को पर्सिस्टेंट सिस्टम्स के शेयरों में 11% से ज्यादा की गिरावट दर्ज की गई। कंपनी का मार्केट वैल्यूएशन 8,553.2 करोड़ घटकर 67,804.89 करोड़ रह गया।

विदेशी कर्ज बढ़कर 762.80 अरब डालर

- आरबीआइ ने कहा- एक वर्ष पहले की तुलना में 26.3 अरब डालर बढ़ा कर्ज
- विदेशी कर्ज में अमेरिकी डालर मूल्य वर्ग की हिस्सेदारी सबसे अधिक 55.5%

मुंबई, प्रेट्र : देश का कुल विदेशी ऋण मार्च, 2026 के अंत तक बढ़कर 762.8 अरब डालर पर पहुंच गया, जो एक वर्ष पहले की तुलना में 26.3 अरब डालर अधिक है। मार्च, 2026 के अंत तक भारत के विदेशी ऋण पर डालर के मजबूत होने से 24.6 अरब डालर का मूल्यांकन प्रभाव दर्ज किया गया। आरबीआइ ने कहा, 'यदि इस मूल्यांकन प्रभाव को शामिल नहीं किया जाए, तो मार्च, 2025 की तुलना में मार्च, 2026 के अंत तक विदेशी ऋण में 26.3 अरब डालर के बजाय 51 अरब डालर की वृद्धि होती।

केंद्रीय बैंक ने यह भी बताया कि विदेशी ऋण और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का अनुपात मार्च, 2026 के अंत में बढ़कर 20.8 प्रतिशत हो गया, जो एक साल पहले 19.8 प्रतिशत था। आरबीआइ के अनुसार, मार्च, 2026 के अंत में दीर्घकालिक ऋण (एक वर्ष से अधिक की मूल परिपक्वता वाला) 613.5 अरब डालर रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 11.6 अरब डालर अधिक है।

कुल विदेशी ऋण में अल्पकालिक ऋण (एक वर्ष तक की मूल परिपक्वता वाला) की हिस्सेदारी बढ़कर 19.6 प्रतिशत हो गई, जो मार्च, 2025 के अंत में 18.3 प्रतिशत थी। इसी प्रकार, विदेशी मुद्रा भंडार के मुकाबले अल्पकालिक ऋण का अनुपात भी बढ़कर 21.6 प्रतिशत हो गया, जो एक वर्ष पहले 20.1 प्रतिशत था। मार्च, 2026 के अंत में भारत के विदेशी कर्ज में अमेरिकी डालर मूल्य वर्ग के कर्ज की हिस्सेदारी सबसे अधिक 55.5 प्रतिशत रही। एक साल पहले के स्तर की तुलना में मार्च, 2026 के अंत में सामान्य सरकार का बकाया कर्ज घटा है, जबकि गैर-सरकारी कर्ज में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। विदेशी कर्ज के घटकों में ऋण की हिस्सेदारी सबसे अधिक 34.7 प्रतिशत रही। इसके बाद मुद्रा और जमा (22.3 प्रतिशत), व्यापार ऋण और अग्रिम (19 प्रतिशत) तथा ऋण प्रतिभूतियों का स्थान (16.1 प्रतिशत) रहा।

राष्ट्रीय फलक

सीसीआइ की एंटी-ट्रस्ट जांच पर एपल ने उठाए सवाल, लगाया कापी-पेस्ट का आरोप

प्रतिस्पर्धा कानून के उल्लंघन का मामला

- भारत के प्रतिस्पर्धा आयोग की जांच पर एपल ने कहा- प्रतिद्वंद्वियों के आरोप 'कापी-पेस्ट' किए गए

नई दिल्ली, रायटर : अमेरिकी टेक कंपनी एपल ने भारत की एंटी-ट्रस्ट जांच पर सवाल उठाते हुए आरोप लगाया है कि भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआइ) के जांच अधिकारियों ने प्रतिद्वंद्वी कंपनियों के दावों को बिना स्वतंत्र जांच के ही अपनी रिपोर्ट में शामिल कर लिया। कंपनी ने प्रतिस्पर्धा कानूनों के उल्लंघन के आरोपों को खारिज करते हुए जांच के निष्कर्षों को रद करने की मांग की है।

25 जून को सीसीआइ के समक्ष दाखिल दस्तावेजों में एपल ने कहा कि जांच रिपोर्ट स्वतंत्र विश्लेषण पर आधारित नहीं है, बल्कि प्रतिद्वंद्वी कंपनियों के आरोपों की "कापी-पेस्ट" भर है। यह मामला एपल के लिए भारत में सबसे बड़ी नियामकीय चुनौती माना जा रहा है। टिंडर की मूल कंपनी मैच ग्रुप, फोनपे और पेटीएम इस मामले में प्रमुख शिकायतकर्ताओं में शामिल हैं।

सीसीआइ की जांच रिपोर्ट में आरोप लगाया गया था कि एपल अपने आइओएस आपरेटिंग सिस्टम के एप स्टोर पर अनुचित कारोबारी व्यवहार कर रही है। हालांकि कंपनी ने इन आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि उसका एप स्टोर एक सुव्यवस्थित और सुरक्षित कारोबारी माडल पर आधारित है। यदि नियामकीय दबाव में इसमें बदलाव किए गए तो इससे पूरे इकोसिस्टम पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। कंपनी ने किसी भी जुर्माने या ऐसे आदेश का विरोध किया है।

स्वतंत्र जांच नहीं हुईः एपल : दस्तावेजों में एपल ने दावा किया कि सीसीआइ के महानिदेशक ने मैच ग्रुप, फोनपे और पेटीएम जैसे शिकायतकर्ताओं के तर्कों की जांच या पुष्टि नहीं की, बल्कि उन्हें लगभग हूबहू रिपोर्ट में शामिल कर लिया। कंपनी ने आरोप लगाया कि जांच रिपोर्ट में मोबाइल एप और गेमिंग बाजार से जुड़ा एक ग्राफ यूरोपीय संघ के 2024 के फैसले से बिना पर्याप्त विश्लेषण के उठा लिया गया, जबकि भारत की बाजार परिस्थितियां अलग हैं।

21 जुलाई को होगी सुनवाई : एपल के आरोपों पर सीसीआइ या उसके जांच अधिकारियों की ओर से प्रतिक्रिया नहीं आई है। आयोग के वरिष्ठ अधिकारी 21 जुलाई को सभी पक्षों के साथ बंद कमरे में इस मामले की सुनवाई करेंगे। सीसीआइ का आरोप है कि एपल दो वर्ष से अधिक समय से जांच प्रक्रिया में देरी कर रही है और समानांतर रूप से एंटी-ट्रस्ट कानूनों को चुनौती भी दे रही है।

पश्चिम एशिया को होने वाले निर्यात पर इंश्योरेंस कवर 30 सितंबर तक बढ़ा

नई दिल्ली, प्रेट्र : पश्चिम एशिया को होने वाले निर्यात पर भुगतान नहीं मिलने पर बढ़ा हुआ इंश्योरेंस कवर 30 सितंबर तक मिलता रहेगा।

इससे पहले, एक्सपोर्ट क्रेडिट गारंटी कारपोरेशन (ईसीजीसी) से क्रेडिट रिस्क इंश्योरेंस लेने वाले निर्यातकों के लिए बढ़ा हुआ कवर 16 मार्च से 15 जून के बीच पश्चिम एशिया भेजी शिपमेंट के लिए उपलब्ध था। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने एक अधिसूचना में कहा, "भारतीय निर्यातकों को मदद करने और पश्चिम एशिया में जारी संकट से पैदा होने वाली लाजिस्टिक्स चुनौतियों को कम करने के लिए ईपीएम (एक्सपोर्ट प्रमोशन मिशन) रिलीफ (रेजिलिएंस एंड लाजिस्टिक्स इंटरवेंशन फार एक्सपोर्ट फैसिलिटेशन) के तहत कंपोनेंट-2 की पात्रता समय-सीमा को 30 सितंबर 2026 तक बढ़ा दिया गया है।"

ग्लोबल स्किल्स चैलेंज में भारत का बजा डंका, तीन स्वर्ण सहित जीते पांच पदक

- स्वर्ण पदक जीतने वालों में बिहार के मौसम, दिल्ली की विष्णु प्रिया और कर्नाटक के पवन
- आस्ट्रेलिया में आयोजित प्रतियोगिता में शामिल हुए थे 16 देशों के 600 प्रतिभागी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

इस वर्ष शंघाई में होने जा रही वर्ल्ड स्किल्स प्रतियोगिता से पहले आस्ट्रेलिया में आयोजित ग्लोबल स्किल्स चैलेंज प्रतियोगिता में भारत ने डंका बजाकर अपनी मजबूत तैयारियों का संकेत दे दिया है। 16 देशों के 600 प्रतिभागियों के बीच अपने कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए टीम इंडिया ने तीन स्वर्ण सहित पांच पदक जीत लिए।

इसमें एक रजत और एक कांस्य पदक है। देश के लिए सोना जीतने वालों में बिहार, दिल्ली और कर्नाटक के युवा हैं। ग्लोबल स्किल्स चैलेंज 23 से 29 जून तक आयोजित किया गया। इसमें भारत, आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, चीन, यूएस, जापान, फ्रांस सहित 16 देशों के प्रतिभागी थे। भारत ने थ्रीडी डिजिटल गेम आर्ट, एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग, आटोमोबाइल टेक्नोलाजी, ब्यूटी थेरेपी, ब्रिकलेइंग, क्लाउड कंप्यूटिंग, फ्लोरिस्ट्री, ग्राफिक डिजाइन टेक्नोलाजी, हेयर ड्रेसिंग, हेल्थ एंड सोशल केयर, इंडस्ट्रियल मैकेनिक्स, पेंटिंग और डेकोरेटिंग, रेस्टोरेंट सर्विस, वाल एंड फ्लोर टाइलिंग और वेब टेक्नोलाजी जैसी कैटेगरी में हिस्सा लिया।

अपनी कौशल क्षमताओं का बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए कर्नाटक के पवन भद्रावती सुरेश ने एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग में, बिहार के मौसम कुमार गिरी ने क्लाउड कंप्यूटिंग में और दिल्ली की विष्णु प्रिया सुनील ने हेल्थ एंड सोशल केयर में स्वर्ण पदक जीता। महाराष्ट्र के हर्ष रमेश पवार ने थ्रीडी डिजिटल गेम आर्ट में रजत, जबकि हरियाणा की मुस्कान ने पेंटिंग और डेकोरेटिंग में कांस्य पदक जीता। भारत के अन्य प्रतिभागियों ने भी कई श्रेणियों में अच्छा प्रदर्शन करते हुए अंतरराष्ट्रीय मंच पर सराहना पाई। टीम इंडिया के प्रदर्शन पर बधाई देते हुए कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जयंत चौधरी ने कहा कि ग्लोबल स्किल्स चैलेंज 2026 में टीम इंडिया का यह प्रदर्शन देश के लिए गर्व का क्षण है। इस प्रतियोगिता ने अंतरराष्ट्रीय मानकों के बारे में बहुमूल्य अनुभव दिया है। शंघाई में होने जा रही वर्ल्ड स्किल्स प्रतियोगिता के लिए हमारी तैयारियों को मजबूत किया है।

लोकमानस

loksatta@expressindia.com

बदल हाच, की निगरगट्टपणा वाढला

'नक्की बदलले काय?' हा अग्रलेख (लोकसत्ता- २९ जून) वाचला. सरकारी आणि राजकीय पातळीवर भ्रष्टाचार हाच शिष्टाचार झाल्याचे आता सर्वमान्य झाले आहे. अशातही काहींना चुकीच्या गोष्टी सहन होत नाहीत आणि मग ते व्यवस्थेविरोधात रणशिंग फुंकण्याचे धाडस करतात. नवे भारत भूषण तयारच होऊ नयेत म्हणून मग त्यांना 'मानसिक रुग्ण', 'अर्बन नक्षली' अशी लेबले तरी लावली जातात किंवा 'स्वसंरक्षणा'साठी गोळीबार करत त्यांचा कायमचा 'बंदोबस्त' केला जातो. बदलले काय, तर - टेबलाखालून होत असलेला (भ्रष्ट) व्यवहार खुलेआम होऊ लागला, तो चव्हाट्यावर आणणाऱ्या माध्यमांची तोंडे बंद केली गेली, विरोधी बाकांवरील भ्रष्ट धुलाईयंत्रांत स्वच्छ झाले. जनआक्रोशाची दखल घेत आणि स्वतःची जबाबदारी स्वीकारत राजीनामा देणारे आज निगरगट्ट झाले आणि नागरिकशास्त्र जगणारा मध्यमवर्गीयही मुर्दाड-मतदार झाला.

■ **विजय भोसले,** घणसोली (नवी मुंबई)

लोकशाहीच्या मूलभूत मूल्यांवरच घाला

'नक्की बदलले काय?' हा अग्रलेख (लोकसत्ता- २९ जून) वाचला. घटनात्मक पदांवर विराजमान नेतृत्वाकडून कायद्याचे रक्षण आणि न्यायव्यवस्थेची पवित्रता जपली जाणे अपेक्षित असते. परंतु जर याच व्यवस्थेचा वापर करून किंवा तिच्या निष्क्रियतेमुळे, सामाजिक कार्यकर्त्यांना लक्ष्य केले जात असेल, तर ही केवळ कायदा-सुव्यवस्थेची समस्या राहत नाही तो लोकशाहीच्या मूलभूत मूल्यांवरच घातलेला घाला ठरतो. अन्यायाविरोधात आवाज उठवणाऱ्यांनाच गप्प बसवण्याचा प्रयत्न होत असेल, तर तो लोकशाही नव्हे, तर दडपशाहीचा मार्ग आहे. आज आपण महासत्ता होण्याची स्वप्ने रंगवत आहोत; पण त्या स्वप्नांची पायाभरणी जर असुरक्षित समाज, कमकुवत न्यायव्यवस्था आणि सत्तेच्या अहंकारावर होत असेल, तर ती स्वप्ने किती टिकाऊ ठरणार? आर्थिक प्रगती, तांत्रिक विकास किंवा जागतिक प्रतिमा या गोष्टी तेव्हाच अर्थपूर्ण ठरतात, जेव्हा देशातील सामान्य नागरिक आणि समाजासाठी लढणारे कार्यकर्ते सुरक्षित असतात. आज सत्ता टिकवण्यासाठी राजकीय पक्ष आणि नेते कोणत्या थराला जातील, याचा ठोस अंदाज उरलेला नाही. सत्तेचे संरक्षण हेच जर सर्वोच्च ध्येय असेल, तर मूल्य, कायदा आणि लोकशाही सारे काही दुय्यम ठरते. ही प्रवृत्ती केवळ धोकादायक नाही, तर भविष्यासाठी विनाशकारक आहे. म्हणूनच आज गरज आहे ती केवळ बदलाच्या घोषणांची नाही, तर व्यवस्थेतील प्रामाणिक, पारदर्शक आणि कठोर उत्तरदायित्वाची.

■ **संतोष वर्पे,** वावी, सिन्नर (नाशिक)

विरोधात कोणी बोलूच नये?

'नक्की बदलले काय?' हे संपादकीय वाचले. एखादी व्यक्ती सरकारच्या चुकीच्या बाजू उघड करून दाखवत असेल तर त्यात गैर काय? भारत भूषण तिवारीने असा कोणता गुन्हा केला होता की, त्याचा थेट एन्काऊंटर केला गेला. त्याने फक्त गावठी पिस्तूल संरक्षणासाठी बाळगली म्हणून? जर देशात सरकारच्या चुकीच्या धोरणांविरोधात कोणी उघडपणे बोलत असेल आणि त्यामुळे त्याचा 'स्वसंरक्षणार्थ' केलेल्या गोळीबारात मृत्यू होत असेल, तर सामान्यांनी जायचे कुठे? आधीच देशात सरकारच्या विरोधात बोलणे देशद्रोह ठरवला जाऊ लागला आहे. आमच्या विरोधात कोणी बोलूच नये असे सरकारला वाटत असावे. म्हणूनच तर विरोधी आवाज दाबला जातो वा एन्काऊंटर करून कायमचा शांत केला जातो.

■ **लक्ष्मण डोलारे,** सावरगांव (धाराशिव)

सत्ता अधिकाधिक निर्ढावत जाते...

'नक्की बदलले काय?' हा अग्रलेख वाचला. सत्ता मग ती लोकशाही पद्धतीने मिळवलेली असो, हुकूमशाही असो वा राजेशाही- जनतेने प्रश्न विचारलेले सत्तेला आवडत नाहीत. असे प्रश्न प्रस्थापित व्यवस्थेच्या मुळावरच येतील, अशी भीती त्यामागे असते हे निश्चित; नाहीतर त्या प्रश्नांची उत्तरे शोधण्याऐवजी प्रश्नकर्त्यांनाच 'ठोकण्या'ची वेळ आली नसती.

जुलमी ब्रिटिश सरकार असो किंवा लोकशाही मार्गाने सत्तेवर आलेली स्वतंत्र भारतातील सरकारे कोणालाही विरोधी सूर रुचत नाही. त्यामुळे असे आवाज दाबले जातात. कुटुंब पोरके होते. ज्याच्यासाठी केलेल्या संघर्षात जीव गमावलेला असतो, तो समाज अल्पावधीत सारे काही विसरून पुढे जातो. सत्ताधारी अधिकाधिक निर्ढावत जातात. 'पाण्यात राहून माशांशी वैर करू नये,' असे म्हणतात तेच खरे. मोठ्या माशांशी तर अजिबात करू नये.

■ **गायत्री साळवणकर,** कोल्हापूर

रडीचा डाव उलटला!

''**केप (व्हर्डे)** ऑफ गुड होप'!' हा 'अन्वयार्थ' (लोकसत्ता- ३० जून) वाचला. पाच लाखांच्या जवळपास लोकसंख्या असलेल्या 'केप व्हर्डे' या संघाची, विश्वचषक फुटबॉल स्पर्धेतली विस्मयकारक कामगिरी, हे दाखवून देते की दुर्दम्य इच्छाशक्ती ही उच्च दर्जाच्या सुविधांची गुलाम नाही. आपल्याला यामधून बोध घेण्यासारखे आहे. फिफाच्या मुसक्या आवळून इराणी संघाची सर्वदूर कोंडी करण्याचा डाव, जेणेकरून हा संघ व त्यातील खेळाडू सततच्या प्रदीर्घ प्रवासात व्यग्र राहतील व याचा त्यांच्या खेळावर विपरीत परिणाम होईल हा ट्रम्प प्रशासनाने घातलेला घाट म्हणजे रडीचा डाव नाही, तर वेगळे काय? खेळ व राजकारण यांची सरमिसळ हे काही नवीन नाही. परंतु विद्यमान वैश्विक व देशांतर्गत नेत्यांनीसुद्धा त्याचा आपल्या प्रखर राष्ट्रवादाचे शस्त्र म्हणून वापर करणे अतिशय दुर्दैवी आहे. हल्ली राष्ट्रा-राष्ट्रांमधील मतभेदांची झळ खरे तर खेळाडूंना वा खेळास भोगावी लागते, हे चित्र सर्वदूर दिसून येते. मागे आयपीएलमध्ये बांगलादेशी खेळाडूंनाही अशाच प्रकारच्या जाचातून जावे लागले होते. तरीसुद्धा असंख्य संकटांवर मात करून, विपरीत परिस्थितीत आपली कामगिरी कायम बोलत राहील, याची तजवीज या देशांच्या खेळाडूंनी केली याचे कौतुक करावे तेवढे थोडके. जोवर खिलाडुवृत्ती जिवंत आहे तोवरच खेळही जिवंत राहतात हे ध्यानात आले तर बरेच.

■ **ललित अंबळकार,** अकोला

सरकारवर विश्वास होताच कधी?

'केंद्राच्या विश्वासालाच तडे' हा 'लाल किल्ला' सदरातील लेख (लोकसत्ता- २९ जून) वाचला. खरे तर केंद्राबद्दलच्या विश्वासाची भावना ही वस्तुस्थिती कधीच नव्हती आणि नाही. माध्यमांना वेठीस धरून केलेल्या भरमसाट प्रचाराद्वारे २०१४ नंतर सतत काँग्रेस सरकार किती वाईट होते आणि आता मात्र विष्णू/ राम/ कृष्ण/ शिवाचा दैवी अवतारच पंतप्रधानपदी विराजमान झाल्यामुळे भारताचा भाग्योदय होणार आहे, असा भ्रम पसरविण्यात आला. काही जणांची मजल तर भारताला स्वातंत्र्यच २०१४ मध्ये मिळाले असे म्हणण्यापर्यंत गेली. जनतेलाही केवळ घोषणाबाजी हीच कर्तव्यपूर्ती मानण्याची सवयच लावण्यात आली. परंतु हा प्रयत्नपूर्वक फुगवलेला भ्रमाचा भोपळा कधी तरी फुटणारच होता. तो आता फुटत असेल तर उत्तमच.

केंद्र सरकारचे अपयश एखाद्या क्षेत्रापुरते मर्यादित असते तर कथित विश्वासाला तडा जाण्याचे कारण नव्हते. पण शिक्षण, रोजगार, कायदा-सुव्यवस्था, प्रशासन, अर्थकारण, आंतरराष्ट्रीय संबंध या प्रत्येक बाबतीत पोपटपंचीशिवाय काहीही हाती लागत नाही म्हटल्यावर केवळ राजकारण या विषयात आणि तेही कॉपी करून पास होण्याने दुसरे काय होणार? राम मंदिरातील भ्रष्टाचार हे केवळ हिमनगाचे टोक आहे. भ्रष्टाचार या संकल्पनेला फक्त पैसा लाटण्याच्या लबाडीशी जोडून संकुचित करण्याचे कारण नाही. जबाबदार व्यक्तीने जबाबदारी टाळणे हाही भ्रष्टाचारच आहे. शिक्षण आणि आरोग्य व्यवस्था बळकट करण्याऐवजी मंदिरे बांधत सुटणे हा भ्रष्टाचार आहे. न्यायालयांनी मूळ कायद्याच्या उद्देशांशी विपरीत निकाल देणे वा निकाल लांबणीवर टाकणे आणि निव्वळ शेरेबाजी करणे हादेखील भ्रष्टाचार आहे. अशी असंख्य उदाहरणे देता येतील. पण याचा अतिरेक झाला आहे, त्यामुळे 'अति तेथे माती' हा निसर्ग नियम लागू होणारच.

सरकारची कार्यक्षमता खालावली की काय अशी शंका व्यक्त केली आहे, पण मुळातच हे सरकार गेल्या १२ वर्षांत चुकूनही एखाद्या दिवशी एखाद्या बाबतीत कार्यक्षम असल्याची प्रचीती आलेली नाही. ढोंगबाजी तथा खोटा प्रचार आणि प्रत्येक भ्रष्ट व्यक्तीला आपलेसे करण्यातील चतुराई एवढीच काय ती वर्तमान सरकारची कार्यक्षमता आहे. ती अंगलट येण्याचे सूतोवाच होत असेल तर 'अच्छे दिन' दूर नाहीत.

■ **वसंत देशमाने,** ओविरा, वाई (सातारा)

पाहिजे : ऊर्जावान, भविष्यवेधी 'एशियाटिक'...

'एशियाटिक सोसायटी'सारख्या जुन्या, महत्त्वाच्या संस्थेत गैरकारभाराला थारा न देणे एवढेच महत्त्वाचे नाही. हिंदुत्वासह कोणत्याही राजकीय विचारधारेला अस्पृश्य न मानता, तसेच केंद्र सरकार, राज्य सरकार आणि कॉर्पोरेट क्षेत्राशी सलोख्याचा संवाद निर्माण करूनच या संस्थेला तिचे पूर्वीचे - किंवा पूर्वीपेक्षा अधिकच- वैभव पुन्हा मिळवून देता येईल, हे मान्य असणाऱ्यांनी आता एकत्र येण्याची गरज असल्याचे सांगणारे हे खुले आवाहन...

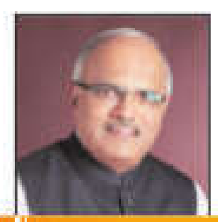

विनय सहस्रबुद्धे
'एशियाटिक टुमॉरो' या पॅनेलतर्फे अध्यक्षपदाचे उमेदवार

पहिली बाजू

अखेर येत्या ४ जुलै रोजी मुंबईच्या एशियाटिक सोसायटीची निवडणूक खरोखरच होऊ घातली आहे! वस्तुतः ही निवडणूक गेल्या वर्षी ८ नोव्हेंबरला होणार होती. पण काही राजकीय पक्षांनी ही संस्था आपल्याच ताब्यात राहावी या अट्टहासाने मतदारांची खोगीर भरती मोहीम राबविली, चक्क पक्षाच्या खात्यातूनच सभासदांचे शुल्क भरण्याची रचना केली आणि त्यामुळे संस्थेच्या प्रशासनाला निवडणूक वेळेवर घेता आली नाही. पुढे अवैध पद्धतीने झालेल्या सभासद नोंदणीचे प्रकरण धर्मादाय आयुक्तांकडे गेले आणि नंतर मार्चमध्ये सदोष मतदार याद्यांसह होऊ घातलेली निवडणूक पुन्हा एकदा पुढे ढकलली गेली. मग न्यायालयीन लढाई झाली. त्यात धर्मादाय आयुक्तांचा निर्णय वैध ठरला आणि नंतर नव्या प्रशासक मंडळाच्या देखरेखीखाली मतदार याद्यांचे शुद्धीकरण झाले, खोगीर भरती अवैध ठरली. सुमारे १५ दिवसांपूर्वी निवडणुकीचे नवे वेळापत्रकही जाहीर झाले. दुर्दैवाने त्यालाही आव्हान देऊन निवडणुका पुन्हा लांबणीवर टाकण्याचे अश्लाघ्य प्रयत्न काही गटांनी केले, पण न्यायालयात त्यांची डाळ शिजली नाही. परिणामी आता येत्या शनिवारी निवडणुकीसाठीचे मतदान खरोखरच घडून येत आहे!

एशियाटिक सोसायटी ऑफ मुंबई ही एकोणिसाव्या शतकाच्या प्रारंभी स्थापन झालेली संस्था म्हणजे मुंबई शहराचा एक मानबिंदू म्हणायला हवा. या संस्थेकडे खूप मोठा असा दुर्मीळ दस्तावेजांचा खजिना आहे, दुर्मीळ मौल्यवान ग्रंथ आहेत आणि काही प्राचीन नाणी व तत्सम वस्तू संग्रहदेखील आहे. मुख्य म्हणजे एक अतिशय संपन्न ग्रंथसंग्रह असलेले ग्रंथालयसुद्धा आहे. संस्थेच्या गेल्या २२२ वर्षांच्या इतिहासात या संस्थेने अनेक संशोधन प्रकल्प पार पाडले आहेत आणि त्यातील काहींची दर्जेदार पुस्तकेही प्रकाशित झाली आहेत. भूतकाळात बी. जी. देशमुख आणि डॉक्टर अरूण टिकेकरांसारख्या अनेक नामवंतांनी या संस्थेच्या अध्यक्षपदाची धुरा वाहिली आहे आणि महामहोपाध्याय पां. वा. काणे आणि दुर्गाबाई भागवतांपासून ते अरविंद जामखेडकरांपर्यंत अनेक संशोधकांच्या वावरामुळे या ज्ञानमंदिराच्या लौकिकात भर पडत आली आहे.

पण असे असले तरी अशी एखादी जुनी, संशोधनाला प्राधान्य देणारी पण रूढ अर्थाने शिक्षण संस्था नसलेली संस्था चालवणे सोपे नाही. त्यासाठी संस्थाबांधणी शास्त्राची योग्य जाण असलेले नेतृत्व, त्याला साथ देणारी अभ्यासक-कार्यकर्त्यांची आणि व्यवस्थापन-कुशल अशा व्यक्तींची एक टीम या दोन्हींची आवश्यकता आहे. हे साध्य न झाल्याने आज एशियाटिक- मुंबईची अवस्था अतिशय बिकट आहे. संस्थेच्या सध्याच्या कार्यकारी मंडळाच्या आर्थिक गैर-शिस्तीवर भारताच्या लेखानियंत्रक व महालेखापरीक्षकांनी (कॅग)ने अनेक ताशेरे ओढणारे अहवाल दिले आहेत. आयकर विभागाने कोट्यवधी रुपयांची वसुली करण्याबाबत नोटिसा काढल्या आहेत. महाराष्ट्राच्या धर्मादाय आयुक्तांनी नियमबाह्य पद्धतीने पदाधिकारी निवड झाल्याचे कारण देऊन पदाधिकारी बदलाचा परिवर्तन- अहवाल (चेंज रिपोर्ट) फेटाळून लावला आहे. किमान २०० दुर्मीळ पुस्तके संस्थेच्या संग्रहातून गहाळ झाल्याची प्रकरणे घडली आहेत. दुर्मीळ दस्तावेजांच्या देखभालीकडेही संस्थेला पुरेसे लक्ष देता आले नसल्याचे अनेकांचे म्हणणे आहे.

ही राजकीय विचारधारा नको?

आणखी चिंताजनक म्हणजे भारतातील राजकीय विचारधारांपैकी हिंदुत्व हा विचार संशोधनाचा विषय असू शकत नाही असे कारण देऊन संस्थेने वैचारिक अस्पृश्यता पाळत ज्ञानोपासना क्षेत्रात संकुचिततेला थारा दिला आहे. सदस्य-नोंदणी संदर्भातही अनेक चुकीच्या गोष्टी अलीकडे घडल्या आहेत. आपल्या समर्थक मतदारांची खोगीरभरती करण्याच्या प्रयत्नात एका राजकीय पक्षाच्या बँक खात्यामार्फत घाऊक शुल्क-भरणा करून सुमारे ५५ जणांना सदस्यता दिल्याचे प्रकरण उघडकीस येऊनसुद्धा व्यवस्थापनाने त्याकडे काणाडोळा केला आहे.

वर उल्लेखिलेल्या सर्व गैरव्यवहारांची महाराष्ट्राच्या धर्मादाय आयुक्तांनी गंभीर दखल घेऊन चौकशी केली तेव्हा हे सर्व आरोप खरे आहेत हे सिद्ध झाले. परिणामी क्वचितच उचलले जाणारे पाऊल त्यांनी उचलले आणि अगदी ऐनवेळी १४ मार्च रोजी होऊ घातलेले पूर्व-घोषित निवडणुकांचे मतदान त्यांनी निरुपायाने पुढे ढकलले. हे मतदान पुढे ढकलण्याच्या धर्मादाय -आयुक्तांच्या निर्णयाला काही मंडळींनी आव्हान दिले पण उच्च न्यायालयाने त्यांची भूमिका फेटाळून लावली! त्यामुळे आता पूर्णपणे वैध पद्धतीने ज्यांची नोंदणी झाली आहे अशा मतदारांच्या नवीनीकृत यादीच्या आधारावर ४ जुलै रोजी निवडणूक होईल हे नक्की.

'सीएसआर'साठी इच्छाशक्ती

या निवडणुकीत तीन स्वतंत्र पॅनल्स सदस्यांचे समर्थन मिळवण्याचा प्रयत्न करीत आहेत. यापैकी आमच्या 'एशियाटिक टुमॉरो' या पॅनलचे इरादे स्पष्ट आणि प्रामाणिक आहेत. राजकीय पक्षबाजीपासून संस्थेला अलिप्त ठेवून संस्थेच्या आर्थिक स्थितीत लक्षणीय सुधारणा घडवून कर्मचाऱ्यांचे प्रश्न सोडवण्यासाठी आम्ही कटिबद्ध आहोत. या महत्त्वाच्या संस्थेला कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) मार्फत आर्थिक संसाधने गोळा करणे अवघड नाही. त्यासाठी गरज आहे ती प्रबळ इच्छाशक्ती आणि व्यापक जनसंपर्क असलेल्या कार्यकर्त्या नेतृत्वाची. शिवाय एशियाटिकचा दैनंदिन कारभार प्रभावी करण्यासाठी आणखी शिस्त आणणे, उत्तरदायित्वाची भावना निर्माण करणे, दस्तावेजांच्या वैज्ञानिक पद्धतीने करावयाच्या जतनाची शास्त्र-शुद्ध रचना लावणे, समकालीन महत्त्वाच्या विषयांचा समावेश करून विशुद्ध संशोधनाला आणखी प्राधान्य देणे, संस्थेचा परीघ विस्तारून दक्षिण मुंबईतील या संस्थेचे कार्यक्रम मुंबईच्या उपनगरांपर्यंत घेऊन जाणे, संस्था संचालनात इंग्रजीबरोबरच मराठीसह सर्व स्थानिक भाषांना उचित स्थान देणे, वैचारिक अस्पृश्यतेचे उच्चाटन करून सर्वसमावेशकता जोपासणे आणि संस्थेला अधिकाधिक लोकाभिमुख करणे असे अनेक मुद्दे आमच्या कृती-कार्यक्रमात आहेत. शिवाय संस्थेत नव्या पिढीच्या अभ्यासकांचा वावर वाढवा यासाठीही काही खास उपक्रम योजण्याची कल्पना आहे. कोळी, पाठारे प्रभू आणि पारशी अशा काही समुदायांनी मुंबईच्या लौकिकात भर घालणारे जे काम केले त्याचेही चित्रण करणाऱ्या कायम प्रदर्शनांची रचना हाही कार्यसूचीचा एक भाग आहे.

आमच्या पॅनेलमध्ये अनेक तोलामोलाची माणसे आहेत. यात ज्येष्ठ पत्रकार आणि डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांच्या जीवनकार्याचे अभ्यासक रमेश पतंगे, माजी कुलगुरू आणि वैज्ञानिक डॉ. संजय देशमुख, अभिनेते-दिग्दर्शक आणि अभ्यासक डॉ चंद्रप्रकाश द्विवेदी तसेच नितीश भारद्वाज आणि टाटा मूलभूत संशोधन संस्थेत प्रदीर्घ कारकीर्द असलेले विवेक गणपुले हे या आमच्या पॅनेलचे बिनीचे शिलेदार आहेत. हे सर्व जण त्यांच्या त्यांच्या क्षेत्रातील अभ्यासक-संशोधक आणि संस्था बांधणीचे जाणकार आहेत. त्यांच्या सहभागामुळे एशियाटिकच्या कारभाराच्या गुणवत्तेत निश्चितपणे भर पडणार आहे. आमच्यापैकी अनेकांना विविध शिक्षण-प्रशिक्षण संस्था, प्रकाशन संस्था अथवा सांस्कृतिक संस्था - संघटना दर्जेदार पद्धतीने चालवण्याचा दीर्घ अनुभव आहे हेही उल्लेखनीय.

वैचारिक अस्पृश्यतेची कीड नको

मुंबईच्या वैभवाचे घटक म्हणजे केवळ गगनचुंबी इमारती किंवा कोस्टल रोड अथवा मेट्रोसारखे दळणवळणाचे प्रकल्प नाहीत. असे संरचना प्रकल्प महत्त्वाचे आहेतच पण विविध संस्थांच्या माध्यमातून साकारलेले समृद्ध संस्था-जीवन हेदेखील महानगरांना आणखी संपन्न आणि समृद्ध करीत असते. त्यासाठीच एशियाटिकच्या लौकिकात भर घालण्याची आणि संस्थेला वैचारिक अस्पृश्यतेची कीड लागू न देता तिथले संस्थाजीवन अधिक निकोप, व्यवसायनिष्ठ पण तरीही मनुष्य स्पर्शाने संवेदनशील झालेले, सर्व समावेशी आणि व्यापक दृष्टी बाळगणारे असण्याची आवश्यकता आहे. केंद्र सरकार, राज्य सरकार आणि कॉर्पोरेट क्षेत्राशी सलोख्याचा संवाद निर्माण करूनच या संस्थेला तिचे पूर्वीचे वैभव पुन्हा मिळवून देता येईल यात शंका नाही. हे सर्व घडवून आणण्याची क्षमता 'एशियाटिक टुमॉरो'मध्ये आहे आणि म्हणूनच संस्थेतील अनागोंदीच्या बातम्यांनी व्यथित होणाऱ्या सर्व एशियाटिक प्रेमी आणि ज्ञानोपासना-निष्ठ मतदारांनी आमच्या पॅनेलला आपली मौल्यवान मते द्यावीत असे आमचे कळकळीचे आवाहन आहे. गौरवास्पद इतिहास असलेल्या या संस्थेचे भवितव्य भूतकाळापेक्षाही अधिक उज्ज्वल करण्याच्या इराद्याने, 'एशियाटिक'मधील गैरकारभार निपटून काढण्यासाठी नव्या दमाची, नव्या आकांक्षांची आणि प्रबळ इच्छाशक्तीची टीम ही 'एशियाटिक'ची गरज आहे. आमचे पॅनेल ही गरज पूर्ण करण्याच्या क्षमतेचे आहे.

कुतूहल

काही प्राण्यांना मीठ का आवडतं?

घरगुती जनावरांसाठी शेतकरी मुद्दाम मिठाचे खडे ठेवतात, हे काही जणांना माहीत असेल. किंवा कधी जंगलात किंवा शेतात, गाय-म्हैस, हरीण, शेळी यांना जमिनीवर किंवा खडकांवर असलेलं मीठ चाटताना अनेकांनी पाहिलं असेल. या प्राण्यांनाही माणसांसारखीच मिठाची चव आवडते? की यामागे आणखी काही वेगळं कारण आहे?

मीठ म्हणजे सोडियम आणि क्लोरिन यांचं संयुग! यातील सोडियम हा घटक सर्व प्राण्यांच्या शरीरासाठी अत्यंत महत्त्वाचा आहे. स्नायूंची हालचाल, मेंदू आणि नसांमधून संदेश जाणं, शरीरातील पाण्याचं संतुलन राखणं या सगळ्या कामांसाठी शरीरात योग्य प्रमाणात सोडियम असणं आवश्यक असतं. शरीरात सोडियमची कमतरता झाली तर अशक्तपणा, थकवा, स्नायू आखडणे असे अनेक त्रास होऊ शकतात.

काही शाकाहारी प्राणी गवत, झाडांची पानं, झाडांची सालं यावर जगतात. या अन्नानं त्यांचं पोटही भरतं आणि त्यातून त्यांच्या शरीराला आवश्यक इतर घटकही भरपूर प्रमाणात मिळतात, पण अशा अन्नात सोडियम मात्र कमी प्रमाणात असतं. त्यामुळे या प्राण्यांच्या शरीरात मिठाची कमतरता निर्माण होण्याची शक्यता जास्त असते. ही कमतरता भरून काढण्यासाठी निसर्गाने त्यांना मिठाची तीव्र ओढ दिलेली आहे. म्हणूनच जंगलातल्या नैसर्गिक मीठ असलेल्या ठिकाणी, ज्यांना 'सॉल्ट लिक्स' म्हटलं जातं, अनेक प्राणी आवर्जून येतात. काही वेळा ते माती, दगड किंवा पाण्यात विरघळलेलं मीठ चाटतात. मीठ खाण्यामुळे, जनावरांची भूक, पचनशक्ती आणि दूध उत्पादनही सुधारतं.

समुद्रकिनारी असलेल्या जंगलांमध्ये काही वनस्पतींमध्ये सोडियम जास्त प्रमाणात असतं. म्हणून काही प्राणी किनाऱ्यावरच्या या वनस्पती खातात. कधीकधी तर हत्तीसारखे काही प्राणी दाट जंगलांमध्ये असलेल्या गुहांमध्ये जाऊन ओलसर खडक खरवडून खातात. या खडकांवर असलेलं मीठ त्यांना या गुहांत जाण्यास भाग पाडतं. काही प्राणी मीठ मिळण्यासाठी विशिष्ट ठिकाणची माती खातानाही दिसतात.

डोंगराळ भागातील जंगली बकऱ्या किंवा हरणं, गिर्यारोहणाला आलेल्या माणसांचा घाम चाटून त्यांची मिठाची कमतरता भरून काढतात. त्यासाठी कधीकधी ते त्यांचा चक्क पाठलाग करतात. मांसाहारी प्राण्यांना मात्र अशी मिठाची वेगळी शोधाशोध करावी लागत नाही. कारण त्यांच्या अन्नातून, म्हणजे इतर प्राण्यांच्या मांसातूनच पुरेसं सोडियम त्यांना मिळतं. त्यामुळे मिठाची आवड ही प्रामुख्याने शाकाहारी आणि काही सर्वभक्षी प्राण्यांमध्ये जास्त दिसते. थोडक्यात, मीठ ही फक्त चवीची गोष्ट नाही. शरीर नीट चालण्यासाठी आवश्यक असलेला एक महत्त्वाचा घटक आहे. त्यामुळे काही प्राणी मिठाकडे ओढले जातात, हे मिठाच्या चवीपेक्षा त्यांच्या शरीराच्या गरजांमुळेच असतं.

– मानसी राजेश हुले
मराठी विज्ञान परिषद
ईमेल : office@mavipa.org
संकेतस्थळ : www.mavipa.org

उलटा चष्मा

हा तर धर्माचा अपमान!

*'**मध्य प्रदेशचे** लाडके मुख्यमंत्री मोहन यादव यांच्यावर भ्रष्टाचाराचे आरोप म्हणजे सनातन धर्माचा अपमानच. केवळ अपमान नाही तर धर्मावरील हल्लाच. यामागे राष्ट्रद्रोही काँग्रेस व जॉर्ज सोरोस आहेत' हे वक्तव्य करून देशभर चर्चेत आलेले राज्य वखार महामंडळाचे अध्यक्ष संजय नागाईच भलतेच खुशीत होते. गेल्या तीन दिवसांपासून त्यांचे कार्यालय तसेच घरातील गर्दी तसूभरही कमी होत नव्हती. कार्यकर्ते, साधुसंत भेटून त्यांचे अभिनंदन करत होते. 'या महामंडळावर कशाला समाधान मानता? तुम्हाला तर यादवांनी मंत्री करायला हवे. थांबा आम्हीच पुढाकार घेऊन बोलतो,' असे एका संताने त्यांना स्पष्टच सांगून टाकले.*

वक्तव्याच्या दुसऱ्याच दिवशी त्यांना उत्तर प्रदेशातून एका वरिष्ठ मंत्र्यांचा फोन आला. 'अयोध्येतल्या दान चोरीमुळे आम्ही खूपच अडचणीत आलो होतो. विरोधकांचा प्रतिवाद कसा करावा हेच समजत नव्हते. तुम्ही मार्ग दाखवून दिला. चोरीवरून आरोप करणे हा धर्माचा अपमान आहे असा सूर आम्ही लावताच विरोधक बावचळले. त त प प करू लागले. या धर्माचे काय करायचे हे विरोधकांना अजून उमगलेच नाही. तुम्हाला काही मदत हवी असेल तर सांगा, आम्ही लगेच पाठवून देऊ.' मग आसाममधून फोन खणाणला. 'तुम्ही तातडीने कामाख्यादेवीच्या दर्शनासाठी गुवाहाटीला यावे. सरकार तुम्हाला राज्य अतिथीचा दर्जा देण्यास तयार आहे. मुख्य म्हणजे आमच्या साहेबांची तशी इच्छा आहे. धर्माच्या आडून आणखी कोणकोणत्या कृत्याचा बचाव करता येईल यावर त्यांना चर्चा करायची आहे. तेव्हा तारीख व वेळ लवकर कळवा. विशेष विमान पाठवण्याची आमची तयारी आहे.' फोन ठेवताच संजयभाईंनी लगेच दौरा ठरवण्याचे आदेश साहाय्यकाला दिले. रात्री राज्याचे पाच मंत्री त्यांना भेटण्यासाठी आले. 'धर्माच्या नावावर मिळालेली सत्ता दीर्घकाळ टिकवून ठेवायची असेल तर थोडाफार भ्रष्टाचार करावाच लागतो. मात्र तो करताना पकडले गेलो तर काय असा गहन प्रश्न आमच्यासमोर होता. त्याचे उत्तर शोधण्यातच दिवस वाया जात होते. तुमच्या एका वाक्याने आम्हाला उत्तर सापडले. आता आम्ही कशाचीच काळजी करणार नाही. आमच्या गैरकृत्याचा गवगवा झालाच तर बचावासाठी तुम्ही याच पद्धतीने समोर यावे अशी आमची इच्छा आहे. बाकी तुमची सर्वतोपरी काळजी घेण्याचे वचन आम्ही देतो.' हे ऐकून संजयभाईंना अपार आनंद झाला.

सकाळी ते साखरझोपेत असतानाच महाराष्ट्रातून फोन आला. पलीकडून एक मंत्री बोलत होते. 'उज्जैनप्रमाणेच नाशिकचा विकास करायचे आम्ही ठरवले आहे. त्यात आडकाठी आणण्याचे प्रयत्न विरोधकांकडून सातत्याने सुरू आहेत. प्रामुख्याने जमीन व झाडांच्या मुद्द्यावरून. त्यांना तुमच्यासारखे आक्रमक उत्तर देणारे इथे कुणीच नाही. मी दोन साधूंना तुमच्याकडे पाठवतो. त्यांना जरा प्रशिक्षण द्या. बाकी तुमचे जे काही असेल ते मी बघून घेईन. देशात प्रतिवादाची चांगली सुरुवात केल्याबद्दल तुमचे अभिनंदन!' फोन ठेवल्यावर आनंदाने हुरळून गेलेल्या संजयभाईंनी स्वतःच स्वतःला चिमटा काढला. तेवढ्यात त्यांना मुख्यमंत्र्यांनी बोलावल्याचा निरोप आला.

तातडीने तिथे पोहोचल्यावर मोहनभाईंनी दीर्घ आलिंगन देऊन त्यांचे आभार मानले व तुमचे भविष्य उज्ज्वल आहे असा आशीर्वाद दिला. तिथून बाहेर पडताच त्यांना दिल्लीच्या पक्ष मुख्यालयातून फोन आला. 'सरकारे व पक्षाचा बचाव करण्यासाठी 'आधुनिक यादव कृष्णनीती'चा वापर करणारे तुम्ही एकमेव असल्याने पक्षाचे राष्ट्रीय प्रवक्ते म्हणून तुमची नेमणूक करण्यात येत आहे' हे ऐकून संजयभाई थेट विमानतळाकडे रवाना झाले.

राजवाडे विचारविश्व

'तगर ऊर्फ तगरेश्वर' : उत्कृष्ट शोधनिबंध

मनात उद्भवलेल्या आणि समाधानकारक उत्तर न मिळाल्यामुळे बोचत राहिलेल्या प्रश्नाचा चिकाटीने पाठपुरावा राजवाडे कसा करीत, याचे उदाहरण समग्र साहित्याच्या ११व्या खंडातील एका शोधनिबंधाच्या स्वरूपात आपण पाहू शकतो. 'तगर ऊर्फ तगरेश्वर' हा त्यांचा १२ पानी शोधनिबंध (दोन आकृत्यांसह) संशोधकीय दृष्टीने अभ्यासण्याजोगा आहे. प्रारंभीच राजवाड्यांनी तगर नामक शहराबद्दलच्या आपल्या जिज्ञासेचा उगम कसा झाला, हे सांगताना लिहिले, 'माझ्या लहानपणी मराठ्यांच्या इतिहासाबद्दलची लहान शालोपयोगी पुस्तके असत, त्यांत अगदी पहिला मजकूर महाराष्ट्रातल्या अगदी जुन्यांतल्या जुन्या शहरांसंबंधीचा असे. पैठण आणि तगर ही ती दोन शहरे, अशी त्यावेळची समजूत असे. पैठणचे प्रतिष्ठान हे नाव असून शालिवाहन नावाचा राजा तेथे राज्य करीत होता, ही माहिती वाचून मनात संशय राहात नसे. पवित्र गोदावरीकाठचे पैठण साक्षात डोळ्यांनी पाहिलेली माणसे पुणे शहरात भेटत आणि शालिवाहनाची मोडी बखरही त्यावेळी मुलांच्या वाचण्यात येत असे... त्या दोन्ही बाबी विश्वसनीय असल्याचे वाटून मनाचे समाधान होई. पण ते समाधान तगर या शहरासंबंधाने वाटत नसे...'

तगरबद्दलचे असमाधान का वाटत असे आणि ते पुढेही कसे वाढत गेले, परिणामी त्यांनी कोणकोणते प्रयत्न केले हे सांगताना राजवाड्यांनी पुढे लिहिले, 'तगर हे शहर नक्की कोठे होते व तेथे कोणता राजा राज्य करी, याबद्दलची निश्चित अशी माहिती त्या छोटेखानी पुस्तकांतून दिलेली नसे आणि वर्गावरील पंतोजीला विचारले असता तो डोक्यावर थापटी मारून शंका जागच्या जागी बसवून टाकी. अशा स्थितीत पंतोजीहून श्रेष्ठ जे हेडमास्तर त्यांच्याकडून समाधान करून घेण्याचा मी एकदा प्रयत्न केला. पुण्याच्या मेहुणपुऱ्यातल्या ओकांच्या वाड्यात एक सरकारी मराठी शाळा भरे. तिचे हेडमास्तर रामभाऊ जोगळेकर होते. १८७४मध्ये ते काही कारणांनी वर्गावर आले असता मी त्यांना धिटाईने हा तगरविषयीचा प्रश्न विचारला. 'वरच्या यत्तेत गेल्यावर कळेल', असे म्हणून त्यांनीही डोक्यावर थापटी मारून शंकेची जागच्या जागी निरवणूक केली... तेव्हापासून गेली चाळीस वर्षे त्या बाबीचा उलगडा करण्याचा प्रयत्न मी अधूनमधून करीत आहे. आता तो थांग मला निश्चित लागलासे वाटल्यामुळे सर्व पुरावा येथे नमूद करतो...'

'तगर हे नाव महाराष्ट्रात प्रचलित होऊन नुकती कोठे शंभर वर्षे होत आली असतील-नसतील', असे म्हणून राजवाड्यांनी पुढे लिहिले, 'ज्ञानेश्वरापासून रामजोशापर्यंतच्या मराठी गद्यपद्यसारस्वतात तगर शहराचा उल्लेख नाही, अठरा पुराणांत नाही; मुसलमान लोकांच्या तवारिखांतही या शहराचे नाव नाही. एकोणिसाव्या शतकाच्या प्रारंभी मुंबईस बॉम्बे लिटररी सोसायटी नावाचे मंडळ स्थापन झाले, त्यात डॉ. टेलरने एक ताम्रपट छापला, त्यात तगर शहराचा प्रथम उल्लेख आला. तो उल्लेख ग्रांट डफने आपल्या बखरीत उतरून घेतला. तेथून तो मराठी छोटेखानी शालोपयोगी चोपड्यांत शिरला. अशी या शहराच्या नावाच्या प्रसिद्धीची हकीकत आहे'.

राजवाड्यांचे हे म्हणणे आणि नंतर स्थाननिश्चितीसाठी त्यांनी केलेली तार्किक कसरत समजून घेण्यापूर्वीच एक महत्त्वाचा खुलासा आपण आज नोंदवायला हवा. तो खुलासा समग्र साहित्य खंड ११चे संपादक डॉ. अ. रा. कुलकर्णी यांनी आपल्या प्रस्तावनेत केला असून ग्रँट डफचे मराठी चरित्रकार या नात्यानेही केलेला आहे. तो खुलासा असा की, 'राजवाडे यांनी टेलर व ग्रँट डफविषयी केलेले विधान वस्तुस्थितीला धरून नाही. तो संस्कृत ताम्रपट सातारच्या एका ब्राह्मणाने डफला दिला होता, तो डफनेच टेलरला दिला होता. त्यात तगरचा उल्लेख आढळला, त्याबद्दल त्याने मराठ्यांच्या इतिहासात पाचसहा ओळीच लिहिल्या असल्या, तरी लिटररी सोसायटीतील समकालीनांशी चर्चा करून त्याने त्या सोसायटीच्या नियतकालिकामध्ये तगरबद्दल एक शोधनिबंधही लिहिला होता. ग्रँट डफचा नव्याने उपलब्ध झालेला खासगी पत्रव्यवहार पाहिल्यावर तगरचा छडा लावण्यासाठी त्यानेही किती प्रयत्न केले होते, याची कल्पना येते.' इतिहासकथनाच्या विशाल पटावर दोन विरुद्ध टोकांना उभ्या असणाऱ्या दोन चिवट अभ्यासकांच्या जिज्ञासेचे केंद्र ठरलेले तगर हे शहर राजवाड्यांना कुठे आहेसे वाटले, ते पुढील लेखांकात...

– आनंद हर्डीकर
anand47.hardikar@gmail.com

‘फुटणाऱ्या’ प्राक्तनाचा प्रदेश!

उच्च जोखमीच्या परीक्षांत ‘हमखास यशा’साठी अनैतिक मार्ग वापरले जाऊ शकतात, याची कल्पना असूनही यंत्रणा पुरेशी काळजी घेत नाहीत, ही खरी रड...

ज्या शिक्षकांकडून आचरणाचे धडे घ्यायचे, त्यांची शिक्षक म्हणून पात्रता ठरवण्यासाठी घेण्यात येणाऱ्या परीक्षेचीही प्रश्नपत्रिका फुटली. यातील प्रत्यक्ष पेपरफुटी कशी झाली, हा पोलीस तपासाचा भाग झाला. पण, यानिमित्ताने आणखी काही तपासून पाहायला हवे असेल, तर ती आहे व्यवस्थेची एकूणच परीक्षा घेण्याची सक्षमता. वैद्यकीय पदवी प्रवेशासाठी देशभरात घेण्यात येणाऱ्या ‘नीट’ परीक्षेची प्रश्नपत्रिका फुटली त्यास दोन महिनेही झाले नाहीत, तोवर ही नवीन पेपरफुटी. पण ‘नीट’च्या तुलनेत या फुटीची ‘प्रगती’ अशी की ही प्रश्नपत्रिका फुटल्याचे परीक्षा व्हायच्या आदल्या दिवशीच लक्षात आले. अर्थात, परिणाम एकच. लाखोंना पुन्हा नव्याने परीक्षेच्या तयारीला सामोरे जावे लागणे. ‘टीईटी’च्या पेपरफुटीच्या पार्श्वभूमीवर एकूणच शिक्षक पात्रतेच्या आधीच्या आणि आताच्या तरतुदी यांचा आढावा या निमित्ताने आवश्यक ठरतो.

कारण त्यातच या परीक्षेच्या पेपरफुटीची सामाजिक कारणे दडलेली आहेत. इयत्ता पहिली ते आठवी, म्हणजे प्राथमिक स्तरावरील शिक्षक म्हणून नियुक्ती होण्यासाठी टीईटी परीक्षा उत्तीर्ण होणे ही किमान पात्रता आहे. राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण परिषदेने (एनसीटीई) ‘सीटीईटी’ या नावाने २०११ साली राष्ट्रीय स्तरावर ही परीक्षा सुरू केली. महाराष्ट्र सरकार राज्यस्तरावर ‘महाटीईटी’ ही परीक्षा घेते. प्राथमिक शाळेत शिकविण्यासाठी या दोन्हीपैकी एक परीक्षा उत्तीर्ण होणे क्रमप्राप्त आहे. याआधी प्राथमिक स्तरावर शिकवण्यासाठी शिक्षणशास्त्रातील पदविका (डीएड) मिळवून थेट शिक्षक होण्याचा मार्ग उपलब्ध होता. बारावीनंतर दोन वर्षांचे डीएड करायचे आणि शिक्षक म्हणून नोकरी मिळवायची, अशी रीत. त्यातून काही वर्षांपूर्वी राज्यात डीएड पदविकाधारकांचे पीक आले. रोजगाराच्या शोधातील ग्रामीण आणि शहरी उमेदवारांनाही डीएड हा हक्काचा पर्याय वाटत होता. बारावीला ९०-९५ टक्के गुण मिळवणारेही डीएड प्रवेशाच्या रांगेत असायचे. विद्यार्थी मिळतात, म्हणून भरमसाट डीएड महाविद्यालयेही थाटली गेली. राज्याची ‘टीईटी’ सुरू होण्याच्या आदल्या वर्षीपर्यंत राज्यात सुमारे १५०० डीएड महाविद्यालये होती. त्यासाठी अर्ज करणाऱ्यांची संख्या तीन लाखांवर जात होती. प्रवेशासाठीचे पात्रता गुणही त्यामुळे ७५ टक्क्यांवर जात होते. पण ही केवळ सूज होती. सरकारी, सरकारी अनुदानित आणि खासगी विनाअनुदानित संस्थांतील शाळांत शिक्षक भरतीच फारशी होत नसल्याने अनेक डीएडधारक रोजगाराविना राहिले. काहींनी सरळ संस्थांना देणग्या देऊन नोकऱ्या मिळवल्या, तर काही जण तुटपुंज्या वेतनावरही काम करायला तयार झाले. यात अध्यापनाचा दर्जा वगैरेची पडताळणीच फारशी होत नसल्याने ‘डीएड’चा एक प्रकारे बाजार मांडला गेला.

दरम्यानच्या काळात शिक्षण हक्क कायदा (आरटीई) लागू झाल्यानंतर त्यातील तरतुदीनुसार शिक्षकी पेशात येण्यासाठी काही किमान प्रमाणित पात्रता असावी, यासाठी ‘टीईटी’ची आखणी केली गेली. उद्देश चांगलाच. नुसते शैक्षणिक गुण चांगले असणे पुरेसे नाही, तर शिक्षक म्हणून काम करण्याचे कौशल्य, बालक विकासाचे आकलन, वर्गात शिकवण्याच्या पद्धती अशा काही कौशल्यांची तपासणी या परीक्षेद्वारे होणे अपेक्षित होते. बारावी आणि डीएड किंवा पदवी आणि डीएड वा बीएड झालेल्या १८ वर्षांवरील कोणालाही, कितीही वेळा ही टीईटी परीक्षा देण्याची मुभा ठेवण्यात आली. ज्या उमेदवारांना इयत्ता पहिली ते पाचवीसाठी शिकवायचे आहे, त्यांच्यासाठी पेपर-१, तर सहावी ते आठवीला शिकविण्यासाठी पेपर-१ बरोबर पेपर-२ देणेही गरजेचे केले गेले. नुकत्याच रद्द झालेल्या ‘टीईटी’ला मात्र अधिक महत्त्व होते. कारण, सध्या शिक्षक म्हणून काम करत असलेल्या, पण ‘टीईटी’ उत्तीर्ण नसलेल्या शिक्षकांनीही ‘टीईटी’ची पात्रता पूर्ण

यंत्रणेतील संबंधितांस जबाबदार धरले जात नाही, तोवर प्रश्नपत्रिकांना पाय फुटतच राहणार...

करण्याबाबत सर्वोच्च न्यायालयाने दिलेला निर्णय. ज्यांना निवृत्तीला पाच वर्षे शिल्लक आहेत, अशा सर्व शिक्षकांनी ‘टीईटी’ उत्तीर्ण होणे आवश्यक असल्याचे सर्वोच्च न्यायालयाने सप्टेंबर २०२५ मध्ये सांगितले. त्यावर फेरविचार याचिका दाखल झाल्या, पण सर्वोच्च न्यायालयाने निर्णय कायम ठेवला. फक्त सेवेतील शिक्षकांनी परीक्षा उत्तीर्ण होण्यासाठीची मुदत सप्टेंबर २०२७ ऐवजी ऑगस्ट २०२८ केली.

महाराष्ट्र सरकारच्या आकडेवारीनुसार, ४.९५ लाख प्राथमिक शिक्षकांपैकी ४.४ लाख शिक्षकांकडे टीईटी पात्रता नाही. यातील ५० हजारांहून अधिक शिक्षकांचे वय ५० वर्षे किंवा त्याहून जास्त आहे. म्हणजेच, या शिक्षकांना नोकरीत टिकायचे असेल, तर टीईटी उत्तीर्ण होणे अनिवार्य आहे. साहजिकच सर्वोच्च न्यायालयाच्या निकालानंतर नोव्हेंबर २०२५ मध्ये झालेल्या ‘टीईटी’ला बसणाऱ्यांची संख्या वाढून साडेचार लाखांवर गेली. न्यायालयाने मे २०२६ मध्ये फेरविचार याचिकाही फेटाळल्यानंतर जून २०२६ च्या परीक्षेसाठी पेपर-१, पेपर-२ आणि दोन्ही पेपरसाठी मिळून सव्वा चार लाख उमेदवारांनी साडेसहा लाख अर्ज भरले. नोंदणी केलेल्या एकूण सव्वाचार लाख उमेदवारांपैकी सव्वादोन लाख कार्यरत शिक्षक आहेत. ‘टीईटी’चा निकाल पाहिला, तर नोव्हेंबर २०२५ मध्ये सर्वाधिक निकाल लागला होता ११.२८ टक्के. त्या आधी तो साडेतीन ते सहा टक्क्यांच्या दरम्यान होता. निकालाची टक्केवारी पाहिली, तर सेवेत असलेल्या शिक्षकांवर पुढच्या दोन वर्षांत उपलब्ध असलेल्या चार-पाच प्रयत्नांत परीक्षा उत्तीर्ण होण्याचा ताण किती आहे, हे लक्षात येईल. परीक्षा पुढे गेल्याने प्रयत्नांची संख्या घटणार आणि ताण वाढणार.

कोणतीही परीक्षा एकदा का उच्च जोखमीची झाली, की ती पार करण्यासाठी आटापिटा सुरू होतो, तो ‘हमखास यशा’चे मार्ग शोधण्याचा. आणि, यामुळे तडा जातो परीक्षेच्या मूळ उद्देशाला. पेपरफुटी हा या ‘हमखास यशा’साठीचाच अनैतिक मार्ग. तो वापरला जाऊ शकतो, याची कल्पना असतानाही परीक्षा यंत्रणा पुरेशी काळजी घेत नाहीत, ही खरी रड आहे. पेपर फोडणाऱ्यांना शासन करू, अशी घोषणा करणे ठीकच. पण, तसे झाले म्हणून यंत्रणेतील संबंधितांस जबाबदार धरले जाणार की नाही, हा खरा प्रश्न आहे. ते होत नाही, तोवर प्रश्नपत्रिकांना पाय फुटतच राहणार.

या सगळ्यात आणखी कळीचा मुद्दा परीक्षा प्रयोजनाचा. शिक्षण हक्क कायद्यातील तरतुदींनुसार परीक्षा घेतली जात असली आणि सर्वोच्च न्यायालयाने सेवेत असलेल्या शिक्षकांनीही ही परीक्षा उत्तीर्ण होण्याचे बंधन घातले असले, तरी त्याच्या स्वरूपावर चर्चा होऊच शकते. आता असलेल्या प्रचलित पद्धतीत परीक्षा वस्तुनिष्ठ बहुपर्यायी प्रश्नांवर आधारित आहे. भाषा, गणितासारख्या विषयातील ज्ञान तपासण्यासाठी ते एक वेळ ठीक. पण, बालमानस आणि अध्यापनावरील प्रश्नांचे काय? ते बहुतेक सगळे आकलनापेक्षा लक्षात ठेवण्याच्या कौशल्याची तपासणी करणारे. अशा वेळी नव्याने शिक्षक होऊ पाहणारे आणि सध्या कार्यरत असलेले अशा दोघांचीही खरी कसोटी कशी लागायची? तंत्रज्ञानातील प्रगतीमुळे अध्ययन-अध्यापन प्रक्रियेला अनेक आयाम प्राप्त झाले आहेत. मोबाइलवरील ‘रील’ने लहान मुलांचा अवधानकाळ किती तरी कमी झाला आहे. त्याला वर्गातील अध्यापनात गुंतवणे हेच शिक्षकांपुढचे मोठे आव्हान आहे. असे असताना, परीक्षा नेमकी घ्यायची कशाची, याचे आकलन यंत्रणेस आहे काय? याचे उत्तर नकारार्थी असण्याचीच शक्यता अधिक.

अर्थात हल्ली काय फुटत नाही? ज्यांना निवडून दिले, ते खासदार फुटतात. फुटल्यानंतर या खासदारांच्या आणि ते ज्यांच्या पक्षातून फुटले, त्यांच्याही तोंडून अर्वाच्य शिव्यांचे फटाके फुटतात. हे सगळे बघून हसूही फुटते आणि रडूही फुटतेच. आणि, पेपर तर अलीकडे फुटतच असतात. फुटकळांची सद्दी असलेल्या प्रदेशाचे प्राक्तनही फुटणारेच असते हाच याचा अर्थ.

बदलत्या मान्सूनशी शेतकऱ्यांची नवी लढाई

लेख

डॉ. भागवत राजाभाऊ चव्हाण
कृषी वनस्पतीशास्त्राचे अभ्यासक
bhagwatchavan2025@gmail.com

पीक नियोजन, पाणी व्यवस्थापन आणि शाश्वत शेतीची गरज यांसाठी शेतकऱ्यांनी बदलले पाहिजे आणि तो बदल साध्य करण्यासाठी सरकारी धोरणांनीच नव्हे, तर कृषी विस्तार अधिकाऱ्यांच्या कामानेही साथ दिली पाहिजे. म्हणजे नेमके काय-काय बदलावे लागेल, याचा आवाका लक्षात आणून देणारे टिपण...

भारतीय शेतीचे भविष्य अजूनही मोठ्या प्रमाणावर पावसावर अवलंबून आहे. शेतकऱ्याच्या वर्षभराच्या कष्टांचे, अपेक्षांचे आणि आर्थिक नियोजनाचे केंद्र म्हणजे मान्सून. पावसाची वेळ, त्याचे प्रमाण, त्याचे वितरण आणि हंगामातील सातत्य यावरच खरीप हंगामाची दिशा ठरते. परंतु गेल्या काही वर्षांत मान्सूनचा स्वभाव झपाट्याने बदलताना दिसत आहे. या बदलत्या परिस्थितीमुळे शेतकऱ्यांसमोर केवळ पीक उत्पादनाचे नव्हे, तर शेती टिकवून ठेवण्याचे मोठे आव्हान उभे राहिले आहे. हवामान बदलामुळे शेतीची जुनी समीकरणे मोडू लागली आहेत. बदलत्या मान्सूनकडे केवळ हवामानातील चढ-उतार म्हणून पाहणे आता परवडणारे नाही. हा विषय शेतीच्या केंद्रस्थानी आणावा लागेल. शेतकऱ्याने आता ‘नेहमीचीच पिके, नेहमीचीच वेळ आणि नेहमीचीच पद्धत’ या विचारातून बाहेर पडले पाहिजे. त्याऐवजी जमिनीचा प्रकार, उपलब्ध ओलावा, स्थानिक पर्जन्यमान, पुढील आठवड्यांचा हवामान अंदाज, पाण्याची उपलब्धता आणि बाजारपेठेची स्थिती या सर्व बाबी लक्षात घेऊन पिकांची निवड करावी लागेल.

उशिरा पाऊस सुरू झाल्यास किंवा पेरणीनंतर मोठा खंड पडण्याची शक्यता असल्यास कमी कालावधीची आणि कमी पाण्यावर येणारी पिके अधिक सुरक्षित ठरतात. मूग, उडीद, तीळ, बाजरी, ज्वारी, काही कमी कालावधीची डाळी आणि चारापिके यांचा अशा परिस्थितीत गांभीर्याने विचार केला पाहिजे. ही पिके तुलनेने कमी पाण्यावर तग धरतात, जोखीम कमी करतात आणि काही प्रमाणात रोख उत्पन्न देऊ शकतात. दुसरीकडे, दीर्घ कालावधीची आणि अधिक पाणी मागणारी पिके पावसात खंड पडल्यास मोठ्या संकटात सापडतात.

जमिनीचा प्रकार हा पीक नियोजनातील अत्यंत महत्त्वाचा घटक आहे. हलकी जमीन पाणी कमी धरते, त्यामुळे पावसाचा खंड पडल्यास अशा जमिनीतील पिके लगेच ताणात येतात. म्हणून हलक्या जमिनीत कमी कालावधीची, कमी पाणी मागणारी आणि कोरडवाहू परिस्थितीत तग धरणारी पिके निवडणे अधिक योग्य ठरते. बाजरी, तीळ, मूग, उडीद, काही भागात नाचणी, चारा ज्वारी यांसारखी पिके हलक्या जमिनीत सुरक्षित पर्याय ठरू शकतात. अशा जमिनीत पहिल्या पावसावर घाईघाईने पेरणी करण्याऐवजी जमिनीत पुरेशी ओल साठल्याची खात्री करूनच निर्णय घेणे हिताचे आहे.

मध्यम ते भारी जमिनीत परिस्थिती थोडी वेगळी असते. अशा जमिनीत ओल टिकवून ठेवण्याची क्षमता अधिक असल्याने सोयाबीन, तूर, कापूस, मका, भुईमूग यांसारख्या पिकांचा विचार करता येतो. मात्र याचा अर्थ असा नाही की अशा जमिनीत कोणतीही जोखीम नाही. उशिरा पेरणी, पाण्याचा अतिरेक, निचऱ्याचा अभाव किंवा दीर्घ खंड यांचा परिणाम या पिकांवरही होतो. एकच मोठा पाऊस झाला म्हणून संपूर्ण क्षेत्रावर पेरणी करणे धोकादायक ठरू शकते.

बदलत्या मान्सूनमध्ये एकपिकी पद्धतीची जोखीम अधिक स्पष्टपणे दिसून येते. एखाद्या वर्षी कापसाला चांगला भाव मिळाला म्हणून सर्वच क्षेत्र कापसाखाली देणे, किंवा मागील वर्षी सोयाबीनचे उत्पादन चांगले आले म्हणून संपूर्ण शेतात सोयाबीन पेरणे, ही पद्धत अनिश्चित हवामानात धोकादायक आहे. कारण एकच पीक फसले, तर संपूर्ण हंगामाचा आर्थिक पाया कोसळतो. यावर उपाय म्हणून मिश्रपीक आणि आंतरपीक पद्धतीला नव्याने महत्त्व द्यावे लागेल. तूर सोयाबीन, कापूस मूग, ज्वारी तूर, मका उडीद, भुईमूग तूर यांसारख्या पद्धतींमुळे जोखीम विभागली जाते. एका पिकाला फटका बसला, तरी दुसरे पीक आधार देऊ शकते. जमिनीची सुपीकता राखणे, तणनियंत्रण, कीडरोग व्यवस्थापन आणि आर्थिक सुरक्षितता या सर्व बाबतीत आंतरपीक पद्धती अधिक उपयुक्त ठरते.

शेतकऱ्यांच्या दृष्टीने चारापिकांचे नियोजन हा मुद्दा तितकाच महत्त्वाचा आहे. बदलत्या पावसामुळे केवळ धान्य किंवा नगदी पिकेच अडचणीत येत नाहीत, तर जनावरांच्या चाऱ्याचाही गंभीर प्रश्न निर्माण होतो. ग्रामीण अर्थव्यवस्थेत पशुपालन हा महत्त्वाचा आधार आहे. अनेक शेतकरी शेतीसोबत दुधाच्या उत्पन्नावर कुटुंबाचा खर्च भागवतात. म्हणून प्रत्येक शेतकऱ्याने काही क्षेत्र चारापिकांसाठी राखून ठेवणे आवश्यक आहे. ज्वारी चारा, मका चारा, बाजरी चारा, नेपियर, गिनी गवत, लुसर्न यांसारख्या पिकांचा परिसर, पाणी उपलब्धता आणि गरजेनुसार विचार करणे आवश्यक आहे.

हवामान अंदाजाचा वापर हा आजच्या शेतीतील महत्त्वाचा निर्णायक घटक बनला पाहिजे. आज विभागनिहाय अंदाज सहज आणि तातडीने मिळतात. तरीही अनेकदा अंदाजावर आधारित निर्णय घेतले जात नाहीत. हीच सवय बदलावी लागेल. पुढील सात ते दहा दिवस पावसाची शक्यता नसेल, तर पेरणी पुढे ढकलणे कधी कधी फायदेशीर ठरते. मुसळधार पावसाचा अंदाज असेल, तर निचऱ्याची व्यवस्था, खत व्यवस्थापन आणि कीडरोग नियंत्रणाची तयारी करावी लागते. खंड पडण्याची शक्यता असेल, तर ओल जपण्यासाठी आंतरमशागत, कोळपणी आणि तणनियंत्रण करणे गरजेचे असते. हवामान अंदाजाला ‘काय होईल ते पाहू’ या भूमिकेऐवजी ‘शेती व्यवस्थापनाचे साधन’ म्हणून स्वीकारणे आवश्यक आहे.

मातीतील ओलावा जपणे ही बदलत्या पावसातील शेतीची जीवनरेखा आहे. ओलसंवर्धनाचे उपाय आता पर्याय राहिलेले नाहीत, तर ते आवश्यक बनले आहेत. समतल नांगरट, आडवे बांध, सरी-वरंबा पद्धत, शेतात पाणी अडवून मुरवणे, पिकांचे अवशेष जमिनीवर ठेवणे, सेंद्रिय खतांचा वापर वाढवणे, तणनियंत्रण, शेततळी, कंपार्टमेंट बण्डिंग, नाला बांध, ठिबक आणि तुषार सिंचन यांसारखे उपाय मोठा फरक घडवू शकतात. अनेकदा हे उपाय ‘अतिरिक्त काम’ वाटतात; परंतु पावसातील एका मोठ्या खंडात हाच साठवलेला ओलावा पिकाचे प्राण वाचवतो.

महाराष्ट्रातील खरीप हंगामात कापूस, सोयाबीन आणि तूर ही प्रमुख पिके आहेत. परंतु बदलत्या हवामानाच्या पार्श्वभूमीवर या पिकांकडेही नव्या दृष्टीने पाहावे लागेल. कापूस हे दीर्घ कालावधीचे पीक आहे. सुरुवातीला चांगली ओल, नंतर सातत्यपूर्ण पाऊस आणि शेवटी योग्य हवामान यांची त्याला गरज असते. पेरणी उशिरा झाली किंवा सुरुवातीलाच पावसाचा खंड पडला, तर उत्पादनावर मोठा परिणाम होतो. म्हणून कापसाची पेरणी पुरेशा पावसाची खात्री झाल्यावर आणि शिफारस केलेल्या कालावधीतच करणे योग्य. सोयाबीनलाही सुरुवातीला चांगली ओल हवी; पण पाणथळ अजिबात चालत नाही. त्यामुळे निचरा व्यवस्थापन, योग्य वाणांची निवड आणि वेळेवर तणनियंत्रण महत्त्वाचे ठरते. तूर हे तुलनेने ताण सहन करणारे पीक असले, तरी त्याचेही योग्य कालावधीतील नियोजन आवश्यक आहे. तूरला आंतरपीक म्हणून स्थान दिल्यास जोखीम कमी करता येते.

दुबार पेरणी हा आजच्या बदलत्या पावसाळ्यात अनेक शेतकऱ्यांसाठी वास्तव बनला आहे. अशा परिस्थितीत शेतकऱ्याने घाबरून न जाता पर्यायी नियोजन ठेवणे आवश्यक आहे. राखीव बियाणे, कमी कालावधीच्या पिकांचा पर्याय, बियाणे प्रक्रिया, टप्प्याटप्प्याने पेरणी, स्थानिक कृषी तज्ज्ञांचा सल्ला आणि जमिनीतील उपलब्ध ओलाव्याचे मूल्यमापन यामुळे नुकसान काही प्रमाणात कमी करता येते. आजच्या काळात ‘परिस्थितीनुसार निर्णय बदलण्याची तयारी’ ठेवावी लागणार आहे.

थोडक्यात, आजचा शेतकरी केवळ पावसाची वाट पाहणारा राहू शकत नाही; तर पावसाच्या बदलत्या स्वरूपाचे व्यवस्थापन करणारा उत्पादक बनणे हीच काळाची मागणी आहे. यासाठी मानसिकतेत बदल, माहितीचा वापर, जोखीम विभागणी, पाण्याचे नियोजन आणि शास्त्राधारित निर्णय या पाच गोष्टी अत्यावश्यक आहेत. बदलत्या मान्सूनसमोर शेतकऱ्यांची लढाई कठीण नक्की आहे; पण ती अशक्य नाही.

शेतीला हवामान-लवचीक बनवणे ही आता केवळ संशोधन संस्थांची संकल्पना राहिलेली नाही; ती शेतकऱ्यांच्या भवितव्यासाठी अपरिहार्य झाली आहे. हवामान-लवचीक शेती म्हणजे बदलत्या पावसाशी, तापमानाशी, कीडरोगांच्या बदलत्या स्वरूपाशी आणि बाजारातील अनिश्चिततेशी जुळवून घेणारी शेती. यासाठी प्रदेशनिहाय पीक आराखडे, कमी कालावधीचे व ताण सहन करणारे वाण, जलसंधारण, पूरक व्यवसाय, पीकविमा आणि स्थानिक पातळीवरील कृषी सल्ला यांचा एकत्रित वापर आवश्यक आहे. शेती फक्त पीकउत्पादनापुरती मर्यादित न ठेवता पशुपालन, कुक्कुटपालन, मधुमक्षिकापालन, प्रक्रिया उद्योग, साठवण आणि बाजारपेठ यांच्याशी जोडणेही महत्त्वाचे ठरेल.

या सर्व प्रक्रियेत शासन आणि कृषी यंत्रणेची भूमिका अत्यंत महत्त्वाची आहे. शेतकऱ्यांना ‘पिकांचे नियोजन बदला’ असे सांगणे पुरेसे नाही; तर त्यासाठी वेळेवर मार्गदर्शन, योग्य बियाण्यांची उपलब्धता, तालुकानिहाय हवामानाधारित पीकसल्ले, जलसंधारणासाठी प्रोत्साहन, चाराबँक, पीकविमा दाव्यांची जलद अंमलबजावणी आणि कृषी विज्ञान केंद्रांमार्फत प्रत्यक्ष प्रात्यक्षिके यांची गरज आहे. हवामान बदलाच्या काळात कृषी विस्तार यंत्रणा अधिक सजग, गतिमान आणि शेतकऱ्यांपर्यंत पोहोचणारी असावी लागेल. आजची खरी गरज आहे ती एका नव्या कृषी विचाराची – मान्सूनवर अवलंबून राहणाऱ्या शेतीकडून मान्सूनचे व्यवस्थापन करणाऱ्या शेतीकडे वाटचाल करण्याची. हाच बदल शेतकऱ्याच्या भविष्यासाठी, ग्रामीण अर्थव्यवस्थेसाठी आणि राज्याच्या अन्नसुरक्षेसाठी निर्णायक ठरणार आहे.

अन्वयार्थ

‘जी राम जी’च्या आर्थिक भारापायी नाराजी!

ग्रामीण भागातील मजुरांच्या हाताला काम उपलब्ध करून देण्याच्या उद्देशाने काँग्रेस सरकारच्या काळात सुरू करण्यात आलेल्या ‘महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजने’त (मनरेगा) बदल करून भाजप सरकारने लागू केलेल्या ‘विकसित भारत रोजगार आणि आजीविका मिशन (ग्रामीण)’ म्हणजेच ‘व्ही बी- जी राम जी’ कायद्याची बुधवारपासून देशभरात अंमलबजावणी होत आहे. ‘मनरेगा’ मजुरांना वर्षाला १०० दिवसांची कामाची हमी देई, तर ‘जी राम जी’मध्ये ही हमी १२५ दिवसांची आहे. मात्र केंद्राकडून आर्थिक भार राज्यांवर टाकण्यात आल्याने राज्यांकडून चिंता व्यक्त करण्यात येते. या कायद्याच्या अंमलबजावणीपूर्वी सत्ताधारी भाजपशासित राज्यांमधूनच विरोधी सूर उमटू लागला हे विशेष!

मोदी सरकारच्या कोणत्याही योजनेस (विशेषतः नाव बदलून आणलेल्या) काँग्रेस वा अन्य विरोधी पक्षांची सरकारे असलेल्या राज्यांमधून विरोध होणे स्वाभाविक असते. पण ‘मनरेगा’चे नाव बदलताना या योजनेचे आर्थिक स्वरूपही बदलल्याने भाजपशासित मध्य प्रदेश, बिहारसारखी राज्ये चिंता व्यक्त करू लागली, हे महत्त्वाचे. काँग्रेस काळातील मनरेगा योजनेत मजुरीची १०० टक्के रक्कम ही केंद्राकडून राज्यांना हस्तांतरित केली जात असे. साहित्य खरेदी किंवा अन्य कामांसाठी एकूण योजनेच्या १० टक्क्यांच्या आसपास रक्कम राज्यांना खर्च करावी लागे. मोदी सरकारने ‘मनरेगा’चे नाव बदलताना आर्थिक सूत्रही बदलले. यात ईशान्य किंवा काही दुर्गम राज्ये वगळता अन्य राज्यांना एकूण खर्चाच्या ४० टक्के खर्च करावी लागणार आहे. म्हणजेच केंद्राच्या योजनेसाठी राज्यांवरील आर्थिक बोजा वाढला. माहितीच्या अधिकारात मिळालेल्या माहितीनुसार, सध्याच्या कायद्यानुसार बिहार सरकारला मजुरीसाठी ४,४७७ कोटी खर्च करावा लागत होता. नवीन बदलात १२५ दिवसांच्या रोजगार हमी योजनेत खर्चाचा बोजा ४० टक्के झाल्याने या राज्याला १५,९३९ कोटी खर्च करावे लागतील. मध्य प्रदेश सरकारवरील वित्तीय बोजा ४,१६८ कोटींवरून २०,०३७ कोटींपर्यंत जाण्याचा अंदाज वर्तवण्यात आला. मध्य प्रदेश आणि बिहार ही दोन्ही भाजपशासित राज्ये व या दोन्ही राज्यांनी तिजोरीवरील आर्थिक बोजा वाढल्याने चिंता व्यक्त केली आहे. तुलनेत मागास असलेल्या झारखंडमध्ये आर्थिक बोजा १८०४ कोटींवरून ९२९३ कोटी रु.वर जाण्याची भीती त्या राज्य सरकारने व्यक्त केली. महाराष्ट्र सरकारने अलीकडेच पुरवणी मागण्यांद्वारे ‘जी राम जी’साठी ७,३६७ कोटी रुपयांची वाढीव तरतूद केली. पण ग्रामीण भागातील मागणी लक्षात घेता राज्यावरील आर्थिक बोजा वाढूही शकतो.

‘जी राम जी’ योजनेची अंमलबजावणी करण्याची जबाबदारी असलेले केंद्रीय ग्रामविकासमंत्री शिवराजसिंह चौहान यांच्या मध्य प्रदेश या गृहराज्यानेच आर्थिक बोजाबद्दल चिंता व्यक्त केली आहे, असा टोला काँग्रेसच्या माध्यम विभागाचे प्रमुख जयराम रमेश यांनी लगावला आहे. देशातील बहुतेक राज्यांची आर्थिक परिस्थिती फार काही चांगली नाही. सर्वच राज्यांवरील कर्जाचा बोजा वाढत आहे. त्यातच मतांसाठी लोकप्रिय घोषणा करून त्याच्या अंमलबजावणीमुळे खर्चाचे नियोजन कोलमडले आहे. महाराष्ट्राने १९७२पासून मूळ ‘रोजगार हमी योजने’ची सुरुवात केली, तर मध्य प्रदेश राज्य हे ‘लाडली बहना’ची सुरुवात करणारे राज्य! मध्य प्रदेश सरकारवरील कर्जाचा बोजा पाच लाख कोटींच्या घरात गेला आहे, तर महाराष्ट्रावर ११ लाख कोटींची कर्जे आहेत. केंद्रीय करांमध्ये राज्यांचे नुकसान झाले. त्यात आता केंद्रीय योजनांचाही बोजा आल्याने मध्य प्रदेशसारख्या राज्याने विरोधी सूर लावला. कोणत्याही राज्यातील निवडणुकांत भाजपकडून ‘डबल इंजिन’वर भर दिला जातो. दुहेरी इंजिन असताना भाजपशासित बिहार व मध्य प्रदेश राज्यांनी आर्थिक बोजा वाढल्याबद्दल किमान विरोधी सूर तरी लावला. अन्य भाजपशासित राज्यांमधील नेतृत्व सध्या तरी मूग गिळून असले तरी त्यांचीही भूमिका वेगळी असणार नाही. केंद्र सरकारने आपला भार कमी करण्यासाठी राज्यांवर बोजा टाकला. जीएसटीचे वाटप होण्यासाठी केंद्रावर अवलंबित्व, शिवाय केंद्रानेच वाढवून ठेवलेले अनेक प्रकारचे ‘उपकर’ आणि ‘अधिभार’ यांमुळे राज्ये आर्थिकदृष्ट्या विकलांग झालेली आहेत. अशा वेळी केंद्राचा आधार महत्त्वाचा असताना, केंद्रानेच जबाबदारी झटकून राज्यांवर टाकली. योजनेत रामाचे नाव समाविष्ट करून ग्रामीण भागात राजकीय लाभाचे भाजपचे गणित नक्कीच असणार. पण या केंद्रीय योजनेसाठी राज्ये भरडली जाणार आहेत.

‘जीआय’ मानांकनाचा जळगाव, बऱ्हाणपूरच्या केळी उत्पादकांना लाभ कितपत?

विश्लेषण

जितेंद्र पाटील
patil.jitendra@expressindia.com

जळगावच्या केळींनंतर सुमारे दहा वर्षांनी बऱ्हाणपूरमध्ये उत्पादित केळींचा भौगोलिक मानांकनाच्या यादीत समावेश झाला. यामुळे निर्यात वाढते, पण प्रत्यक्ष शेतकऱ्यांना लाभ होतो का?

भौगोलिक मानांकन म्हणजे काय?

भौगोलिक मानांकन म्हणजे जीआय टॅग हा एखाद्या विशिष्ट भौगोलिक प्रदेशाशी संबंधित उत्पादनाला दिला जाणारा बौद्धिक संपदा हक्क. एखाद्या वस्तूची किंवा उत्पादनाची गुणवत्ता, वैशिष्ट्य, प्रतिष्ठा किंवा ओळख ही त्या प्रदेशातील नैसर्गिक आणि मानवी घटकांशी निगडित असल्यास त्या उत्पादनाला जीआय टॅग प्रदान केला जातो. म्हणजेच त्या उत्पादनाची वैशिष्ट्ये ही केवळ बियाणे किंवा तंत्रज्ञानामुळे नव्हे, तर त्या भागातील मातीचा प्रकार, हवामान, पर्जन्यमान, तापमान, पाण्याची गुणवत्ता, भौगोलिक परिस्थिती आणि स्थानिक शेतकऱ्यांच्या पारंपरिक लागवड पद्धतीमुळे विकसित झालेली असतात. हे मानांकन आता मध्य प्रदेशातील बऱ्हाणपूर या महाराष्ट्रालगतच्या भागातील केळींनाही मिळाले आहे.

भौगोलिक मानांकनाचा फायदा कसा?

जीआय टॅगमुळे बनावट उत्पादनांवर नियंत्रण ठेवता येते. इतर भागातील उत्पादकांना त्या नावाचा व्यावसायिक वापर करता येत नाही. त्यामुळे मूळ उत्पादनाची विश्वासार्हता टिकून राहते आणि त्या प्रदेशातील उत्पादकांच्या हक्कांचे संरक्षण होते. आंतरराष्ट्रीय बाजारपेठेत जीआय टॅग असलेल्या उत्पादनांना अधिक विश्वासार्ह मानले जाते. त्यामुळे निर्यातीच्या संधी वाढतात. अनेक देशांतील ग्राहक दर्जेदार आणि मूळ उत्पादनासाठी अधिक किंमत देण्यास तयार असतात. योग्य ब्रँडिंग झाल्यास शेतकऱ्यांना प्रीमियम दर मिळण्याची शक्यता वाढते.

मानांकन मिळाले तरी समस्या?

भौगोलिक मानांकनाच्या यादीत शेती उत्पादनाचा समावेश झाल्याने संबंधित शेतकऱ्यांचे उत्पन्न आपोआप वाढत नाही. त्यासाठी दर्जेदार उत्पादन, एकसमान गुणवत्ता, आधुनिक पॅकेजिंग, शीतसाखळी, निर्यात सुविधा, प्रभावी ब्रँडिंग आणि संघटित विपणन व्यवस्था आवश्यक असते. त्यामुळे भौगोलिक मानांकन हा अंतिम लाभ नसून, बाजारपेठेत अधिक मूल्य मिळविण्याची संधी उपलब्ध करून देणारे प्रभावी साधन मानले जाते. बाजारपेठ ही प्रमाणपत्रावर नव्हे तर मागणी, पुरवठा, गुणवत्ता, ब्रँड आणि ग्राहकांच्या विश्वासावर चालते. भौगोलिक मानांकन हा त्या विश्वासाची सुरुवात आहे; अंतिम परिणाम नाही. जळगावच्या केळींना दहा वर्षांपूर्वीच (डिसेंबर २०१६) भौगोलिक मानांकन मिळाल्यानंतर निर्यात वाढू लागली हे खरे; परंतु येथील सर्वसामान्य केळी उत्पादक शेतकऱ्यांच्या उत्पन्नात मोठी वाढ झाल्याचे चित्र दिसून आलेले नाही. अनेक शेतकरी आजही बाजार समित्या, व्यापारी आणि निर्यातदार यांच्यावर अवलंबून आहेत. दर घसरले की भौगोलिक मानांकन उपयोगी पडत नाही. आणि दर वाढले की त्याचे श्रेय बाजारातील मागणीला जाते. म्हणजेच भौगोलिक मानांकनाचे आर्थिक मूल्य निर्माण करण्यात आपण अद्याप यशस्वी झालो नाही, असे म्हणावे लागेल.

केळी उत्पादक उपेक्षित का राहिला?

केळी उत्पादक शेतकरी आर्थिकदृष्ट्या मजबूत व्हायचा असेल, तर त्याला बाजारपेठेतील वाटाघाटीची ताकद मिळणे आवश्यक आहे. येथे शेतकरी उत्पादक कंपन्या (एफपीओ) महत्त्वाची भूमिका बजावू शकतात. आजही अनेक शेतकरी वैयक्तिक पातळीवर केळी विकतात. त्यामुळे त्यांच्याकडे दर ठरवण्याची ताकद नसते. जर ‘एफपीओ’मार्फत जीआय ब्रँडखाली केळीची विक्री झाली, तर मोठ्या प्रमाणावर निर्यातीसह एकसमान दर्जा राखणे आणि चांगली किंमत मिळवणे शक्य होऊ शकते.

सरकारची जबाबदारी महत्त्वाची?

केवळ भौगोलिक मानांकनाच्या यादीत समावेश झाल्याने जळगाव, बऱ्हाणपूरमध्ये उत्पादित केळीची निर्यात वाढेल का, असा प्रश्न विचारला जातो. याचे उत्तरही सोपे नाही. कारण जागतिक बाजारपेठेत इक्वेडोर, फिलिपिन्स, कोस्टारिका, ग्वाटेमाला आणि कोलंबिया यांसारख्या देशांनी आधुनिक लॉजिस्टिक्स, दर्जेदार पॅकेजिंग आणि प्रभावी ब्रँडिंगच्या जोरावर मजबूत स्थान निर्माण केले आहे. भारतात केळी उत्पादन भरपूर असले, तरी निर्यात व्यवस्थेतील अनेक त्रुटी अजूनही कायम आहेत. बंदरांपर्यंत वाहतूक, कंटेनरची उपलब्धता, शीतसाखळी आणि निर्यात प्रक्रियेतील विलंब यामुळे भारतीय केळीची स्पर्धात्मकता कमी होते. जीआय मिळवून देणे हे शासनाचे पहिले पाऊल असते; मात्र खरी परीक्षा त्यानंतर सुरू होते. सरकारने शेतकऱ्यांना जीआयचा वापर कसा करायचा, याचे प्रशिक्षण देणे आवश्यक आहे. निर्यातीसाठी आवश्यक प्रमाणपत्रे सहज उपलब्ध करून देणे, आधुनिक पॅकहाऊस उभारणे, शीतसाखळी मजबूत करणे, प्रक्रिया उद्योगांना प्रोत्साहन देणे, विमानतळ व बंदरांशी जोडलेली लॉजिस्टिक व्यवस्था विकसित करणे आणि जीआय ब्रँडची देश-विदेशात जाहिरात करणे ही सरकारची जबाबदारी असल्याचे बोलले जात आहे.

Last Day To Join Private Channel.
Closing entry for new members Now.

Indian Newspaper

1) Times of India
2) The Hindu
3) Business line
4) The Indian Express
5) Economic Times

And more Newspapers

InternationalNewspapers channel

[Europian, American, Gulf & Asia]

Magazine Channel

National & International

[Genaral & Exam related]

English Editorials

[National + InternationalEditorials]

Click here to join

Lifetime validity at just 19 Rupees

Trust me... this will be your best purchase of 2026